सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 23, नई दिल्ली । गुरुवार, 03 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली में किसका पानी का कनेक्शन कटेगा और किसका नहीं? मंत्री प्रवेश
06 बचपन का आकर्षण
08 लोकसभा चुनाव में वोट धांधली का मुद्दा; बीजद ने चुनाव आयोग...

एम.वी.एक्ट के विभिन्न धाराओं में 79 ऑटो चालकों के विरुद्ध चालान की कार्यवाही की गयी

संजय बाटला

नई दिल्ली। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गोरखपुर के निर्देशन में पुलिस अधीक्षक यातायात संजय कुमार, आर0टी0ओ0(प्रवर्तन) संजय कुमार झा व ए0आर0टी0ओ0(प्रवर्तन) नरेन्द्र यादव द्वारा ई-रिक्शा/ऑटो के पदाधिकारियों को ई-रिक्शा/ऑटो पर यूनिक कोड व ड्राइवरों के चरित्र सत्यापन कराने हेतु निर्देशित किया गया तथा यातायात व्यवस्था को सुचारु रुप से संचालित करने एवं सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु यातायात पुलिस टीम द्वारा चेकिंग अभियान चलाया गया । अभियान के क्रम में अपंजीकृत, बिना लाइसेंस व नाबालिग ऑटो/ई-रिक्शा चालकों के विरुद्ध शहर क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर 483 ऑटो/ई-रिक्शा चालकों को चेक किया गया । जिसमें 13 ऑटो को बिना परमिट, 19 अपंजीकृत ऑटो/ई-रिक्शा तथा 29 ऑटो/ई-रिक्शा को बिना ड्राइविंग लाइसेंस के चलाते हुए पाये जाने पर यातायात यार्ड लाकर एम0वी0 एक्ट की धारा के अन्तर्गत सीज की कार्यवाही की गयी । इसके अतिरिक्त एम०वी०एक्ट

के विभिन्न धाराओं में 79 ऑटो चालकों के विरुद्ध चालान की कार्यवाही की गयी। अभियान के क्रम में ही शहर के विभिन्न चौराहों/तिराहों पर नो पार्किंग एरिया में खड़े वाहनों के विरूद्ध अभियान चलाया गया, जिसमें 11 वाहनों को टो करके यातायात यार्ड लाया गया एवं 77 चार पहिया तथा 183 दो पहिया वाहनों का चालान किया गया । शहर क्षेत्र में यातायात नियमों का उल्लंघन करते हुए पाये जाने पर कुल 997 वाहनों के विरुद्ध एम0वी0एक्ट के तहत कार्यवाही की गयी ।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद– विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद– विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

एनएचएआई ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में 5,614 किमी नेशनल हाईवे बनाए, तय लक्ष्य से ज्यादा!

नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (NHAI) (एनएचएआई) ने वित्तीय वर्ष 2024–25 में कुल 5,614 किलोमीटर नेशनल हाईवे का निर्माण किया है, जो कि तय लक्ष्य 5,150 किलोमीटर से ज्यादा है।

नई दिल्ली। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (NHAI) (एनएचएआई) ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में कुल 5,614 किलोमीटर नेशनल हाईवे का निर्माण किया है, जो कि तय लक्ष्य 5,150 किलोमीटर से ज्यादा है। इस उपलब्धि की जानकारी एक आधिकारिक बयान में दी गई।

अब तक का सबसे ज्यादा पूंजीगत व्यय

एनएचएआई ने इस साल हाईवे इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास पर 2,50,000 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च किए, जो अब तक का सबसे ज्यादा पूंजीगत व्यय है। पहले इसका लक्ष्य 2,40,000 करोड़ रुपये रखा गया था, लेकिन वास्तविक खर्च इससे ज्यादा हुआ। यह व्यय सरकारी बजट समर्थन और एनएचएआई के अपने संसाधनों से किया गया है।

पिछले वर्षों की तुलना में 21% की बढ़ोतरी

बयान के अनुसार, अगर पिछले वर्षों से तुलना करें तो वित्तीय वर्ष 2023-24 में यह व्यय 2,07,000 करोड़ रुपये था, जबकि 2022-23 में 1,73,000 करोड़ रुपये था। यानी इस साल पूंजीगत व्यय में 21 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और 2022-23 की तुलना में 45 प्रतिशत ज्यादा खर्च किया गया है।

हाईवे प्रोजेक्ट्स के लिए तीन तरह के तरीकों से जुटाई गई फंडिंग

एनएचएआई ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में हाईवे प्रोजेक्ट्स के लिए फंडिंग जुटाने के लिए तीन प्रमुख तरीकों का इस्तेमाल किया:

टोल ऑपरेट ट्रांसफर (TOT)
इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (InvIT)
टोल सेक्युरिटाइजेशन

बयान के अनुसार, इस साल एनएचएआई ने 28,724 करोड़ रुपये के एसेट्स मॉनेटाइज किए। इसमें एकल दौर में सबसे ज्यादा InvIT रसीद 17,738 करोड़ रुपये की रही।

हाईवे निर्माण में लगातार हो रही है वृद्धि

एनएचएआई की यह उपलब्धि भारत के सड़क और परिवहन बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। लगातार बढ़ते पूंजीगत व्यय और हाईवे निर्माण के नए रिकॉर्ड दर्शाते हैं कि सरकार बेहतर कनेक्टिविटी और मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोर दे रही है।

दिल्ली परिवहन विभाग की पंजीकरण शाखाएं क्यों सीएमवीआर नियम 60(3) का अनुपालन नहीं कर रहे

परिवहन विशेष न्यूज

सीएमवीआर नियम 60:- किराया-खरीद समझौते का समर्थन/अनुपालन, गुरमीत सिंह तनेजा

गुरमीत सिंह तनेजा अध्यक्ष (सीएमवीआर समिति) बी.ओ.सी.आई. द्वारा दिल्ली परिवहन विभाग की पंजीकरण शाखाओं द्वारा सीएमवीआर के नियम 60 के अनुपालन नहीं करने पर आपत्ति जताई है और इसके अनुपालन नहीं करना से वाहन मालिकों को होने वाले नुकसान को साझा किया है। नियम 60 ₹₹बैंकर, गैर- बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एन.बी.एफ.सी.) या वित्तपोषक द्वारा ऋण चुकौती की तारीख से सात कार्य दिवसों के भीतर वाहन मालिकों को अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) जारी किया जाएगा ₹₹। जाने पूरा विवरण जो जनहित में उठाया गया गुरमीत सिंह तनेजा अध्यक्ष (सीएमवीआर समिति) बी.ओ.सी.आई. द्वारा

सीएमवीआर नियम 60 का अनुपालन सुनिश्चित करना: किराया-खरीद समझौतों का समर्थन

विनियामक प्रावधान, सीएमवीआर नियम 60(3) के अनुसार:

"बैंकर, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) या वित्तपोषक द्वारा ऋण चुकौती की तारीख से सात कार्य दिवसों के भीतर वाहन मालिक को अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) जारी किया जाएगा।"

जबकि यह प्रावधान न्याय का समर्थन करता है और जनहित में काम करता है, लेकिन व्यवहार में अक्सर इसका पालन नहीं किया जाता है। इस गैर-अनुपालन के मुख्य कारण ये हैं:

1. बैंकों, एनबीएफसी और वित्तपोषकों द्वारा नियमों का पालन न करना

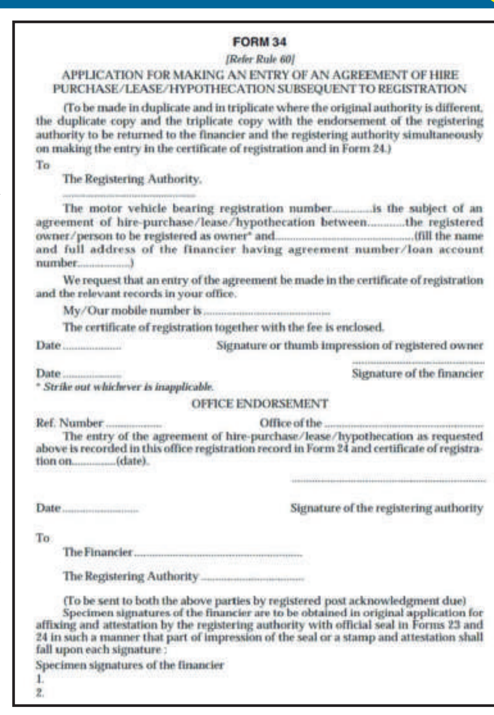

FORM 34
[Refer Rule 60]
APPLICATION FOR MAKING AN ENTRY OF AN AGREEMENT OF HIRE PURCHASE/LEASE/HYPOTHECATION SUBSEQUENT TO REGISTRATION

(To be made in duplicate and in triplicate where the original authority is different, the duplicate copy and the triplicate copy with the endorsement of the registering authority to be returned to the financier and the registering authority simultaneously on making the entry in the certificate of registration and in Form 24.)

To
The Registering Authority,
....

The motor vehicle bearing registration number..............is the subject of an agreement of hire-purchase/lease/hypothecation between............the registered owner/person to be registered as owner* and..............................(fill the name and full address of the financier having agreement number/loan account number..................)

We request that an entry of the agreement be made in the certificate of registration and the relevant records in your office.

My/Our mobile number is ....

The certificate of registration together with the fee is enclosed.

Date .... Signature or thumb impression of registered owner

Date .... Signature of the financier

* Strike out whichever is inapplicable.

OFFICE ENDORSEMENT

Ref. Number .... Office of the ....

The entry of the agreement of hire-purchase/lease/hypothecation as requested above is recorded in this office registration record in Form 24 and certificate of registration on..............(date).

Date .... Signature of the registering authority

To
The Financier ....
The Registering Authority ....

(To be sent to both the above parties by registered post acknowledgment due)
Specimen signatures of the financier are to be obtained in original application for affixing and attestation by the registering authority with official seal in Forms 23 and 24 in such a manner that part of impression of the seal or a stamp and attestation shall fall upon each signature :
Specimen signatures of the financier
1.
2.

कई वित्तीय संस्थाएं अकुशल प्रक्रियाओं या जानबूझकर बनाई गई नीतियों के कारण शीघ्रता से एनओसी जारी नहीं करती हैं।

2. वाहन मालिकों में जागरूकता की कमी

कई मालिक वैध फॉर्म 34 के उपयोग की आवश्यकता से अनभिज्ञ हैं, जिसमें सही ऋण समझौता संख्या शामिल होती है।

कुछ लोग पुराने या समाप्त हो चुके फॉर्म 34 का उपयोग करना जारी रखते हैं, जिससे प्रशासनिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रस्तावित समाधान

1. उचित दस्तावेज़ीकरण सुनिश्चित करना

बैंक, एनबीएफसी या फाइनेंसर के साथ समझौता करते समय, वाहन मालिकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि फॉर्म 34 में सही ऋण समझौता या खाता संख्या (प्रति संलग्न) दर्ज हो।

पंजीकरण प्राधिकारियों को इस अनुबंध/ऋण संख्या को सही-सही दर्ज करने का निर्देश दिया जाना चाहिए।

2. बैंकों और वित्तपोषकों को जवाबदेह बनाना

वित्तीय संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे सही दस्तावेज उपलब्ध कराएं। हालांकि, कदाचार और लापरवाही के कारण वे अक्सर ऐसा करने में विफल हो जाते हैं।

सात दिवसीय एनओसी जारी करने के नियम का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सख्त प्रवर्तन की आवश्यकता है।

3. परिवहन विभाग में गलत डेटा प्रविष्टि को रोकना

वास्तविक अनुबंध/ऋण संख्या की अनुपलब्धता के कारण, परिवहन विभाग के अधिकारी अक्सर अपने सिस्टम में "0000" या डमी संख्या दर्ज कर देते हैं।

इससे ऋण चुकौती के बाद अनुबंध समाप्त करने की ऑनलाइन प्रक्रिया बाधित होती है, जिससे अनावश्यक विलंब होता है।

समझौते के विवरण को वास्तविक समय में सत्यापित करने के लिए एक तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए।

परिवहन क्षेत्र के हितों की रक्षा में बीओसीआई की भूमिका

बीओसीआई परिवहन क्षेत्र के हित में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। सीएमवीआर नियम 60 जैसे कुछ कानूनी प्रावधान वाहन मालिकों के लिए महत्वपूर्ण हैं, और उचित प्रवर्तन सुनिश्चित करना हमारे सामूहिक हित में है।

इस मुद्दे को हल करने के लिए, सभी हितधारकों - वाहन मालिकों, बैंकों, एनबीएफसी, वित्तपोषकों और परिवहन अधिकारियों - को सहयोग करना चाहिए और देरी को खत्म करने, धोखाधड़ी को रोकने और वाहन पंजीकरण प्रक्रियाओं में दक्षता में सुधार करने के लिए सही प्रक्रियाओं का पालन करना चाहिए।

गुरमीत सिंह तनेजा
अध्यक्ष (सीएमवीआर समिति)

वर्ष 2026 तक दिल्ली की सड़को पर दौड़ेंगी 11,000 बसें : मुख्यमंत्री

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बुधवार को विधानसभा में कैग रिपोर्ट पर चर्चा के दौरान वायु प्रदूषण की रोकथाम और सार्वजनिक परिवहन को सुदृढ़ करने के लिए योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार 2026 तक दिल्ली की सड़कों पर 11,000 बसें उतारने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्तमान में दिल्ली में 6,484 बसें संचालित हो रही हैं, जबकि जरूरत 11,000 बसों की है। सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करने के लिए रूट रेशनलाइजेशन की प्रक्रिया अपनाई जाएगी, ताकि बस सेवा पूरे शहर में प्रभावी रूप से उपलब्ध हो सके। ई-बसों की संख्या बढ़ाने के लिए चार्जिंग स्टेशनों और डिपो का विस्तार किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने बताया कि दिल्ली में प्रदूषण कम करने के लिए कई अहम कदम उठाए जाएंगे। इस साल 70 लाख नए पौधे लगाए जाएंगे, ताकि हरित क्षेत्र को बढ़ाया जा सके। इसके अलावा 1000 वाटर स्प्रिंक्लिंग मशीनें पूरे साल के लिए तैनात की जाएंगी, ताकि सड़कों पर धूल को नियंत्रित किया जा सके। राजधानी में वायु गुणवत्ता की निगरानी के लिए छह नए एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। इससे प्रदूषण स्तर की सही जानकारी मिलेगी और उसके अनुसार कदम उठाए जाएंगे। सरकार ई-कचरे के वैज्ञानिक निपटान के लिए नया इको पार्क स्थापित करेगी। ट्रैफिक निगरानी और सुरक्षा बढ़ाने के लिए 500 नए कैमरे प्रमुख ट्रैफिक जंक्शनों पर लगेंगे, जो नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों की पहचान करेंगे। इसके अलावा एक इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर स्थापित किया जाएगा, जो वायु गुणवत्ता, कचरा प्रबंधन और स्वच्छता व्यवस्था की निगरानी करेगा।

मुख्यमंत्री ने पिछली सरकार पर संसाधनों के दुरुपयोग और सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था की अनदेखी का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार ने नीतियों और निगरानी व्यवस्था को कमजोर कर दिया, जिससे दिल्ली की वायु गुणवत्ता खराब होती चली गई। राजधानी में वाहनों से होने वाले प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए दस साल से अधिक पुराने डीजल वाहनों और 15 साल से अधिक पुराने पेट्रोल वाहनों पर सख्त प्रतिबंध लगाया जाएगा। दिल्ली सरकार मेट्रो के चौथे और पांचवें चरण के विस्तार पर तेजी से काम कर रही है, जिसके लिए बजट में 3000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

इससे सार्वजनिक परिवहन को और अधिक सुगम बनाया जाएगा और लोग निजी वाहनों के बजाय सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करेंगे। दिल्ली को स्वच्छ और हरित बनाने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। सरकार की सभी योजनाएं केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं रहेंगी, बल्कि उन्हें जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से लागू किया जाएगा, ताकि राजधानी को प्रदूषण मुक्त और आधुनिक बनाया जा सके।।

पंचम रूप स्कंदमाता

मां दुर्गा के सभी स्वरूपों में स्कंदमाता को सबसे ज्यादा ममतामयी माना गया है. माता के इस स्वरूप की पूजा करने से बुद्धि का विकास और ज्ञान की प्राप्ति होती है. स्कंद कुमार यानी कार्तिकेय भगवान की माता होने के कारण मां को स्कंदमाता कहा गया

नवरात्री के पंचम दिवस आदि शक्ति माँ दुर्गा के स्कन्द स्वरूप की उपासना विधि एवं समृद्धि पाने के उपाय आदिशक्ति जगत जननी माँ दुर्गा का पंचम रूप स्कन्दमाता के रूप में जाना जाता है। सिंह के आसन पर विराजमान तथा कमल के पुष्प से सुशोभित दो हाथो वाली यशस्विनी देवी स्कन्दमाता शुभदायिनी है। भगवान स्कन्द जी बालरूप में माता की गोद में बैठे होते हैं इस दिन साधक का मन विशुध्द चक्र में अवस्थित होता है। स्कन्द मातृस्वरूपिणी देवी की चार भुजायें हैं, ये दाहिनी ऊपरी भुजा में भगवान स्कन्द को गोद में पकडे हैं और दाहिनी निचली भुजा जो ऊपर को उठी है, उसमें कमल पकडा हुआ है। माँ का वर्ण पूर्णतः शुभ्र है और कमल के पुष्प पर विराजित रहती हैं। इसी से इन्हें पद्मासना की देवी और विद्यावाहिनी दुर्गा देवी भी कहा जाता है। इनका वाहन भी सिंह है। माँ स्कंदमाता सूर्यमंडल की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनकी उपासना करने से साधक अलौकिक तेज की प्राप्ति करता है । यह अलौकिक प्रभामंडल प्रतिक्षण उसके योगक्षेम का निर्वहन करता है। एकाग्रभाव से मन को पवित्र करके माँ की स्तुति करने से दुःखों से मुक्ति पाकर मोक्ष का मार्ग सुलभ होता है। इनकी आराधना से विशुद्ध चक्र के जाग्रत होने वाली सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। इनकी आराधना से मनुष्य सुख-शांति की प्राप्ति करता है।

श्री स्कन्दमाता की पूजा विधि

कुण्डलिनी जागरण के उद्देश्य से जो साधक दुर्गा मां की उपासना कर रहे हैं उनके लिए दुर्गा पूजा का यह दिन विशुद्ध चक्र की साधना का होता है। इस चक्र का भेदन करने के लिए साधक को पहले मां की विधि सहित पूजा करनी चाहिए. पूजा के लिए कुश अथवा कम्बल के पवित्र आसन पर बैठकर पूजा प्रक्रिया को उसी प्रकार से शुरू करना चाहिए जैसे आपने अब तक के चार दिनों में किया है फिर इस मंत्र से देवी की प्रार्थना करनी चाहिए ।

मन्त्र

सिंहासनगता नित्यं पद्माञ्चितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

तदोपरांत पंचोपचार विधि से देवी स्कन्दमाता की पूजा कीजिए। नवरात्रे की पंचमी तिथि को कहीं कहीं भक्त जन उद्यंग ललिता का व्रत भी रखते हैं। इस व्रत को फलदायक कहा गया है। जो भक्त देवी स्कन्द माता की भक्ति-भाव सहित पूजन करते हैं उसे देवी की कृपा प्राप्त होती है। देवी की कृपा से भक्त की मुराद पूरी होती है और घर में सुख, शांति एवं समृद्धि रहती है।

श्री स्कन्दमाता शप्तशती मंत्र

सिंहासना गता नित्यं पद्माश्रि तकरद्वया ।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ।।
या देवी सर्वभूतेषु माँ स्कंदमाता रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

श्री स्कन्दमाता ध्यान मन्त्र

वन्दे वांछित कामार्थे चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
सिंहरूढ़ा चतुर्भुजा स्कन्दमाता यशस्वनीम्।।
धवलवर्णा विशुध्द चक्रस्थितों पंचम दुर्गा त्रिनेत्रम्।
अभय पद्म युग्म करां दक्षिण उरू पुत्रधराम् भजेम्॥
पटाम्बर परिधानां मृदुहास्या नानांलकार भूषिताम्।
मंजीर, हार, केयूर, किंकिणि रत्नकुण्डल धारिणीम्॥
प्रफुल्ल वंदना पल्ल्वांधरा कांत कपोला पीन पयोधराम्।
कमनीया लावण्या चारू त्रिवली नितम्बनीम्॥

श्री स्कन्दमाता स्तोत्र पाठ

नमामि स्कन्दमाता स्कन्दधारिणीम्।
समग्रतत्वसागररमपारपार गहराम्॥
शिवाप्रभा समुज्वलां स्फुच्छशागशेखराम्।
ललाटरत्नभास्करां जगत्प्रीन्तिभास्कराम्॥
म हे न्द्र क श्य पा र्चि ता सनंतकुमाररसस्तुताम्।
सुरासुरेन्द्रवन्दिता यथार्थनिर्मलादभुताम्॥
अतर्क्यरोचिरूविजां विकार दोषवर्जिताम्।
मुमुक्षुभिर्विचिन्तता विशेषतत्वमुचिताम्॥
नानालंकार भूषितां मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम्।
सुशुध्दतत्वतोषणां त्रिवेन्दमारभुषताम्॥
सुधार्मिकौपकारिणी सुरेन्द्रकौरिघातिनीम्।
शुभां पुष्पमालिनी सुकर्णकल्पशाखिनीम्॥
तमोन्धकारयामिनी शिवस्वभाव कामिनीम्।
सहस्त्र्सूर्यराजिका धनज्ज्योगकारिकाम्॥
सुशुध्द काल कन्दला सुभडवृन्दमजुल्लाम्।
प्रजायिनी प्रजावति नमामि मातरं सतीम्॥
स्वकर्मकारिणी गति हरिप्रयाच पार्वतीम्।
अनन्तशक्ति कान्तिदां यशोअर्थभुक्तिमुक्तिदाम्॥
पुनःपुनर्जगद्वितां नमाम्यहं सुरार्चिताम्।
जयेश्वरि त्रिलोचने प्रसीद देवीपाहिमाम्॥

श्री स्कन्दमाता कवच

ऐं बीजालिंका देवी पदयुग्मघरापरा।
हृदयं पातु सा देवी कार्तिकेययुता॥
श्री हीं हुं देवी पर्वस्या पातु सर्वदा।
सर्वांग में सदा पातु स्कन्धमाता पुत्रप्रदा॥
वाणंवपणमृते हुं फ्ट बीज समन्विता।
उत्तरस्या तथाग्नेव वारुणे नैॠतेअवतु॥
इन्द्राणां भैरवी चैवासितांगी च संहारिणी।
सर्वदा पातु मां देवी चान्यान्यासु हि दिक्षु वै॥

वात, पित्त, कफ जैसी बीमारियों से पीड़ित व्यक्ति को स्कंदमाता की पूजा करनी चाहिए और माता को अलसी चढ़ाकर प्रसाद में रूप में ग्रहण करना चाहिए । शास्त्रों में कहा गया है कि इस चक्र में अवस्थित साधक के मन में समस्त बाह्य क्रियाओं और चित्तवृत्तियों का लोप हो जाता है और उसका ध्यान चैतन्य स्वरूप की ओर होता है, समस्त लौकिक, सांसारिक, मायाविक बन्धनों को त्याग कर वह पद्मासन माँ स्कन्धमाता के रूप में पूर्णतः समाहित होता है। साधक को मन को एकाग्र रखते हुए साधना के पथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

स्कन्द माता कथा एवं पौरिणीक कथा

दुर्गा पूजा के पांचवे दिन देवताओं के सेनापति कुमार कार्तिकेय की माता की पूजा होती है। कुमार कार्तिकेय को ग्रंथों में सनत-कुमार, स्कन्द कुमार के नाम से पुकारा गया है। माता इस रूप में पूर्णतः ममता लुटाती हुई नज़र आती हैं। माता का पांचवा रूप शुभ्र अर्थात श्वेत है। जब अत्याचारी दानवों का अत्याचार बढ़ता है तब माता संत जनों की रक्षा के लिए सिंह पर सवार होकर दुष्टों का अंत करती हैं। देवी स्कन्दमाता की चार भुजाएं हैं, माता अपने दो हाथों में कमल का फूल धारण करती हैं और एक भुजा में भगवान स्कन्द या कुमार कार्तिकेय को सहारा देकर अपनी गोद में लिये बैठी हैं। मां का चौथा हाथ भक्तो को आशीर्वाद देने की मुद्रा मे है।

देवी स्कन्द माता ही हिमालय की पुत्री पार्वती हैं इन्हें ही माहेश्वरी और गौरी के नाम से जाना जाता है। यह पर्वत राज की पुत्री होने से पार्वती कहलाती हैं, महादेव की वामिनी यानी पत्नी होने से माहेश्वरी कहलाती हैं और अपने गौर वर्ण के कारण देवी गौरी के नाम से पूजी जाती हैं। माता को अपने पुत्र से अधिक प्रेम है अतः मां को अपने पुत्र के नाम के साथ संबोधित किया जाना अच्छा लगता है। जो भक्त माता के इस स्वरूप की पूजा करते है मां उस पर अपने पुत्र के समान स्नेह लुटाती हैं।

नवरात्र पर पांचवे दिन माँ के स्कंदमाता के रूप की पूजा की जाती है। स्कंदमाता भगवान कार्तिकेय की माँ है । नौ ग्रहों की शांति के लिए स्कंदमाता की खास पूजा अर्चना की जाती है। ऐसामन जाता है कि नवरात्र के पांचवे दिन स्कंदमाता को खुश करने से बुरी ताकतों का नाश होता है और बुरी नज़र से मुक्ति मिलती है। देवी के इस रूप कि पूजा से असंभव काम भी संभव हो जाते हैं। स्कंदमाता को ही पार्वती ,महेश्वरी और गौरी कहा जाता है। स्कंद्कुमार कि माता होने के कारण ही देवी का नाम स्कंदमाता पड़ा। देवी का स्कंदमाता रूप राक्षसों का नाश करने वाली हैं। कहा जाता है कि एक बार ताडकासुर नाम के भयानक राक्षस ने तपस्या करके भगवान ब्रह्मा से अजेय जीवन का वचन ले लिया जिससे उसकी कभी मृत्यु ना हो। लेकिन जब ब्रह्मा ने कहा की इस संसार में जो आया है उसे एक ना एक दिन जाना पड़ता है तो ताडकासुर ने कहा की यदि उसकी मृत्यु हो तो शिव के पुत्र के हाथो हो ब्रह्मा बोले ऐसा ही होगा । ताडकासुर ने सोचा ना कभी शंकर जी विवाह करेंगे ना कभी उनका पुत्र होगा और ना कभी उसकी मृत्यु होगी लेकिन होनी को कौन टाल सकता है । ताडकासुर ने खुद को अजेय मानकर संसार में हाहाकार मचाना शुरू कर दिया। तब सभी देवता भागे भागे शंकर जी के पास गये और बोले प्रभु ! ताडकासुर ने पूरी सृष्टि में उत्पात मचा रखा है । आप विवाह नहीं करेंगे तो ताडकासुर का अंत नहीं हो सकता । देवताओं के आग्रह पर शंकर जी ने साकार रूप धारण कर के पार्वती से विवाह रचाया। शिव और पार्वती के पुत्र का जन्म हुआ जिनका नाम पड़ा कार्तिकेय। कार्तिकेय का ही नाम स्कंदकुमार भी है स्कंदकुमार ने ताडकासुर का वध करके संसार को अत्याचार से बचाया स्कंदकुमार की माता होने के कारण ही माँ पार्वती का नाम स्कंदमाता भी पड़ा । माना जाता है कि देवी स्कंदमाता के कारण ही माँ -बेटे के संबंधो की शुरुआत हुई। देवी स्कंदमाता की पूजा का विशेष महत्व है । स्कंदमाता अगर प्रसन्न हो जाये तो बुरी शक्तियाँ भक्तो का कुछ नहीं बिगाड़ सकती हैं। देवी की इस पूजा से असंभव काम भी संभव हो जाता है ।

श्री जय जय स्कन्दा माँ
माँ की आरती

जय अंबे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ ॐ जय
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥ ॐ जय
कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला, कंठन पर साजै ॥ ॐ जय
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ ॐ जय
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर, राजत सम ज्योती ॥ ॐ जय
शुंभ-निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ॥ॐ जय
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भय दूर करे ॥ॐ जय
ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ॐ जय
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैंरू ।
बाजत ताल मृदंगा, अरू बाजत डमरू ॥ॐ जय
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता, सुख संपति करता ॥ॐ जय
भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ॐ जय
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ॥ॐ जय
श्री अंबेजी की आरति, जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-संपति पावे ॥ॐ जय

बोलो श्री अंबे माता की जय

ॐ नमो शिव

गहरी सांस और मन का बहुत ही गहरा संबंध है। जब हम गहरी सांस लेते हैं, तो हमारा मन शांत और एकाग्र होने लगता है। और मन इधर उधर नहीं भागता है यह इसलिए होता है क्योंकि गहरी सांस लेने से हमारे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है, जो हमारे मस्तिष्क को शांत और एकाग्र करने करती है

गहरी सांस लेने से हमारे मन पर कई तरह के प्रभाव पड़ते हैं:

- मन शांत और एकाग्र होता है
- तनाव और चिंता रहित होता है।
- आत्मविश्वास बढ़ता है।
- ध्यान और एकाग्रता बढ़ती है
- मन की शांति और सुख बढ़ता है।
- गहरी सांस लेने के लिए,

हमें हमें कुछ भी विशेष नहीं करना होता हैं बस गहरी सांस ले और नाभि तक तक ले पूरी ले पूरी छोड़े और ज्ञानियों ने इसको ही मंत्र कहा है। सुबह बस एक घंटा शांत और एकांत स्थान पर बैठें। अपने पेट को फुलने दें।अपनी सांस को धीरे-धीरे छोड़ें एक लय एक रिदम होनी चाहिए छोड़ते वक्त इस प्रक्रिया को कई बार दोहराएं गहरी सांस लेने से हमारे मन और शरीर को कई तरह के लाभ हो सकते हैं। इसलिए, गहरी सांस लेना हमारे दैनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। और जीवन निरोगी और दीर्घायु होता हैं

ॐ नमो शिव

जब किसी की अनुभूति, स्वयं से भी अधिक अच्छी लगे, तो यही अपनत्व/मोह है। अपनी ही इच्छाओं की सीमाओं का ध्यान रहे अन्यथा यही इच्छाएं हमारी कमजोरी बन जातीं हैं।

प्रारम्भ में उठीं महीन आकांक्षा, कब विशालकाय हो जाती है ? पता ही नहीं चलता। हम उसके आवेश में बेहोश होकर गतिमान हो जातें हैं, वापिस लौटना भी भारी लगता है। हम बाहरी ताकतों से नहीं, अपितु अपनी भीतरी कमजोरियों से हारते हैं। ध्यान रहे कि कुछ लोग हमेशा ख़ुश/संतुष्ट दिखाई पड़तें हैं। इसलिए नहीं कि उनके जीवन में सबकुछ ठीक/सकारात्मक हो रहा होता है। अपितु उनको सामान्य मानवी से भी अधिक जागृत/जागरूक रहने के लिए सतत प्रयास करना पड़ता है ताकि उनके क्षण-प्रतिक्षण के क्रियाकलाप पर बेहोशी की चादर/धुंध न पड़ जाए। हर समय शिक़ायती/नाराज़/विरोधी प्रवृति हमें परिस्थिति से उबरने नहीं देती और प्रसन्नता/सकारात्मकता हमें अपनी नकारात्मकता से उबरने में सहायक/साधक होतीं हैं, इसलिए वह सदैव प्रसन्न दिखाई देतें हैं। परमात्मा सभी को एक ही मिट्टी से बनाता है, बस अंतर इतना है कि जो अहंकार/शिकायत करता है वह बिखर जाता है और जो समर्पण करता है वह निखर जाता है।

नवरात्रि में नौ दिन पहनें इन नौ रंग के कपड़े

इन नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ अलग-अलग शक्ति स्वरूपों की पूजा की जाएगी। चैत्र नवरात्रि में इन नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ अलग-अलग शक्ति स्वरूपों की पूजा की जाएगी। नवरात्रि को लेकर भक्तों में उत्साह है। इस दौरान पूरी श्रद्धा और आस्था से मां दुर्गा की पूजा अर्चना करते हैं। नवरात्रि के शुभ अवसर पर रंगबिरंगे परिधान धारण किए जाते हैं। हर दिन पूजा करने के लिए मां के स्वरूप के अनुसार कपड़ों के रंग का चयन करना बेहद शुभ माना जाता है। रंगों का हमारे देवी-देवताओं, पर्वों और त्योहारों से विशेष जुड़ाव है। चाहें आप सलवार सूट पहनें,
लहंगा, चणिया चोली या साड़ी नवरात्र पर्व में प्रत्येक दिन किस रंग के कपड़े धारण करना हैं
आइए जानते हैं...

1. शैलपुत्री मां दुर्गा के पहले स्वरूप को 'शैलपुत्री' के नाम से जाना जाता है। यह नवरात्रि में पूजी जाने वाली सबसे पहली माता हैं। इनके नाम को लेकर मान्यता है कि शैल का अर्थ होता है पर्वत। नवरात्रि के पहले दिन माता शैलपुत्री की पूजा की जाती है। इस दिन पीला रंग पहनना शुभ माना जाता है। इसीलिए नवरात्रि की शुरुआत पीले रंग के कपड़ों से करें।
2. ब्रह्मचारिणी आश्विन मास की द्वितीया तिथि के दिन श्री दुर्गा के द्वितीय रूप माता ब्रह्मचारिणी की पूजा की जाती है। माता इस रूप में तपस्विनी स्वरूपा होती है। माता पार्वती ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए तपस्या-साधना की थी, उसी रूप के कारण उनका नाम ब्रह्मचारिणी पड़ा। नवरात्रि के दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी को पूजा जाता है। इस दिन के लिए हरा रंग होता है। इसीलिए नवरात्रि के दूसरे दिन किसी भी प्रकार का हरा रंग पहनें, लेकिन अगर गाढ़ा हरा रंग हो तो बेहतर।
3. चंद्रघंटा माता के तीसरे रूप में चंद्रघंटा की पूजा की जाती है। माता चंद्रघंटा के माथे पर चंद्र अर्द्ध स्वरूप में विद्यमान है। नवरा त्र के तीसरे दिन इनका पूजन-अर्चन किया जाता है। माता चंद्रघंटा का पूजन करनें से उपवासक की सभी मनोइच्छा स्वत: पूरी हो जाती है तथा वह सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाता है। नवरात्रि के तीसरे दिन हल्का भूरा रंग पहनें। मां चंद्रघंटा की पूजा करते वक्त आप इस रंग का कोई भी वस्त्र पहन सकते हैं।
4. कूष्माण्डा नवरात्रे का चौथा दिन माता कूष्मांडा की पूजा-आराधना करने का है। यह माता कूष्मांडा का चौथा रूप है। एक मान्यता के अनुसार ब्रह्मांड की उत्पत्ति माता कूष्मांडा के उदर से हुई है। नवरात्रे के चौथे दिन इनकी पूजा-आराधना की जाती है। चौथे नवरात्रे को जो जन पूर्ण विधि-विधान से उपवास करता है, उसके समस्त रोग-शोक नष्ट हो जाते हैं। नवरात्रि के चौथे दिन संतरी रंग के कपड़े पहनें। कूष्माण्डा माता का यह रंग उत्सव की रौनक को बढ़ा देता है।
5. स्कंदमाता आश्विन मास में माता दुर्गा के अलग-अलग रूपों की पूजा की जाती है। नवरात्र के पांचवें दिन माता स्कंदमाता की पूजा की जाती है। माता स्कंदमाता कुमार कार्तिकेय की माता है। भक्तों की सारी इच्छाएं पूरी करने वाली स्कंदमाता के दिन सफेद रंग पहनें। इन्हें मोक्ष के द्वार खोलने वाली माता के नाम से भी जाना जाता है।
6. कात्यायनी माता कात्यायनी माता दुर्गा का छठा रूप है। आश्विन मास की षष्ठी तिथि को माता के इस रूप की पूजा की जाती है। माता कात्यायनी ऋषि कात्यायन की पुत्री हैं। माता को अपनीं तपस्या से प्रसन्न करनें के बाद उनके यहां माता ने पुत्री रूप में जन्म लिया, इसी कारण वे कात्यायनी कहलाईं। पांचवे दिन पूजी जाने कात्यायनी का मनपसंद रंग है लाल। इस दिन माता की पूजा करते वक्त लाल रंग पहनें।
7. कालरात्रि सप्तमी तिथि में माता के कालरात्रि स्वरूप की पूजा-आराधना की जाती है। ये माता काल अर्थात बुरी शक्तियों का नाश करनें वाली हैं इसलिए इन्हें कालरात्रि के नाम से जाना जाता है। नवरात्र के सातवें दिन इनकी पूजा-अर्चना की जाती है। इ स दिन साधक को पूरे दिन का उपवास करने के बाद माता को गुड़ का भोग लगाया जाता है। नवरात्रि के सातवें दिन मां कालरात्रि की पूजा जाती है। इस दिन नीला रंग पहनना शुभ माना जाता है।
8. महागौरी श्री दुर्गा अष्टमी के दिन माता के आठवें रूप महागौरी की पूजा की जाती है। अपने गोरे रंग के कारण इनका नाम महागौरी पड़ा है। माता के महागौरी रूप का पूजन करनें पर माता प्रसन्न होकर उपवासक के हर असंभव कार्य को भी संभव कर आशीर्वाद देती हैं। महागौरी की पूजा करते वक्त गुलाबी रंग पहनना शुभ माना जाता है। अष्टमी की पूजा और कन्या भोज करवातें इसी रंग को पहनें।
9. सिद्धिदात्री नवरात्र के नौवें दिन माता सिद्धिदात्री की पूजा-आराधना का होता है। माता सिद्धिदात्री को सभी प्रकार की सिद्धियां देने वाली कहा गया है। नवरात्रि के नवम दिन इनकी पूजा और आराधना की जाती है। इन्हें सिद्धियों की स्वामिनी भी कहा जाता है। नवरात्रि के आखिरी दिन पूजी जाती हैं सिद्धिदात्री, इन्हें बैंगनी रंग बेहद पसंद होता है।

मीरा का मार्ग था प्रेम का, पर कृष्ण और मीरा के बीच अंतर था पाच हजार साल का। फिर यह प्रेम किस प्रकार बन सका

प्रेम के लिए न तो समय का कोई अंतर है और न स्थान का। प्रेम एकमात्र कीमिया है, जो समय को और स्थान को मिटा देती है।

जिससे तुम्हें प्रेम नहीं है वह तुम्हारे पास बैठा रहे, शरीर से शरीर छूता हो, तो भी तुम हजारों मील के फासले पर हो। और जिससे तुम्हारा प्रेम है वह दूर चांद-तारों पर बैठा हो, तो भी सदा तुम्हारे पास बैठा है।

प्रेम एकमात्र जीवन का अनुभव है जहां टाइम और स्पेस, समय और स्थान दोनों व्यर्थ हो जाते हैं।

प्रेम एकमात्र ऐसा अनुभव है जो स्थान की दूरी में भरोसा नहीं करता और न काल की दूरी में भरोसा करता है, जो दोनों को मिटा देता है।

परमात्मा की परिभाषा में कहा जाता है कि वह काल और स्थान के पार है, कालातीत।

प्रेम परमात्मा है-इसी कारण। क्योंकि मनुष्य के अनुभव में अकेला प्रेम ही है जो कालातीत और स्थानातीत है। उससे ही परमात्मा का जोड़ बैठ सकता है।

इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि कृष्ण पाच हजार साल पहले थे। प्रेमी अंतराल को मिटा देता है। प्रेम की तीव्रता पर निर्भर करता है।

मीरा के लिए कृष्ण समसामयिक थे। किसी और को न दिखायी पड़ते हों, मीरा को दिखायी पड़ते थे। किसी और को समझ में न आते हों, मीरा उनके सामने ही नाच रही थी। मीरा उनकी भाव- भंगिमा पर नाच रही थी। मीरा को उनका इशारा-इशारा साफ था।

यह थोड़ा हमें जटिल मालूम पड़ेगा, क्योंकि हमारा भरोसा शरीर में है। शरीर तो मौजूद नहीं था।

कृष्णा ने स्वयं कहा है कि जो मुझे प्रेम करेंगे और जो मेरी बात को समझेंगे, कितना ही समय बीत जाए, मैं उन्हें उपलब्ध रहूंगा।

और जिन्होंने प्रेम नहीं किया, वे सामने बैठे रहे तो भी उपलब्ध नहीं थे।

शरीर समय और क्षेत्र से घिरा है। लेकिन तुम्हारे भीतर जो चैतन्य है, समय और और क्षेत्र का उस पर कोई संबंध नहीं है।

वह बाहर है। वह अतिक्रमण कर गया है। वह दोनों के अतीत है।

जिस कृष्ण को मीरा प्रेम कर रही थी, वे गा देहधारी कृष्ण नहीं थे। वह देह तो पाच हजार साल पहले जा चुकी।

वह तो धूल-धूल में मिल चुकी। इसलिए जानकार कहते हैं कि मीरा का प्रेम राधा के प्रेम से भी बड़ा है। होना भी चाहिए।

अगर राधा प्रसन्न थी कृष्ण को सामने पाकर, तो यह तो कोई बड़ी बात न थी। लेकिन मीरा ने पांच हजार साल बाद भी सामने पाया, यह बड़ी बात थी।

जिन गोपियों ने कृष्ण को मौजूदगी में पाया और प्रेम किया—प्रेम करने योग्य थे वे, उनकी तरफ प्रेम सहज ही बह जाता, वैसा उत्सवपूर्ण व्यक्तित्व पृथ्वी पर मुश्किल से होता है-तो कोई भी प्रेम में पड़ जाता।

लेकिन कृष्ण गोकुल छोड़कर चले गए द्वारका, तो बिलखने लगीं गोपियां, रोने लगा, पीड़ित होने लगीं। गोकुल और द्वारका के बीच का फासला भी वह प्रेम पूरा न कर पाया। वह फासला बहुत बड़ा न था। स्थान की ही दूरी थी, समय की तो कम से कम दूरी न थी।

मीरा को स्थान की भी दूरी थी, समय की भी दूरी थी; पर उसने दोनों का उल्लंघन कर लिया, वह दोनों के पार हो गयी।

प्रेम के हिसाब में मीरा बेजोड़ है। एक क्षण उसे शक न आया, एक क्षण उसे संदेह न हुआ, एक क्षण को उसने ऐसा व्यवहार न किया कि कृष्ण पता नहीं, हों या न हों। वैसी आस्था, वैसी अनन्य श्रद्धा : फिर समय की कोई दूरी-दूरी नहीं रह जाती। दूरी रही ही नहीं।

आत्मा सदा है। जिन्होंने प्रेम का झरोखा देख लिया, उन्हें वह सदा जो आत्मा है, उपलब्ध हो जाती है।

जो अमृत को उपलब्ध हुए हैं-

कृष्ण जब भी उन्हें प्रेम करेंगे, तभी उनके निकट आ जाएंगे। वे तो सदा उपलब्ध हैं, जब भी तुम प्रेम करोगे, तुम्हारी आख खुल जाती है।

यमुना छठ व जयंती

चैत्र मास की शुक्लपक्ष की षष्ठी को यमुना जयंती के नाम से जाना जाता है। इसे यमुना छठ भी कहा जाता है। इसदिन यमुना जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यमुना जी (प्राकट्य रूप में) भगवान सूर्य की पुत्री है। मृत्यु के देवता यमराज इनके बडे भाई और शनिदेव यमुना जी के छोटे भाई है। यमुना भगवान श्री कृष्ण की पटरानी थी। ब्रज क्षेत्र में यमुना को माता के समान माना जाता है। इसलिये इन्हे यमुना मैया कह के पुकारा जाता है। यमुना अपने भक्तों के पापों का नाश करके उन्हे निर्मल बना देती है।

यमुना जयंती कब है ? इस वर्ष यमुना जयंती 3 अप्रैल, 2025 गुरूवार के दिन मनायी जायेगी।

यमुना जी का पौराणिक महत्व यमुना नदी को यमुना देवी के रूप में पूजा जाता है। नदी के रूप में इसका उद्गम हिमालय का कालिंद पर्वत है। इसलिये यमुना को कालिंदी भी कहा जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब यमुना भगवान सूर्य की पुत्री है और यमराज एवं शनिदेव की बहन है। हिंदु धर्म में यमुना पूजन, यमुना स्नान का विशेष महत्व माना जाता है। ब्रजक्षेत्र में स्थानीय भाषा में कहा जाता है –

यमुना यमदूतन टारत है, भव टारत है श्री राधिका रानी। इसका अर्थ है यमुना की उपासना से मृत्यु के उपरांत यमदूतों का भय नही होता और श्रीराधा जी की भक्ति करने से जातक भव सागर को पार करके मोक्ष को प्राप्त करता है। धर्मग्रंथों में वर्णित कथा के अनुसार यम द्वितिया अर्थात भाई दूज (कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितिया) के दिन यमुना स्नान करने से मनुष्य को मृत्यु के समय यमदूतों का भय नही रहता। इससे यमुना जी का महात्म्य पता चलता है। यमुना जी के प्राकट्य के विषय में यह कथा है कि जब श्री कृष्ण ने गोलोक में श्रीराधा जी से भूलोक पर अवतार लेने के लिये कहा तो उन्होने धरती पर यमुना के ना होने से सुख की अनुभूति ना होने की बात कही। तब श्रीकृष्ण ने यमुना जी को धरती पर अवतरित होने के लिये कहा। ऐसा माना जाता है कि यमुना जयंती के दिन प्रातःकाल यमुना स्नान करने से महान पुण्य मिलता है। जो लोग यमुना स्नान नही कर सकते वो पानी में काले तिल मिलाएं और “श्री कृष्ण शरणम ममः” मंत्र का जाप करते करते स्नान करें। ऐसा करने से जातक को भगवान श्री कृष्ण की शरण प्राप्त होती है। यमुना जी की अर्चना करने से साधक को भगवान श्री कृष्ण की कृपा प्राप्त होती है। यमुना जी भगवान श्री कृष्ण की पटरानी है। एक पौराणिक कथा के अनुसार जब प्रजापति दक्ष के द्वारा आयोजित यज्ञ में माता सती ने भगवान शिव की उपेक्षा और अपमान होते हुये देखा तो वो बहुत दुखी हुई और उन्होने यज्ञ की अग्नि में कूदकर अपनी देह त्याग दी। इस दुख से दुखित होकर भगवान शिव यमुना जल में कूद गये थे। इस कारण से यमुना जी का जल कृष्णवर्णा हो गया।

यमुना जयंती पर क्या करें ? यमुना जयंती के दिन यमुना स्नान व यमुना आरती करने से महान पुण्य की प्राप्ति होती है।

ब्रज क्षेत्र में यमुना मैया की बहुत मान्यता है, यमुना जयंती पर यमुना पूजन करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। यमुना जयंती के दिन प्रातःकाल जल में काले तिल डालकर स्नान करें। स्नान करते समय “श्री कृष्ण शरणम ममः” मंत्र का जाप करें। इस दिन भगवान श्री कृष्ण की पूजा करनी चाहिये। उन्हे भोग लगाना चाहिये और उस प्रसाद को सभी में बाँटना चाहिये। कृष्ण जी के मंदिर जाकर दर्शन करने चाहिये। यमुना छठ पर यमुना नदी में दीपदान करने से जातक की सभी मनोकामनायें पूर्ण होती है।

यमुना छठ पर भक्त निर्जल व्रत का पालन करते है और अगले दिन (सप्तमी के दिन) सुबह स्नान के बाद व्रत का पारण करते है।

दिल्ली में किसका पानी का कनेक्शन कटेगा और किसका नहीं? मंत्री प्रवेश वर्मा ने बताया सबकुछ

दिल्ली में पानी के संकट और फर्जी बिलों पर विधानसभा में जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर बयान दिया। उन्होंने कहा कि जब तक नई व्यवस्था नहीं बन जाती किसी का पानी का कनेक्शन नहीं काटा जाएगा। पेयजल की किल्लत पर जवाब देते हुए वर्मा ने पिछली सरकार के कामकाज पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि केजरीवाल सरकार ने फर्जी बिल भेजकर जनता को डराया-धमकाया।

नई दिल्ली। दिल्ली में जल संकट और फर्जी बिलों पर चर्चा के दौरान जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने विधानसभा में कई अहम बिंदुओं पर बयान दिए। साथ ही उन्होंने यह भी साफ किया कि जब तक नई व्यवस्था नहीं बन जाती, किसी का पानी का कनेक्शन नहीं काटा जाएगा।

वर्मा ने कहा है कि दिल्ली में पानी के बिलों के लिए नई व्यवस्था बनाई जा रही है। पेयजल की किल्लत पर जवाब देते हुए वर्मा ने पिछली सरकार के कामकाज पर भी सवाल उठाए।

'केजरीवाल ने जनता को पानी का फर्जी बिल भेजा'

वर्मा ने सदन में पिछली सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि केजरीवाल सरकार ने अपने 10 साल के कार्यकाल में लाखों रुपये के पानी के फर्जी बिल भेजकर जनता को डराया-धमकाया। इतना ही नहीं, 100 गज और 25 गज के घरों में भी लाखों रुपये के बिल पहुंचना आम बात हो गई थी।

जल मंत्री ने कहा कि फर्जी बिलों की समस्या के समाधान के लिए सीएम रेखा गुप्ता से बातचीत की गई है, जल्द ही जनता को राहत दी जाएगी। उन्होंने कहा कि सर्विस चार्ज, पेनाल्टी और ब्याज से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जाएगा और तब तक किसी का पानी का कनेक्शन नहीं काटा जाएगा।

मंत्री वर्मा ने कहा कि मीटर रीडरों की गड़बड़ियों पर भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। गलत रीडिंग दर्ज कर अधिक बिल बनाने की शिकायतों पर सख्ती से नजर रखी जाएगी। जनता से अपील की गई है कि वे समझौते के लिए न जाएं, बल्कि शिकायत करें।

फर्जी बिलिंग पर लगेगा लगाम

उन्होंने कहा कि फर्जी बिलिंग और खराब मीटर की समस्या के समाधान के लिए सभी खराब मीटर बदले जाएंगे और जांच कराई जाएगी। अच्छे और सही मीटर लगाए जाएंगे, ताकि फर्जी बिलिंग रुके।

जल मंत्री ने कहा कि दिल्ली में जल संकट के समाधान को प्राथमिकता दी जाएगी। लोगों को पर्याप्त और साफ पानी उपलब्ध कराना सरकार का मुख्य उद्देश्य होगा। जल्द ही फर्जी बिलों से राहत दिलाने के लिए खुशखबरी दी जाएगी।

इसके साथ ही जल किल्लत व सीवर जाम की समस्या पर अल्पकालिक चर्चा का जवाब देते हुए मंत्री वर्मा ने कहा कि अगर दिल्ली की जल समस्या का समाधान हो जाए तो प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र की 80 फीसदी समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी।

इसके लिए कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में कई पानी की पाइपलाइन 80 साल से भी ज्यादा पुरानी हैं और उन्हें बदलने की जरूरत है। सरकार जल्द ही कार्ययोजना तैयार कर इस दिशा में ठोस कदम उठाएगी।

निगरानी के लिए कमांड सेंटर बनाया गया

जलापूर्ति की बेहतर निगरानी के लिए कमांड सेंटर बनाया गया है। सभी सेक्टरों को आईटी सेल से जोड़ा जाएगा, ताकि जलापूर्ति की निगरानी की जा सके। उन्होंने कहा कि दिल्ली को प्रतिदिन 1200 एमजीडी (मिलियन गैलन प्रतिदिन) पानी की जरूरत है, लेकिन फिलहाल 990 एमजीडी ही मिल रहा है।

इस कमी को पूरा करने के लिए अगले तीन महीने में 249 नए ट्यूबवेल लगाए जाएंगे। अगले महीने 96, जून में 88 और जुलाई में 55 ट्यूबवेल चालू हो जाएंगे। वर्तमान में 901 जल टैंकर काम कर रहे हैं, जिन्हें बढ़ाकर 1,300 किया जाएगा।

आरजेडी सुप्रीमो की तबीयत बिगड़ने पर दिल्ली एम्स में भर्ती, तेजस्वी ने बताया लालू यादव का हाल

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की तबीयत बिगड़ने पर उन्हें दिल्ली एम्स में भर्ती कराया गया है। पटना में इलाज के दौरान आराम नहीं मिलने पर उन्हें एम्स रेफर किया गया। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है। लालू यादव को डायबिटीज है और उनके पैरों में मवाद पड़ गया था। उनका इलाज चल रहा है। नेता तेजस्वी यादव भी उनके साथ हैं।

नई दिल्ली। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को एम्स में भर्ती कराया गया है। पटना में इलाज के दौरान आराम नहीं मिलने पर उन्हें एम्स रेफर किया गया। देर शाम उन्हें कार्डियोलॉजी विभाग में भर्ती कराया गया। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है।

पैरों में मवाद पड़ गया था

लालू को डायबिटीज है। डायबिटीज बढ़ने पर उनके पैरों में मवाद पड़ गया था। उनका इलाज चल रहा है। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है। सोमवार से ही वे पटना में थोड़ी असहज महसूस कर रहे थे। बुधवार की सुबह वे चेकअप के लिए दिल्ली जाने वाले थे, लेकिन इसी बीच उनकी बेचैनी बढ़ गई। उन्हें तुरंत पटना के पारस अस्पताल में भर्ती कराया गया।

दिल्ली में यहां रहेंगे लालू यादव

पूरे दिन डॉक्टरों की गहन निगरानी में रहने के बाद देर शाम वे दिल्ली एम्स के लिए रवाना हो गए। दिल्ली में वे अपनी सांसद बेटी मीसा भारती के सरकारी आवास पर रहेंगे। राबड़ी देवी और विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव भी उनके साथ हैं।

तेजस्वी ने कहा कि राबड़ी आवास पर भी डॉक्टरों ने लालू की जांच की थी। उन्हें परेशानी हो रही थी, इसलिए उन्हें अस्पताल लाया गया। सबको पता है कि उनका किडनी ट्रांसप्लांट और हार्ट का ऑपरेशन हुआ है। उनकी कलाई पर जख्म है।

दिल्ली एम्स के डॉक्टर करेंगे इलाज

दिल्ली एम्स के डॉक्टर उनका इलाज करेंगे। 76 वर्षीय लालू लंबे समय से गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। 2024 में मुंबई में उनकी एंजियोप्लास्टी हुई थी। 2022 में सिंगापुर में किडनी ट्रांसप्लांट हुआ था। उसके बाद लालू की सक्रियता थोड़ी बढ़ गई थी, लेकिन बढ़ती उम्र उन्हें बीमारियों से उबरने नहीं दे रही है। 2014 में उनकी ओपन हार्ट सर्जरी भी हुई थी।

सावधान! दिल्ली में 14 रुपये के नाम पर दो लाख का चूना, साइबर ठगों ने अपनाया नया तरीका

सावधान! दिल्ली जल बोर्ड के नाम पर साइबर ठग कर रहे हैं ठगी। बकाया पानी का बिल भरने के नाम पर लोगों को शिकार बना रहे हैं। एक पीड़ित से 14 रुपये के बिल पर करीब दो लाख रुपये ठगे। जानिए कैसे करते हैं ये ठगी और कैसे बचें इनसे। लेख के माध्यम से पढ़िए पूरा मामला।

नई दिल्ली। दिल्ली जल बोर्ड का फर्जी एप बनाकर साइबर अपराधी पानी का बकाया बिल भरवाने के नाम पर लोगों से ठगी कर रहे हैं। ताजा मामले में साइबर ठग ने एक व्यक्ति का 14 रुपये का बकाया बिल भरवाने के नाम पर उनसे करीब दो लाख रुपये ठग लिए।

पीड़ित का कहना है पिछले कुछ दिनों से लोगों के वाट्सएप पर पानी का बकाया बिल भरने के मैसेज लगातार आ रहे हैं। संभावना है उनमें कई लोग साइबर ठगों के शिकार हो गए हों। पीड़ित अवधेश कुमार का कहना है कि विधानसभा चुनाव से पहले दिल्ली सरकार ने लोगों को अपने पानी का बकाया बिल जमा कर देने की बात कही थी।

दिल्ली जल बोर्ड का फर्जी ऐप बना लोगों को भेजता था मैसेज

फिर पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा था कि उनकी सरकार आने पर पानी का बिल माफ कर दिया जाएगा। उसके बाद से ही साइबर अपराधी सक्रिय हो गए और दिल्ली जल बोर्ड का फर्जी ऐप बना लोगों को मैसेज भेजना शुरू कर दिया कि आपके यहां रात नौ बजे से पानी आना बंद हो जाएगा।

बकाया बिल जमा करने पर एक नंबर पर संपर्क करने की बात कही गई। 31 मार्च को इस तरह मैसेज जारी हुआ। मैसेज की अनदेखी करने पर कुछ समय बाद फोन आना शुरू हो गया। कालर ने बताया कि यह जल बोर्ड का एप है। उन्हें एप डाउनलोड कर बिल भरने के लिए कहा।

साइबर ठगों ने अकाउंट से निकाले पैसे

उसमें बिल का परफोर्मा था। उनका 14 रुपये का बिल बकाया दिख रहा था। कालर ने बताया कि बिल भरने के दौरान उनके पास एक ओटीपी आएगा। वह ऐप में ओटीपी नंबर डाल दें। कॉलर की बातों पर उन्हें संदेह हुआ इसपर उन्होंने पूछा भी कि वह ऐसे कैसे बिल जमा करवा रहे हैं।

इस पर कॉलर ने बताया कि उसने बहुत से लोगों का इसी तरह से बिल भरवाया है। इसके बाद उन्होंने डेबिट कार्ड नंबर और पिन नंबर भर दिया। उसके बाद से साइबर ठग अकाउंट से पैसे निकलना शुरू कर दिया। निजी जानकारी साझा करते ही कॉलर का उनके मोबाइल में एक्सेस हो गया।

पुलिस मामले की कर रही जांच

कॉलर ने उनके फोन की सारी जानकारी ले ली। अकाउंट से जितनी बार पैसे निकाला गया उतनी बार फोन में ओटीपी आया। कालर उनका फोन देख रहा था इसलिए उसे ओटीपी आसानी से मिल रहा था। जब तक मुझे इसका एहसास हुआ तब तक पंजाब नेशनल बैंक के एक ही अकाउंट से तीन बार पैसे निकल चुके थे।

करीब दो लाख रुपये अकाउंट से निकल चुके थे। उसके बाद उन्होंने पहले इंटरनेट बंद किया। अवधेश कुमार का कहना है कि उस समय वह किसी को फोन नहीं कर सकते थे क्योंकि उनके फोन के सारे नंबर साइबर अपराधी के पास चले गए थे। इसके बाद उन्होंने साइबर थाने जाकर अपनी शिकायत दर्ज कराई।

सफदरजंग अस्पताल और सुशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट ने विश्व ऑटिज्म दिवस पर ऑटिज्म जागरूकता पदयात्रा का आयोजन किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस के अवसर पर, सफदरजंग अस्पताल के भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास विभाग ने सुशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (ASD) से पीड़ित व्यक्तियों की समझ, स्वीकृति और समावेश को बढ़ावा देने के लिए ऑटिज्म जागरूकता पदयात्रा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में डॉक्टरों, स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों, देखभाल करने वालों, छात्रों और ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों के परिवारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सफदरजंग अस्पताल से शुरू हुई यह पदयात्रा अस्पताल परिसर के प्रमुख क्षेत्रों से होते हुए आगे बढ़ी, जिसमें ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों के लिए शीघ्र निदान, उपचार और सामुदायिक सहायता के महत्व पर ध्यान आकर्षित किया गया। प्रतिभागियों ने समावेश, सुलभता और समाज में न्यूरोडायवर्सिटी के बारे में अधिक जागरूकता की आवश्यकता की वकालत करने वाले संदेशों वाली तख्तियां ले रखी थीं।

इस अवसर पर बोलते हुए, सफदरजंग अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. संदीप बंसल ने न्यूरोडाइवर्जेंट व्यक्तियों का समर्थन करने के लिए अस्पताल की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ₹ऑटिज्म कोई विकलांगता नहीं है; यह एक अलग क्षमता है। अग्रणी सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में से एक के रूप में, हम जागरूकता फैलाने, प्रारंभिक हस्तक्षेप प्रदान करने और यह सुनिश्चित करने के लिए समर्पित हैं कि ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों को वह देखभाल मिले जिसके वे हकदार हैं।₹ समावेशिता को बढ़ावा देने में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, वीएमएमसी की प्रिंसिपल डॉ. गीतिका खन्ना ने कहा, ₹मेडिकल छात्रों और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों को ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों के साथ बातचीत करने और उनका समर्थन करने के लिए ज्ञान और संवेदनशीलता से लैस होना चाहिए। सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के आयोजन आवश्यक हैं।₹ सफदरजंग अस्पताल के पीएमआर के विभागाध्यक्ष (एचओडी) डॉ. अजय गुप्ता ने बहु-विषयक हस्तक्षेप की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ₹ऑटिज्म के लिए चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक सहायता प्रणालियों को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। निरंतर जागरूकता और नीति वकालत के माध्यम से, हमारा लक्ष्य एक ऐसा वातावरण बनाना है जहाँ ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्ति फल-फूल सकें और एक संतुष्ट जीवन जी सकें।₹

यह कार्यक्रम देखभाल करने वालों और आम जनता को ऑटिज्म के लक्षणों, शुरुआती निदान के महत्व और स्पेक्ट्रम पर व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में चिकित्सा और सहायता प्रणालियों की भूमिका के बारे में शिक्षित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। खुली बातचीत और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करके, जागरूकता वॉक का उद्देश्य रूढ़ियों को चुनौती देना और ऑटिज्म से जुड़े कलंक को कम करना था।

सफदरजंग अस्पताल और सुशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट ने न्यूरोडायवर्सिटी जागरूकता को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की कि ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों को उनकी भलाई के लिए आवश्यक संसाधन और अवसर प्राप्त हों।

यहां प्लास्टिक, वहां प्लास्टिक, आखिर कहां नहीं है प्लास्टिक?

प्लास्टिक मनुष्य से लेकर धरती के समस्त जीवों, हमारे पर्यावरण और पारिस्थितिकी के लिए एक प्रकार से ज़हर है। आज देश-दुनिया को भले ही प्लास्टिक ने कितनी ही सहूलियतें प्रदान क्यों न की हो, लेकिन यह मनुष्य, जीवों, वनस्पतियों के साथ-साथ संपूर्ण धरती के पर्यावरण के लिए विनाश ला रहा है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि हाल ही में भारत के केरल में हुए एक हालिया अध्ययन में बोतलबंद पानी में प्लास्टिक माइक्रोबीड्स की मौजूदगी का खुलासा हुआ है।यह पहली बार नहीं है जब बोतलबंद पानी में प्लास्टिक के महीन कण मिले हों। इससे पहले भी बोतलबंद पानी में प्लास्टिक की मौजूदगी के अनेक खुलासे हो चुके हैं। कुछ समय पहले नमक व चीनी तक के नमूनों में प्लास्टिक के महीन कणों की मौजूदगी के संबंध में एक अध्ययन सामने आया था। हाल ही में जो अध्ययन सामने आया है, उससे पता चलता है कि 10 प्रमुख ब्रांडों के बोतलबंद पानी में प्लास्टिक के माइक्रोबीड्स पाए गए हैं। इस स्टडी से सामने आया है कि औसतन प्रति लीटर तीन से दस माइक्रोबीड्स थे। फाइबर, टुकड़े, फिल्म और छर्रे सहित विभिन्न प्रकार के प्लास्टिक पाए गए, जो कि चिंताजनक है। चिंताजनक इसलिए क्यों कि आज भारत में बोतलबंद पानी का व्यापार लगातार बढ़ रहा है और बच्चों से लेकर बूढ़े, महिलाएं सभी बोतलबंद पानी का धड़ल्ले से उपयोग करते नजर आते हैं। आंकड़े बताते हैं कि बोतलबंद पानी के माध्यम से हर साल औसतन 153.3 प्लास्टिक कण उपभोक्ता के शरीर में प्रवेश करते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि केरल में बिकने वाले बोतलबंद पानी पर केंद्रित यह अध्ययन अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिका स्प्रिंगर नेचर के डिस्कवर एनवायरनमेंट में प्रकाशित हुआ था। अध्ययन ने नमूनों में आठ अलग-अलग प्रकार के पॉलीमर कणों की उपस्थिति की पुष्टि की है, जिसमें फाइबर सबसे आम थे, जो 58.928% थे। कुल कणों का लगभग 35.714% लाल रंग का था। विश्लेषण से पता चलता है कि नमूनों में पाए गए रेशे अनुपचारित जल स्रोतों से उत्पन्न हो सकते हैं, जबकि अन्य जल शोधन में उपयोग किए जाने वाले घटकों या पैकेजिंग के लिए उपयोग की जाने वाली बोतलों से मिश्रित हो सकते हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि केरल में बोतलबंद पानी पर हुआ ताजा अध्ययन हो या चीन, अमेरिका और जर्मनी के शोधकर्ताओं की रिपोर्ट, सब यही बताते हैं कि माइक्रोप्लास्टिक मनुष्य के जीवन और पर्यावरण, दोनों के लिए बड़ा खतरा बन गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया और अगर गंभीरता नहीं बरती गई, तो प्लास्टिक मानवजाति ही नहीं अपितु संपूर्ण जीवों व धरती के लिए एक बहुत बड़ा व गंभीर खतरा बन जाएगा। आज प्लास्टिक का जिम्मेदार उपयोग नहीं किया जा रहा है और न ही इसकी उचित रिसाइक्लिंग (पुनर्चक्रण) पर ही किसी का ध्यान है। आज हमारे घरों, आफिसेज से लेकर हर जगह प्लास्टिक का बोलबाला है। कोई भी जगह ऐसी नहीं है, जहां प्लास्टिक का किसी न किसी रूप में आविर्भाव नहीं हो। प्लास्टिक हमारी जिंदगी का बहुत ही अहम्, महत्वपूर्ण व जरूरी हिस्सा बन चुका है। हमारे शेविंग रेजर से लेकर हमारे टुथब्रश, नहाने की बाल्टी, मग, हमारे चश्मे, हमारे पेन(कलम), हमारे भोजन की थाली, प्लेट, कटोरी तक सब प्लास्टिक का ही है। संक्षेप में कहें तो हम माइक्रोप्लास्टिक्स का सामना हर जगह करते हैं। मसलन, कचरा, धूल, कपड़े, सौंदर्य प्रसाधन, सफाई उत्पाद, बारिश, समुद्री भोजन, उपज, नमक, आदि में।आज मिट्टी, पानी, भोजन, हवा और मानव शरीर सहित सभी जीवित जीवों में माइक्रोप्लास्टिक कण पाए गए हैं। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि माइक्रोप्लास्टिक, प्लास्टिक के टूटने से बनते हैं और ये हवा, पानी, और ज़मीन में भी पाए जाते हैं। वास्तव में ये हमारे शरीर में सांस लेने और खाने के ज़रिए पहुंचते हैं। इतना ही नहीं, ये हमारे रक्त, फेफड़े, और प्लेसेंटा में भी पाए गए हैं। सच तो यह है कि ये हमारे शरीर के लगभग हर हिस्से में पाए जाते हैं, क्यों कि आज हम बेतहाशा रूप से हर चीज़ में प्लास्टिक का उपयोग कर रहे हैं। आज हम चाय, कोफी तक प्लास्टिक के डिस्पोजेबल कप्स में पीते हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि अध्ययन बताते हैं कि औसतन, मनुष्य प्रतिदिन 240 कणों को साँस के ज़रिए अंदर लेता है। यूएनईपी के अनुसार, हर साल 23 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा दुनिया की जल प्रणालियों में लीक हो जाता है। हाल ही में जो शोध सामने आया है वह बोतलबंद पानी के उत्पादन में बेहतर गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं की आवश्यकता पर गंभीरता से प्रकाश डालता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह प्लास्टिक के उपयोग को कम करने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी जोर देता है कि उपयोग के बाद इसे(प्लास्टिक को) वैज्ञानिक रूप से संसाधित किया जाए। बहरहाल, यहां यह उल्लेखनीय है कि कुछ समय पहले साइंस एडवांस में प्रकाशित एक अध्ययन ने भी बताया था कि प्लास्टिक के नैनो कण इन्सान के दिमाग में प्रवेश कर रहे हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि माइक्रोप्लास्टिक के मानव स्वास्थ्य पर बहुत गंभीर प्रभाव पड़ते हैं। मसलन, ये सूजन, जीनोटॉक्सिसिटी, ऑक्सीडेटिव तनाव, एपोप्टोसिस, और नेक्रोसिस जैसी समस्याएं पैदा कर सकते हैं। इतना ही नहीं, ये कैंसर, हृदय रोग, सूजन आंत्र रोग, मधुमेह, रुमेटी गठिया, और ऑटो-इम्यून स्थिति जैसी बीमारियों से जुड़े हो सकते हैं। यहां तक कि ये प्रजनन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि माइक्रोप्लास्टिक कण पौधों की प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को भी बाधित कर रहे हैं, जिससे गेहूं, धान और मक्का जैसी प्रमुख फसलों की पैदावार में सालाना 14 फीसदी तक की गिरावट आ सकती है। प्रकाश संश्लेषण दरअसल, पौधों के भोजन बनाने की प्रक्रिया है, जिसमें वे श्वसन के विपरीत, कार्बन डाई ऑक्साइड ग्रहण करते हैं, और वातावरण में ऑक्सीजन छोड़ते हैं। लिहाजा यह प्रक्रिया हमारे ग्रह पर कार्बन डाई ऑक्साइड के स्तर को नियंत्रित रखने के लिए भी जरूरी है। प्लास्टिक एक ऐसी चीज़ है जो करोड़ों सालों तक भी नष्ट नहीं होती है। कुछ लोग यह समझते हैं कि प्लास्टिक को जलाने से यह खत्म हो जाता है, लेकिन यह ग़लत है। प्लास्टिक को जलाना तो और भी अधिक खतरनाक है। गौरतलब है कि प्लास्टिक को जलाने से डाइऑक्सिन, फ़्यूरान, और पीसीबी जैसे हानिकारक रसायन निकलते हैं।बहरहाल, यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्लास्टिक के उत्पादन और विनाश से ऐसे कण और गैसें पैदा होती हैं, जो जलवायु परिवर्तन(क्लाइमेट चेंज) में योगदान करती हैं, और पर्यावरण में विघटित होने के लिए छोड़े गए प्लास्टिक से ग्रीनहाउस गैसें निकलती हैं। ग्रीन हाउस गैसों की बढ़ोतरी से धरती के तापमान में बढ़ोत्तरी होती है और हमारी धरती की पारिस्थितिकी गड़बड़ा जाती है। अध्ययन बताते हैं कि माइक्रोप्लास्टिक समुद्री सूक्ष्मजीवों की कार्बन डाइऑक्साइड को अलग करने और ऑक्सीजन का उत्पादन करने की वैश्विक रूप से महत्वपूर्ण भूमिकाओं को बाधित करते हैं। ये कमी हमारे और हमारे नीले ग्रह(धरती) के स्वास्थ्य को और ख़तरे में डालती है। आज हमारी धरती निरंतर प्लास्टिक की जद में आती चली जा रही है। प्लास्टिक के आंकड़े जानकर हर किसी को घोर आश्चर्य हो सकता है। मसलन, दुनिया भर में करीब 903 करोड़ टन प्लास्टिक है।यह 110 हाथियों के वज़न के बराबर है।दुनिया भर में हर साल करीब 450 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्पादन होता है।गौरतलब है कि 1950 में दुनिया भर में महज 15 लाख टन प्लास्टिक का उत्पादन होता था, जबकि वर्ष 2022 तक यह आंकड़ा 400 करोड़ टन पर पहुंच गया है, जिससे स्थिति की गंभीरता समझी जा सकती है। क्या यह आश्चर्यजनक और गंभीर बात नहीं है कि हर साल करीब 1.3 करोड़ टन प्लास्टिक कचरा समुद्र में गिराया जाता है। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार प्लास्टिक 11 किलोमीटर गहराई तक पाया गया है। इतना ही नहीं, दुनिया भर में पैदा हुए सात अरब टन प्लास्टिक कचरे में से 10 प्रतिशत से भी कम को रिसाइकिल किया गया है। आंकड़े बताते हैं कि हर साल प्लास्टिक प्रदूषण से 10 लाख से अधिक समुद्री पक्षी और 100,000 समुद्री जानवर मर जाते हैं। जानकारी मिलती है कि 100% शिशु समुद्री कछुओं के पेट में प्लास्टिक होता है। उल्लेखनीय है कि हमारे महासागर में अब 5.25 ट्रिलियन प्लास्टिक के वृहद और सूक्ष्म टुकड़े हैं, तथा महासागर के प्रत्येक वर्ग मील में 46,000 टुकड़े हैं, जिनका वजन 269,000 टन तक है। क्या यह गंभीर बात नहीं है कि वर्तमान में हमारे महासागरों में अनुमानतः 75 से 199 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा है, तथा प्रतिवर्ष 33 बिलियन पाउंड प्लास्टिक समुद्री पर्यावरण में प्रवेश कर रहा है और हर दिन लगभग 8 मिलियन प्लास्टिक के टुकड़े हमारे महासागरों में पहुँचते हैं।विश्व में प्रतिवर्ष 381 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जो वर्ष 2034 तक दोगुना हो जाएगा।इसमें से 50% एकल-उपयोग प्लास्टिक है और केवल 9% का ही पुनर्चक्रण किया गया है। आंकड़े बताते हैं कि समुद्र की सतह का 88% हिस्सा प्लास्टिक कचरे से प्रदूषित है और हर साल 8 से 14 मिलियन टन तक कचरा हमारे महासागर में प्रवेश करता है। ब्रिटेन प्रतिवर्ष 1.7 मिलियन टन प्लास्टिक तथा अमेरिका हर साल 38 मिलियन टन प्लास्टिक का योगदान देता है। वास्तव में, प्लास्टिक पैकेजिंग इसका सबसे बड़ा दोषी है, जिसके कारण अकेले अमेरिका में प्रतिवर्ष 80 मिलियन टन कचरा उत्पन्न होता है। आज हर चीज की पैकेजिंग प्लास्टिक में की जाती है, हमें इससे बचना होगा और इसके बेहतर विकल्प तलाशने होंगे।आज हर मिनट 10 लाख से अधिक प्लास्टिक थैलियां कूड़े में फेंकी जाती हैं। इतना ही नहीं, विश्व में प्रति वर्ष 500 बिलियन से अधिक प्लास्टिक बैग का उपयोग किया जाता है-यानि पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए 150 बैग। प्लास्टिक के आंकड़े वास्तव में बहुत ही गंभीर हैं। 8.3 बिलियन प्लास्टिक स्ट्रॉ दुनिया के समुद्र तटों को प्रदूषित करते हैं, लेकिन केवल 1% स्ट्रॉ ही समुद्र में अपशिष्ट के रूप में पहुंचते हैं। इतना ही नहीं, मानव उपभोग के लिए पकड़ी गई 3 में से 1 मछली में प्लास्टिक होता है। अंत में यही कहूंगा कि वर्ष 2022 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा (यूएनईए) में प्लास्टिक संधि पर प्रस्ताव लाए जाने के बावजूद अब तक प्लास्टिक पर कोई ठोस कदम नहीं उठाये जा सकें हैं। वास्तव में यह दर्शाता है कि हम सभी प्लास्टिक को लेकर बहुत ही लापरवाही बरत रहे हैं। आज भी हमारे देश में सिंगल यूजर प्लास्टिक का धड़ल्ले से उपयोग किया जाता है। यह पर्यावरण प्रदूषण, मानव स्वास्थ्य और वन्य जीवों को बेतहाशा नुकसान पहुंचा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग को जन्म दे रहा है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि भारत में 1 जुलाई, 2022 से सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया है। इस प्रतिबंध के तहत, एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक के निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री, और इस्तेमाल पर रोक है, लेकिन इसके बावजूद जिस तरह से सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बदस्तूर जारी है, वह वाकई चिंतित करने वाला है। आज जरूरत इस बात की है कि हम प्लास्टिक के उपयोग को लेकर सतर्कता बरतें, लोगों को जागरूक करें और हमारी प्रकृति, पर्यावरण को प्लास्टिक के ख़तरों से बचाएं। प्लास्टिक प्रदूषण आज एक वैश्विक समस्या है, हम सभी को इस समस्या से निपटने के लिए सामूहिकता से आगे आना होगा। तभी हम वास्तव में अपने नीले ग्रह को प्लास्टिक असुर से बचा पायेंगे।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

एचकेआरएनएल कर्मचारियों की दुर्दशा: सरकारी व्यवस्था का एक और छलावा

एचकेआरएनएल कर्मचारियों की अनदेखी : सरकार की नीतियों का शिकार मेहनतकश वर्ग

जब भी हरियाणा विधानसभा में खाली सरकारी पदों को भरने की मांग उठती है, सरकार इन कर्मचारियों को केवल आंकड़ों की बाजीगरी में इस्तेमाल करती है। सरकार यह दिखाने का प्रयास करती है कि उसने रोजगार उपलब्ध करा दिया है, लेकिन वास्तविकता में इन कर्मचारियों को केवल अल्पकालिक संविदा पर रखा जाता है। सरकार को तुगलकी फरमान वापस लेना चाहिए और इन कर्मचारियों के लिए नौकरी की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। यदि सरकार इस दिशा में कदम नहीं उठाती, तो यह हजारों परिवारों की आर्थिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डालेगा। एचकेआरएनएल कर्मचारियों को भी अन्य सरकारी कर्मचारियों की तरह बीमा, पेंशन और अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ मिलना चाहिए, जिससे उनका भविष्य सुरक्षित हो सके।

प्रियंका सौरभ*

हरियाणा कौशल रोजगार निगम लिमिटेड (एचकेआरएनएल) के तहत कार्यरत कर्मचारियों की स्थिति दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है। यह कर्मचारी मेरिट के आधार पर भर्ती तो होते हैं, लेकिन इन्हें न तो उचित वेतन मिलता है और न ही नौकरी की सुरक्षा। सरकार इन्हें एक अस्थायी समाधान के रूप में इस्तेमाल कर रही है, लेकिन इनके अधिकारों की कोई परवाह नहीं की जा रही। एचकेआरएनएल के तहत काम कर रहे कर्मचारी सरकार के लिए सिर्फ एक ₹अस्थायी समाधान₹ बनकर रह गए हैं। सरकार इनका उपयोग कर वाहवाही तो बटोर रही है, लेकिन इन्हें स्थायी नौकरी देने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही। जब सरकारी विभागों में खाली पदों को भरने की बात होती है, तो इन्हीं कर्मचारियों को दिखाकर सरकार आंकड़े चमकाने में लगी रहती है।

सरकार का तुगलकी फरमान: एचकेआरएनएल कर्मचारियों की नौकरियों पर संकट

हाल ही में सरकार ने एक ऐसा फरमान जारी किया है, जिससे एचकेआरएनएल कर्मचारियों की नौकरियों पर खतरा मंडराने लगा है। सरकार न केवल इन कर्मचारियों को नियमित करने से कतरा रही है, बल्कि अब उन्हें हटाने की दिशा में भी कदम बढ़ा रही है। यह निर्णय हजारों परिवारों को बेरोजगारी की ओर धकेल सकता है। सरकार ने पहले 58 साल तक सुरक्षा की गारंटी दी थी, लेकिन जनवरी माह में विभिन्न विभागों में कार्यरत सैकड़ों एचकेआरएनएल कर्मचारियों को हटा दिया गया। जब हटाए गए कर्मचारियों ने रोष प्रदर्शन किया, तब भी सरकार ने उनकी एक न सुनी। अब हरियाणा कौशल रोजगार निगम द्वारा वन विभाग में कार्यरत कर्मचारियों को ईद के पवित्र त्योहार पर बड़ा झटका देते हुए नौकरी से हटा दिया गया। पंचकूला मुख्यालय के अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक ने इन कर्मचारियों की सेवाएं तत्काल प्रभाव से समाप्त करने का आदेश जारी किया है।

इसके अतिरिक्त, सरकार ने शिक्षा विभाग में कार्यरत सैकड़ों सरप्लस शिक्षकों को भी हटाने का निर्णय लिया है। यह फैसला न केवल शिक्षकों के लिए एक बड़ा झटका है, बल्कि शिक्षा प्रणाली पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। शिक्षक लंबे समय से छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए समर्पित थे, लेकिन अब उनकी नौकरियों पर संकट मंडरा रहा है।

मुख्य समस्याएँ

एचकेआरएनएल के कर्मचारी नियमित सरकारी कर्मचारियों की तरह ही कार्य करते हैं, लेकिन इन्हें मात्र एक तिहाई वेतन मिलता है। यह स्थिति न केवल आर्थिक रूप से इन कर्मचारियों को कमजोर बना रही है, बल्कि उनके मनोबल को भी गिरा रही है। कर्मचारियों को समय पर वेतन न मिलने की समस्या लगातार बनी हुई है। कई बार महीनों तक वेतन अटका रहता है, जिससे वे आर्थिक संकट का सामना करने को मजबूर होते हैं। नियमित कर्मचारियों की तुलना में इन कर्मचारियों से अधिक कार्य लिया जाता है, लेकिन उन्हें कोई स्थायित्व नहीं दिया जाता। नतीजतन, वे हमेशा असुरक्षा के माहौल में कार्य करने को मजबूर रहते हैं। जब भी हरियाणा विधानसभा में खाली सरकारी पदों को भरने की मांग उठती है, सरकार इन कर्मचारियों को केवल आंकड़ों की बाजीगरी में इस्तेमाल करती है। सरकार यह दिखाने का प्रयास करती है कि उसने रोजगार उपलब्ध करा दिया है, लेकिन वास्तविकता में इन कर्मचारियों को केवल अल्पकालिक संविदा पर रखा जाता है। नियमित कर्मचारियों को जहां सभी प्रकार की छुट्टियाँ मिलती हैं, वहीं एचकेआरएनएल के कर्मचारियों को छुट्टियों की सुविधा तक नहीं दी जाती। इसका असर उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

नौकरी छिनने का खतरा

सरकार के नए आदेश के अनुसार, एचकेआरएनएल के कर्मचारियों को हटाने की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। यह फैसला उन हजारों कर्मचारियों के लिए बड़ा झटका है, जिन्होंने वर्षों तक सस्ती मजदूरी पर मेहनत की है। अन्य सरकारी योजनाओं से बाहर रखा जानाइन कर्मचारियों को किसी भी सरकारी लाभ, बीमा, पेंशन या अन्य सुविधाओं का अधिकार नहीं दिया गया है, जिससे इनका भविष्य पूरी तरह से असुरक्षित बना हुआ है। नौकरी की अस्थिरता और भविष्य की अनिश्चितता के कारण कर्मचारियों में भारी मानसिक तनाव देखने को मिल रहा है। यह स्थिति न केवल उनके जीवन स्तर को प्रभावित कर रही है, बल्कि उनके परिवारों पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

समाधान के संभावित उपाय

एचकेआरएनएल कर्मचारियों को उनके कार्य के अनुरूप वेतन दिया जाना चाहिए। यह अन्यायपूर्ण है कि वे समान कार्य के लिए नियमित कर्मचारियों की तुलना में बहुत कम वेतन प्राप्त करें। सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए कि इन कर्मचारियों को वेतन समय पर मिले ताकि वे आर्थिक संकट से बच सकें। जो कर्मचारी लंबे समय से कार्यरत हैं, उन्हें स्थायी करने की नीति बनाई जानी चाहिए। इससे वे अधिक सुरक्षित महसूस करेंगे और अपने कार्य में और अधिक दक्षता ला सकेंगे। कर्मचारियों पर जरूरत से ज्यादा कार्यभार डालने के बजाय उनके कार्य को नियमित सरकारी कर्मचारियों के कार्य से संतुलित किया जाए। सरकार को आंकड़ों की बाजीगरी छोड़कर वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिए और एचकेआरएनएल कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए।

सरकार को तुगलकी फरमान वापस लेना चाहिए और इन कर्मचारियों के लिए नौकरी की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। यदि सरकार इस दिशा में कदम नहीं उठाती, तो यह हजारों परिवारों की आर्थिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डालेगा। एचकेआरएनएल कर्मचारियों को भी अन्य सरकारी कर्मचारियों की तरह बीमा, पेंशन और अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ मिलना चाहिए, जिससे उनका भविष्य सुरक्षित हो सके। यदि सरकार उनकी मांगों को अनसुना करती है, तो इन कर्मचारियों को कानूनी सहारा लेना चाहिए और न्यायालय में अपनी आवाज उठानी चाहिए। यह एक संवैधानिक अधिकार है कि उन्हें उनके श्रम का उचित मूल्य मिले।

आगे की राह

एचकेआरएनएल कर्मचारी सरकार के लिए केवल अस्थायी समाधान बनकर रह गए हैं। उन्हें पूर्णकालिक नौकरी का वादा किया जाता है, लेकिन वास्तविकता में वे एक अनिश्चित भविष्य की ओर धकेले जा रहे हैं। यदि सरकार जल्द ही इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं लेती, तो ये कर्मचारी विरोध प्रदर्शन करने पर मजबूर हो सकते हैं। न्यायसंगत वेतन, समय पर भुगतान, स्थायीकरण और नौकरी की सुरक्षा जैसी मांगों को सरकार को प्राथमिकता देनी चाहिए ताकि इन कर्मचारियों को उनका हक मिल सके। इसके अलावा, कर्मचारियों को कानूनी कदम उठाने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की भी जरूरत है।

(लेखिका स्वतन्त्र पत्रकार और कवयित्री है।)

आम की पत्तियां के स्वास्थ्य लाभ

आम के साथ-साथ इसकी पत्तियों भी हमारे लिए बहुत ही गुणकारी होती है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और एंटीमाइक्रोबियल गुण होने के कारण यह लगभग हर बीमारी का आसानी से इलाज कर सकती है। गर्मियों में सबसे ज्यादा मिलने और पसंद किये जाने वाले फलों के राजा आम के बिना गर्मियां अधूरी सी लगती है। यह काफी स्वादिष्ट होने के साथ सेहत के लिए लाभकारी भी होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आम के साथ-साथ इसकी पत्तियों भी हमारे लिए बहुत ही गुणकारी होती है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और एंटीमाइक्रोबियल गुण होने के कारण यह लगभग हर बीमारी का आसानी से इलाज कर सकती है। इसके अलावा इसमें बहुत अधिक मात्रा में विटामिन सी, बी और ए भी पाया जाता है। आम की पततियां एक ऐसा खजाना हैं, जो आपको फ्री में ही मिलता है। इसलिये इसे अच्छी ढंग से प्रयोग करें। आम की पततियां साल भर में मौजूद रहती हैं, इसलिये आपको बीमारी दूर करने के लिये किसी खास मौसम का इंतजार करने की जरुरत नहीं है। प्राचीन चीनी दवाइयों में आम के पत्तों का अर्क डायबिटीज और अस्थमा के इलाज में उपयोग किया जाता है। आम के पत्तों में कैफीक एसिड जैसे फिनॉलिक, मैगीफेरिन जैसे पॉलिफिनॉल्स, गैलिक एसिड, फ्लेवोनोइड्स और कई अस्थाई यौगिकों जैसे घटक पाए जाते हैं। ये सभी गुण आम को अच्छा एंटी-डायबिटीक, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटी-एलर्जिक प्राकृतिक उत्पाद बनाते हैं।

आम के खास गुणः-

1. ब्लड शुगर नियंत्रण – ऐसा आम के पत्तों में मौजूद टैनिन की वजह से होता है। आम के पत्तों से निकला अर्क इंसुलिन उत्पादन और ग्लूकोज का प्रसार ब्लड शुगर का स्तर घटाता है। पढ़िये, किस तरह से आपका ब्लड शुगर लेवल आपके स्वभाव को प्रभावित करता है।

2. कम कोलेस्ट्रॉल- आपको याद रखना चाहिये कि डायबिटीज आपके शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को प्रभावित करता है और हृदय उनमें से एक होता है। कोलेस्ट्रॉल का उच्च स्तर आपके हृदय को व्यापक तौर पर नुकसान पहुंचा सकता है। यदि आप शुगर की बीमारी से पीड़ित हैं तो बाकी चीजें आपके लिये स्वतः खराब होने लगती है। चूंकि आम के पत्तों में फाइबर, पेक्टिन और विटामिन सी प्रचुर मात्रा में होता है, जो आपके कोलेस्ट्रॉल, खासतौर पर एलडीएल या हानिकारक कोलेस्ट्रॉल के लेवल को घटाता है। इसके अलावा फल में मौजूद फ्लेवोनोविड्स लिपिड लेवल को कम करने में मदद करता है। इससे आपकी धमनियां मजबूत और स्वस्थ बन सकती है।

3. डायबिटीक रेटिनोपैथी का इलाज- आम के फल के साथ-साथ पत्तों में भी विटामिन ए होता है, जो आंखों के लिये बेहद फायदेमंद होता है। यही कारण है कि पत्ते भी आंखों को खराब होने से बचा सकते हैं, साथ ही ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रण में रखने में भी मदद करते हैं।

4. गॉल ब्लैडर और किडनी स्टोन से बचाये- डायबिटीज के चलते किडनी फेल होना बेहद आम है। अनियंत्रित ब्लड शुगर लेवल से यह बड़ी समस्या सबसे पहले होती है। आम का सेवन करने से इस समस्या से बचने में काफी मदद मिलती है। आम की पत्तियों से किडनी में पथरी की समस्या को हल करने और किडनी को सेहतमंद रखने में मदद मिलती है। इसी तरह यह आपको पित्ताशय की पथरी से निजात पाने और लिवर को सेहतमंद रखने में भी मदद करता है।

5. अस्थमा से बचाये- आम की पत्तियां अस्थमा की बीमारी को कंट्रोल और इससे आपको बचाती हैं। आम की पत्तियां चाइनीज दवाओं में भी बहुत प्रयोग की जाती हैं, आप अस्थमा से निजात पाने के लिए इसकी पत्तियों का काढ़ा बनाकर थोड़ा सा शहद मिलाकर प्रयोग कर सकते हैं

6. पेट के लिये रामबाण- प्रकृति हमें कई बीमारियों का उपचार स्वयं उपलब्ध कराती है, आमतौर पर प्राकृतिक उपचार के कोई साइड इफेक्ट भी नहीं होते हैं। पेट की बीमारी के लिये में आम के मुलायम पत्ते आपके लिये संजीवनी का काम करते हैं। थोड़ी सी आम की पततियों को गर्म पानी में डालें, बर्तन को ढंक दें और रातभर के लिये इसे ऐसे ही छोड़ दें। अगली सुबह पानी को छान कर खाली पेट पी जाएं। इसे नियमित पीने से पेट की सारी गंदगी बाहर निकल जाती है और पेट का कोई रोग नहीं होता।

आम की पत्तियां इस्तेमाल करने का तरीका-

1. हल्के हरे रंग के छोटे आकार के आम के पत्तों को तोड़ लें, उन्हें अच्छे से धोएं और छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर चबाइये।

2. आम के कुछ पत्तों को तोड़िये और रात भर के लिये बर्तन में भिगो दें। अलसुबह इसका सेवन करें। ध्यान रखें इसका सेवन खाली पेट ही करें।

3. पत्तियों को धो कर धूप में सुखाएं और पावडर बना लें। इस पावडर की एक चम्मच लें और एक गिलास पानी में मिलाकर पी लें। रोज सुबह एक चम्मच सेवन करने से ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल में रहता है।

उपेंद्र सिंह ने की, देश के सार्वजनिक स्थलों से अत्याचारियों के नाम बदलकर भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के नाम रखे जाने की मांग

"यह सिर्फ एक नाम बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है"

आगरा, संजय सागर सिंह। देश के सभी सार्वजनिक स्थलों से अत्याचारियों के नाम हटाकर उन्हें भारतीय महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। यह मुद्दा केवल नाम परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय इतिहास, सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रवाद से जुड़ा हुआ एक गंभीर विषय है।

इस संदर्भ में भाजपा के वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने राष्ट्रहित में अपनी बात रखते हुए कहा कि अत्याचारियों के नाम भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विरोधी हैं। उनके शासनकाल में भारतीयों पर किए गए अत्याचारों को देखते हुए, उनके नामों पर सार्वजनिक स्थलों का नामकरण करना उचित नहीं है। उनका मानना है कि भारतीय महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से इन स्थलों का नामकरण किया जाना चाहिए, ताकि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और इतिहास की सही पहचान को दर्शा सके।

उन्होंने आगे कहा, "यह मांग लंबे समय से उठाई जा रही है और इसे समाज तथा प्रशासनिक स्तर पर गंभीरता से लिया जाना चाहिए। उन्होंने सरकार से अपील की है कि इस विषय पर ठोस कदम उठाया जाए। उनका कहना है कि यह सिर्फ एक नाम बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज के एकीकृत इतिहास और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह ने यह भी बताया कि ऐतिहासिक स्थलों और सड़कों के नामों में बदलाव की मांग नई नहीं है। पहले भी कुछ स्थानों के नाम बदले गए हैं, जैसे "अत्याचारी रोड₹ का नाम बदलकर ₹डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम रोड₹ किया गया था। देशभर में विदेशी आक्रमणकारियों और अत्याचारियों के नामों को हटाने की लंबे समय से मांग की जा रही है। इसे ऐतिहासिक पुनर्लेखन के रूप में देखा जा रहा है, जो भारतीय संस्कृति और इतिहास की पुनर्स्थापना की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

उन्होंने कहा, ₹केंद्र सरकार पहले भी इस तरह की मांगों पर विचार कर चुकी है और कई बार सार्वजनिक स्थानों के नामों में बदलाव के लिए ज्ञापन भी सौंपे गए हैं। यह मांग भारतीय समाज में ऐतिहासिक स्मारकों, सड़कों और स्थलों के नामकरण को लेकर जागरूकता और संवेदनशीलता को उजागर करती है। कई लोग इसे भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार की दिशा में एक आवश्यक कदम मानते हैं, और यह देश की सांस्कृतिक पहचान को मजबूती प्रदान करेगा।

आखिर में उन्होंने कहा, "अब समय आ गया है कि इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार किया जाए और सभी सार्वजनिक स्थलों से अत्याचारियों के नाम हटाकर भारतीय महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से उन्हें प्रतिस्थापित किया जाए।"

अंतर्राष्ट्रीय गाज़र दिवस 4 अप्रैल 2025 - गाजर खाओ स्वस्थ बनाओ - कुदरत के कायदे, गाज़र के फायदे

वैश्विक स्तरपर प्रतिवर्ष देखते हैं कि वर्ष के अनेकों दिन किसी न किसी दिवस के रूप में मनाए जाते हैं, जो उसे विषय पर जनहित में जनजागरण फैलाने के लिए मनाए जाते है। पूरी दुनियाँ के मानवीय जीवों को सुचारू रूप से चलने के लिए अनेकों आवश्यकताओं में आधारभूत स्वास्थ्य व्यवस्था भी शामिल है। बड़े बुजुर्गों का मानना है कि जीव है, तो जहान है, यानें जीव सुरक्षित तब रहेगा जब वह स्वस्थ होगा, वह स्वस्थ तभी रहेगा जब उसमें भरपूर इम्यूनिटी हो, जो कि सभी प्रकार के रोगों से लड़ने में इम्यूनिटी काम आती है। जीव द्वारा पौष्टिक अहारों के खाने से स्ट्रांग होती है इसलिए अपने जीवन का सच्चा सुख आनंद तभी उठा पाएंगे जब हम स्वस्थ रहेंगे। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 4 अप्रैल 2025 को अंतर्राष्ट्रीय गाजर दिवस है, जिसमें पूरी दुनियाँ में संजीगी से मनाया जाता है, ताकि पौष्टिक आधार के प्रति लोगों में जन जागरण फैलाया जा सके ताकि उनका जीवन सुख में स्वस्थ होता के वह अपना जीवन सुचारु रूप से चला कर देश सेवा में सहभागी बने। वर्तमान जंक व चाइनीस फूड वाले युग में पोषक तत्वों से भरपूर नेचुरल इम्युनिटी बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ व फलों का सेवन जरूरी है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे। अंतरराष्ट्रीय गाजर दिवस 4 अप्रैल 2025, गाजर खाओ स्वास्थ्य बनाओ। कुदरत के कायदे गाजर से फायदे।

साथियों बात अगर हम गाजर दिवस मनाने की करें तो, साल 2003 अंतर्राष्ट्रीय गाजर दिवस की स्थापना की गई और इस के बाद से ही 2012 यह विश्व के अलग अलग कोनो तक पहुंचा।जानकारों का मानना है कि एशिया के लोगों ने सबसे पहले गाजर की खेती की शुरुआत की थी।हर साल 4 अप्रैल को विश्व गाजर दिवस के रूप में मनाया जाता है।इसका मकसद लोगों को गाजर के फायदे से रूबरू कराना। दरअसल एक तरफ जहां देश भर में जंक फूड से जुड़े दिवस पर काफी जोर दिया जा रहा है। वहीं गाजर दिवस मनाने का मकसद है देश के लोगों के बीच पौष्टिक आहारों के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ाई जा सके। ऐसे में अंतर्राष्ट्रीय गाजर दिवस, गाजर की सभी विभिन्न किस्मों के बारे में और इसके और फायदे जानने का एक सही अवसर है।

साथियों बात अगर हम गाजर खाने के फायदों की करें तो, जानकारों का मानना है कि गाजर की मूल उत्पत्ति पंजाब और कश्मीर की पहाड़ियो में हुई, वहीं ये चार अलग अलग रंगों की पाई जाती है। लाल, पीली संतरा और काली और सभी के अपने अपने फायदे हैं।जानते हैं इससे मिलने वाले फायदे के बारे में, गाजर खाने के फायदे- आंख -.गजर आंखों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।बीटा कैरोटीन, अल्फा कैरोटीन ल्यूटीन नामक ऑर्गेनिक पिगमेंट होता है जो गाजर में समृद्ध मात्रा में पाया जाता है. उम्र के साथ होने वाली आंखों के समस्या में आराम दिलवाने में बीटा कैरोटीन मदद कर सकता है. इसके अलावा इसमें अन्य खनिज जैसे विटामिन सी भी पाया जाता है जो बढ़ती उम्र के कारण होने वाले मैक्यूलर डीजेनरेशन से आराम दिलाने में मददगार होता है।दिल- गाजर खाने से दिल के मरीजों को भी फायदा पहुंच सकता है। यह खून में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित कर हृदय रोग के जोखिम को कम कर सकता है, इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स दिल के लिए फायदेमंद है, इसके अलावा गाजर में मौजूद पोटैशियम ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद करती है। गाजर में पाए जाने वाले फाइबर वजन को कंट्रोल कर सकता है और दिल की बीमारियों की संभावना को कम कर सकता है। इसके अलावा लाल गजब की बात करें तो इसमें लाइकोपिन होता है जो हिर्दय रोग को रोकता है। इम्यूनिटी -गाजर में एंटी ऑक्सीडेंट और एंटी गुण होते हैं जो इम्यूनिटी बढ़ाने में मदद करते हैं। इसके अलावा इसमें मौजूद बीटा कैरोटीन और ऑर्गेनिक कंपाउंड शरीर को कई संक्रामक बीमारियों से बचाने का काम करता है, यह सभी कंपाउंड बीमारी के बाद शरीर में रिकवरी में तेजी लाता है पाचन- गाजर में फाइबर की मौजूदगी आपको कब्ज से राहत दिला सकती है। अगर आपका पेट साफ नहीं हो रहा है तो कुछ कच्चे गाजर को अपने डाइट में शामिल कर लें, इससे मल त्यागने में आसानी होती है, इसके अलावा गाजर हड्डियों को स्वस्थ रखने में भी मदद कर सकता है, क्यों कि इसमें कैल्शियम की मात्रा भी पाई जाती है। त्वचा- गाजर में मौजूद beta-carotene एक प्रभावी एंटी ऑक्सीडेंट है जो एंटी एजिंग के साइंस को कम करता है।व

साथियों बात अगर हम गाजर की कुछ साफ बातों की करें तो, गाजर के बारे में कुछ खास बातें: (1) गाजर को कच्चा, भुना हुआ, भाप में पकाया हुआ या सूप और स्मूदी में मिलाकर खाया जा सकता है। (2) गाजर का जूस, जो अपने ताज़ा स्वाद और स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है। (3) गाजर रसोई में अपनी बहुमुखी प्रतिभा के लिए जानी जाती है। (4) गाजर सूप, स्टू और सलाद में भी एक लोकप्रिय सामग्री है। (5) गाजर अदरक, लहसुन, शहद और बाल्समिक सिरका सहित विभिन्न स्वादों के साथ अच्छी तरह से मेल खाते हैं। (6) गाजर घोड़ों और दूसरे पशुओं के लिए भी एक लोकप्रिय व्यंजन है। (7) गाजर शब्द ग्रीक शब्द कैरोटॉन से आया है जिसका मतलब है सींग या जड़। अंतर्राष्ट्रीय गाजर दिवस दुनिया भर के गाजर प्रेमियों के लिए है और इसे गाजर खाने और गाजर पार्टियों के आयोजन के साथ मनाया जाता है। इसे 2003 में सब्जी के बारे में जानकारी फैलाने के लिए बनाया गया था। यह समझ में आता है कि गाजर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है, क्योंकि वे दुनिया की दस सबसे आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण सब्जियों में से एक हैं। गाजर जड़ वाली सब्ज़ियाँ हैं। वे आम तौर पर नारंगी रंग की होती हैं, हालाँकि वे लाल, बैंगनी, काली, सफ़ेद या पीली भी हो सकती हैं। यह रंग की मुख्य जड़ है जिसे सबसे ज़्यादा खाया जाता है, हालाँकि पत्तियाँ और बीज भी खाए जा सकते हैं, और इसीलिए मूल रूप से पौधों की खेती की जाती थी। आधुनिक गाजर जंगली गाजर से पालतू बनाए गए थे, जो संभवतः फारस में उत्पन्न हुए थे, एक ऐसा क्षेत्र जो अब अफ़गानिस्तान और ईरान है। उन्हें बड़े, कम लकड़ीदार और कड़वे स्वाद वाले, और अधिक मीठे होने के लिए चुनिंदा रूप से पाला गया था। लेखन में उल्लेख है कि पहली शताब्दी ई. में रोम के लोग संभवतः गाजर खाते थे। छठी शताब्दी के ग्रीक जुलियाना एनिसिया कोडेक्स में गाजर की तीन अलग-अलग किस्मों का उल्लेख किया गया है। आठवीं शताब्दी में गाजर स्पेन में पहुँची, और आज हम जिस आधुनिक गाजर से परिचित हैं, उसकी खेती सबसे पहले दसवीं शताब्दी के आसपास अफ़गानिस्तान में की गई थी। यह गाजर आमतौर पर बैंगनी या पीले रंग की होती है जिसकी जड़ें शाखायुक्त होती हैं और इसे पूर्वी गाजर कहा जाता है। चौदहवीं शताब्दी तक खेती की गई गाजर चीन और अठारहवीं शताब्दी तक जापान पहुँच गई। सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय लोगों द्वारा उन्हें औपनिवेशिक अमेरिका लाया गया। पश्चिमी गाजर आमतौर पर नारंगी रंग की होती हैं और सत्रहवीं शताब्दी में नीदरलैंड में इसकी खेती शुरू हुई। गाजर को बीज से परिपक्व होने में तीन से चार महीने लगते हैं और इसमें कैरोटीन, विटामिन के और विटामिन बी6 की उच्च मात्रा होती है। इन्हें कई तरीकों से खाया जा सकता हैः कच्चा (1980 के दशक में बेबी गाजर का विपणन किया जाने लगा), सलाद में, कटा हुआ और उबला हुआ, तला हुआ, भाप में पकाया हुआ, सूप और स्टू में और शोरबा में। इन्हें चिप्स, फ्लेक्स और पाउडर में बनाया जा सकता है; केक, पुडिंग, जैम और प्रिजर्व बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है;और जूस में बनाया जा सकता है। इन्हें शिशु और पालतू जानवरों के भोजन में भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय गाजर दिवस के इतिहास व महत्व की करें तो, अंतर्राष्ट्रीय गाजर दिवस का इतिहास- गाजर का वानस्पतिक नाम डाकस कैरोटा है। जानकारों का मानना है कि एशिया के लोगों ने सबसे पहले गाजर की खेती की शुरुआत की और वहीं से ये विश्व के अन्य देशों में पहुंची। गाजर चार अलग-अलग रंगों लाल, पीली, संतरी और काली रंग की पाई जाती है। साल 2003 में अंतर्राष्ट्रीय गाजर दिवस की स्थापित की गई। जिसके बाद साल 2012 तक यह दुनिया भर में उन सभी जगहों पर फैल गया है, जहां गाजर के बारे में लोग जानते थे। बता दें, सबसे पहले गाजर दिवस को मनाने की शुरुआत फ्रांस और स्वीडन से हुई। इसके बाद भारत, जापान, रूस इटली समेत दुनिया के कई देशों में विश्व गाजर दिवस मनाया जाने लगा। गाजर दिवस को मनाने का मकसद देश के लोगों के बीच गाजर जैसे पौष्टिक आहारों के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ाने का था।अंतर्राष्ट्रीय गाजर दिवस को मनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप पोषक तत्वों से भरपूर इस सब्जी का ज्यादा से ज्यादा सेवन करें। गाजर की खासियत यह है कि आप इसका इसका उपयोग ज्यादातर सब्जियों को बनाते समय कर सकते हैं। बात चाहे लंच में बनने वाली मिक्स वेज की हो या फिर डिनर के बाद सर्व किए जाने वाले हलवे की, गाजर का सेवन किसी भी रूप में किया जा सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अंतर्राष्ट्रीय गाज़र दिवस 4 अप्रैल 2025 - गाजर खाओ स्वस्थ बनाओ - कुदरत के कायदे, गाज़र के फायदे।गाज़र दिवस मनाने का मकसद पौष्टिक अहारों के प्रति लोगों में जनजागरण बढ़ाना है। वर्तमान जंक व चाइनीस फूड वाले युग में पोषक तत्वों से भरपूर नेचुरल व इम्युनिटी बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ व फलों का सेवन ज़रूरी है।

फ्रॉन्क्स के सीएनजी वेरिएंट को ले आएं घर, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद जाएगी कितनी EMI

मारुति की ओर से Fronx को SUV के तौर पर ऑफर किया जाता है। यह पेट्रोल के साथ ही सीएनजी विकल्प के साथ आती है। इसके CNG वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से एसयूवी सेगमेंट में Maruti Fronx की बिक्री की जाती है। इस एसयूवी को पेट्रोल के साथ ही CNG विकल्प में भी लाया जाता है। Maruti Fronx के सीएनजी वर्जन को खरीदने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट करने के बाद सात सालों के लिए हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

मारुति सुजुकी की ओर से फ्रॉन्क्स के सीएनजी वर्जन को भी बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। इस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.47 लाख रुपये है। अगर इस एसयूवी को दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 59 हजार रुपये के रजिस्ट्रेशन के साथ ही करीब 44 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। जिसके बाद इसकी ऑन रोड कीमत 9.50 लाख रुपये हो जाती है।

अगर Maruti Fronx के CNG वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 7.50 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 7.50 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 12070 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 7.50 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 12070 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Maruti Fronx के CNG वेरिएंट के लिए करीब 2.63 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 12.13 लाख रुपये हो जाएगी।

Maruti Suzuki की ओर से Fronx को एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Venue, Kia Sonet, Tata Nexon के साथ होता है। इनके अलावा मारुति फ्रॉन्क्स एसयूवी को Renault Kiger और Nissan Magnite जैसी एसयूवी से भी कड़ी चुनौती मिलती है।

केटीएम ने भारत में बंद की इन 2 बाइक की बिक्री, जनवरी में मिले सिर्फ 17 ग्राहक

परिवहन विशेष न्यूज

KTM Duke 125 और RC 125 की बिक्री को भारतीय बाजार में बंद कर दिया गया है। जनवरी 2025 में KTM Duke 125 की केवल 17 यूनिट्स की ही बिक्री हुई थी। यह दोनों ही भारतीय बाजार में KTM की सबसे सस्ती मोटरसाइकिल थी। कंपनी ने इनकी बिक्री लगातार कम होने पर भारत में बंद कर दिया है। साथ ही भारत की वेबसाइट से भी हटा दिया है।

नई दिल्ली। केटीएम अपनी दो मोटरसाइकिल को भारत में बंद कर दी है। इसके साथ ही कंपनी ने इन दोनें मोटरसाइकिल को अपनी इंडिया वेबसाइट से हटा भी दिया है, जिससे साफ हो जाता है कि कंपनी ने KTM Duke 125 और KTM RC 125 को अब बंद कर दिया है। इसे बंद करने के पीछे का कारण इनकी खराब बिक्री है।

KTM Duke 125 और RC 125 की बंदी के कारण

KTM Duke 125 और RC 125 इन को राइडर्स के लिए अच्छा ऑप्शन मानी जाती थी। इनका डिजाइन और परफॉर्मेंस शुरुआती सवारों के लिए आकर्षक था, लेकिन इसकी ज्यादा कीमत की वजह से इन्हें भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। KTM Duke 125 की दिल्ली में एक्स-शोरूम कीमत 1,81,030 रुपये थी, जो yamaha MT-15 से करीब 12,000 रुपये महंगी थी। इतना ही नहीं Yamaha MT-15 में ज्यादा पावर बेहतर परफॉर्मेंस भी मिलता है।

इसी तरह, KTM RC 125 की दिल्ली में एक्स-शोरूम कीमत 1,91,795 रुपये थी, जिसका मुकाबला Yamaha R15 V4 से था। इससे यह 3,000 ज्यादा महंगी थी।

इसके अलावा, दोनों मोटरसाइकिल का परफॉर्मेंस काफी सीमित था, जिसकी वजह से राइडर्स इससे जल्दी ऊब जाते थे। इनका इंजन उतना अच्छा परफॉर्मेंस नहीं देता था, जितना राइड़र्स को उम्मीद रहती थी। इसकी वजह से दोनों मोटरसाइकिल की बिक्री में गिरावट और इन्हें भारतीय बाजार से हटाना पड़ा।

जनवरी 2025 में KTM Duke 125 की केवल 17 यूनिट्स की ही बिक्री हुई, जो इसकी भारतीय बाजार में स्थिति को बताता है।

क्या KTM लाएगी नया ऑप्शन?

भले ही कंपनी इन दोनों मोटरसाइकिल को भारतीय बाजार से हटा रही है, लेकिन ऐसा लगता है कि नए ऑप्शन के रूप में KTM Duke 160 और KTM RC 160 को लॉन्च करने की प्लानिंग कर रही है। इन दोनों को ही हाल में भारत की सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है।

KTM की नई बाइक कब होगी लॉन्च?

नई KTM Duke 160 और RC 160 को भारतीय बाजार में 2025 के मध्य तक लॉन्च किया जा सकता है। इनकी एक्स-शोरूम कीमत 1.80 लाख से लेकर 1.90 लाख के बीच होने की उम्मीद है। यह दोनों ही भारतीय बाजार में नए इंजन और बेहतर प्रदर्शन के साथ अपनी अलग जगह बना सकती है।

मारुति सुजुकी ने फिर बनाया नया रिकॉर्ड! वैगन आर बनी भारत की सबसे ज्यादा पसंदीदा कार

मारुति सुजुकी ने वित्तीय वर्ष 2024-25 को काफी बेहतरीन तरीके से समाप्त किया है। कंपनी ने इस कुल 2234266 गाड़ियों की बिक्री की है। मारुति की WagonR ने बिक्री के मामले में सभी को पीछे छोड़ते हुए चौथी बार सबसे ज्यादा बिकने वाली कार का खिताब अपने नाम किया है। इस साल WagonR की 198451 यूनिट्स की बिक्री हुई है।

नई दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी Maruti Suzuki ने वित्तीय वर्ष 2024-25 को एक शानदार रिकॉर्ड के साथ खत्म किया है। कंपनी ने अपनी अब तक की सबसे ज्यादा बिक्री दर्ज की है, जिसमें कुल 22,34,266 गाड़ियां शामिल है। वहीं, पिछले वित्तीय वर्ष 2023-24 में Maruti ने 21,35,323 गाड़ियों की बिक्री की थी। इस बिक्री के साथ कंपनी की पॉपुलर हैचबैक WagonR लगातार चौथी बार यानी 2022 से लेकर अब तक भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार का खिताब अपने नाम किया है।

Tata Punch को पछाड़ा

WagonR ने इस बार टाटा पंच को पीछे छोड़कर बिक्री के मामले में पहला स्थान हासिल किया है। हालांकि, टाटा पंच कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा बिकने वाली SUV रही, लेकिन वित्तीय वर्ष के आंकड़ों में WagonR आगे निकल गई।

WagonR की कितनी रही बिक्री

मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड (MSIL) ने वित्तीय वर्ष 24-25 में WagonR को भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार को रूप में घोषित किया है। इस साल WagonR की 1,98,451 यूनिट्स की बिक्री हुई है। Maruti Suzuki WagonR ने 33.7 लाख ग्राहकों के साथ लगातार चौथे साल भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार का खिताब अपने नाम बरकरार रखा है।

मारुति सुजुकी का हाल

मारुति सुजुकी ने न सिर्फ अपनी सबसे ज्यादा सालाना बिक्री का रिकॉर्ड बनाया, बल्कि घरेलू और निर्यात बाजार में भी सबसे आगे रही है। कंपनी ने घरेलू बाजार में 17,95,259 यूनिट्स और निर्यात में 3,32,585 यूनिट्स की बिक्री की। वहीं, इसके महीने-दर-महीने की बिक्री में गिरावट देखने के लिए मिली है। मार्च 2025 में घरेलू बिक्री 1,60,016 यूनिट्स रही, जो मार्च 2024 के 1,61,304 यूनिट्स थी।

बिक्री में बढ़ोतरी की संभावना

ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री के विश्लेषकों और निर्माताओं का वित्तीय वर्ष 2025-26 में गाड़ियों की बिक्री को लेकर अनुमान है कि इसमें 1-2% की मामूली वृद्धि हो सकती है। इसी बात को दोहराते हुए मारुति सुजुकी के मार्केटिंग एंड सेल्स के सीनियर एग्जीक्यूटिव ऑफिसर पार्थो बनर्जी ने कहा कि हम भी इसी तरह की वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 में 1-2% की बढ़ोतरी की संभावना है।

कीमतों में बढ़ोतरी की घोषणा

मार्च 2025 के खत्म होने से पहले ही मारुति सुजुकी अपनी सभी कारों की कीमतों में बढ़ोतरी की घोषणा की है, लेकिन कंपनी अभी तक इसकी सटीक तारीख की घोषणा नहीं की है। कंपनी अपनी गाड़ियों की कीमत में 4 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी करने वाली है, जो कार के मॉडल के आधार पर अलग-अलग हो सकता है।

हादसे के वक्त ड्राइवर चला रहा था करोड़ों की लैम्बॉघिर्नी

तेज स्पीड में कार चलाना खुद के साथ ही अन्य लोगों की सुरक्षा के लिए खतरा बढ़ाता है। स्पीड के कारण हाल में ही उत्तर प्रदेश के नोएडा में हादसा हुआ है। इस हादसे में ड्राइवर Lamborghini Huracan को चला रहा था। इस गाड़ी की टॉप स्पीड कितनी है किस कीमत पर इसे भारत में ऑफर किया जाता है। आइए जानते हैं।

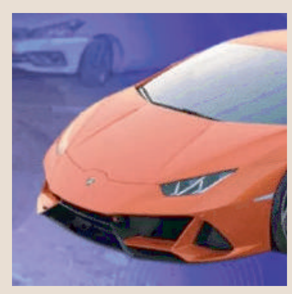

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के नोएडा में हाल में ही एक हादसा हुआ है, जिसकी वीडियो सोशल मीडिया पर काफी तेजी से वायरल हुई। इस वीडियो में किस कंपनी की किस सुपर कार का उपयोग किया गया था। यह सुपर कार किस कीमत पर भारत में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाई जाती है। इसमें कैसे फीचर्स मिलते हैं और इसकी टॉप स्पीड क्या है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

नोएडा हादसे का वीडियो हुआ वायरल

यूपी के नोएडा में मार्च 2025 के आखिर में हुए एक हादसे का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो में जिस कार से हादसा (Lamborghini Huracan accident) हुआ है वह एक सुपर कार है और ऐसी कारें अपनी स्पीड के साथ ही अपनी कीमत के लिए भी जानी जाती हैं।

कौन सी है कार

हादसे में जिस कार को दिखाया जा रहा है वह Lamborghini Huracan है। यह सुपर कार दुनियाभर में अपने ताकतवर इंजन, स्टाइल और कीमत के लिए जानी जाती है।

कितना दमदार इंजन

Lamoborghini Huracan में 5.2 लीटर की क्षमता के V10 इंजन को दिया जाता है। इस इंजन से कार को 621 बीएचपी की पावर और 565 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। साथ ही 7स्पीड डीसीटी गियरबॉक्स के साथ इसके चारों पहियों में पावर दी जाती है। इतनी पावर के साथ इस कार को 300 किलोमीटर के आस-पास तक की टॉप स्पीड तक चलाया जा सकता है। यह कार 0-100 किलोमीटर की स्पीड को सिर्फ तीन सेकेंड में हासिल करती है और 200 किलोमीटर की स्पीड तक पहुंचने में इसे सिर्फ नौ सेकेंड का समय लगता है।

कैसे है खासियत

Lamborghini Huracan को एक स्पोर्ट्स सुपर कार के तौर पर जाना जाता है। इसलिए इसका डिजाइन भी एयरोडाइनैमिक रखा जाता है। इसके अलावा इसमें एलईडी डीआरएल और हेडलाइट्स के साथ 21 इंच अलॉय व्हील्स, फ्रेमलेस दरवाजे, ड्राइविंग के लिए STO, Trofeo और Pioggia जैसे मोड्स दिए जाते हैं। कार का वजन कम रखने के लिए इसमें कार्बन फाइबर का भी उपयोग किया जाता है। इसके अलावा इस कार को अपनी पसंद के मुताबिक कस्टमाइज भी करवाया जा सकता है।

कितनी है कीमत

Lamborghini Huracan को भारत में तीन करोड़ रुपये से शुरू होकर करीब पांच करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत तक जाती है। कार को अपनी पसंद से कस्टमाइज करवाने के साथ ही यह कीमत ज्यादा भी हो सकती है।

निसान मैग्नाइट पर तगड़ा डिस्काउंट, गाड़ी के साथ मिलेगा सोने का सिक्का

निसान मैग्नाइट पर बंपर डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। कंपनी इसके कुछ वेरिएंट पर ही यह ऑफर दे रही है। यह डिस्काउंट ऑफर 15 अप्रैल या स्टॉक रहने तक मिलने वाला है। इस ऑफर के तहत कार खरीदने पर ग्राहक को एक सोने का सिक्का भी मिलेगा। Nissan Magnite को अक्टूबर 2024 में लॉन्च किया गया था जिसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लेकर आया गया है।

नई दिल्ली। निसान ने हाल ही में अपनी पॉपुलर कॉम्पैक्ट SUV, Nissan Magnite को नए फीचर्स के साथ अक्टूबर 2024 लॉन्च किया है। Magnite की डिलीवरी शुरू होने से पहले ही इसकी बुकिंग की संख्या 10,000 यूनिट के पार पहुंच गई थी। वहीं, अब कंपनी इस पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। Nissan Magnite पर तीन आकर्षक छूट के साथ ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं कि Nissan Magnite पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है और यह किन बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 5.99 लाख रुपये से शुरू होती है।

Nissan Magnite पर डिस्काउंट ऑफर

इसपर तीन बेहतरीन छूट दी जा रही है, जो निम्नलिखित है-

कैश डिस्काउंट- निसान मैग्नाइट पर 55,000 रुपये तक के कैश बेनिफिट दिया जा रहा है।

कार्निवल ऑफर- कार्निवल बेनिफिट्स के रूप में 10,000 रुपये तक का एक्स्ट्रा ऑफर मिल रहा है।

सोने का सिक्का- इस डिस्काउंट ऑफर के तहत निसान मैग्नाइट खरीदने पर ग्राहक को एक सोने का सिक्का दे रही है।

हालांकि, Nissan Magnite पर कार्निवल बेनिफिट्स केवल कुछ चुनिंदा वेरिएंट्स पर मिल रहा है। यह ऑफर 15 अप्रैल या स्टॉक रहने तक दिया जा रहा है। खरीदारी से पहले ग्राहक अपने नजदीकी डीलरशिप से ऑफर के बारे में पूरी जानकारी जरूर लें।

Nissan Magnite का एक्सटीरियर

नई निसान मैग्नाइट में नया फेस और क्रोम इंसर्ट दिया गया है। इसमें नए अलॉय व्हील्स, पीछे की तरफ टेल लैंप्स और कार को नया लुक देने के लिए इसके एलिमेंट्स में बदलाव किया गया है।

Nissan Magnite का इंटीरियर

इसमें 360-डिग्री कैमरा, वायरलेस फोन मिररिंग, ड्राइवर सीट के लिए ऊंचाई समायोजन, पावर्ड मिरर, HEPA एयर फ़िल्टर, LED हेडलाइट्स और LED DRLs जैसे प्रीमियम फीचर्स दिए गए हैं। इसमें I-Key का फीचर मिलता है, जिससे आप 60 मीटर की दूरी से ही कार का इंजन स्टार्ट कर सकते हैं। इसके अलावा, ऑटो एलईडी लैंप, ऑटो डिम फ्रेमलेस IVRM, कूल्ड ग्लोव बॉक्स, फ्रंट आर्मरेस्ट, 336-540 लीटर बूट स्पेस और 19+ यूटिलिटी स्टोरेज जैसे फीचर्स मिलते हैं।

Nissan Magnite के सेफ्टी फीचर्स

इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए VDC, ESC, TPMS, EBS के साथ ABS, ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम, हिल स्टार्ट असिस्ट, हाइड्रोलिक ब्रेक असिस्ट, रेनफोर्ड बॉडी स्ट्रक्चर, डोर प्रेशर सेंसर, ग्रेविटेशनल सेंसर, 6 एयरबैग्स, सीट बेल्ट रिमाइंडर और ISO FIX चाइल्ड सीट एंकरिज, हाई स्पीड अलर्ट सिस्टम और ESS (इमरजेंसी स्टॉप सिग्नल) जैसे एडवांस सेफ्टी फीचर्स दिए गए हैं।

भारत का मध्यम वर्ग अंतरराष्ट्रीय स्कूलों में अपने बच्चों को क्यों दाखिल करना चाहता है

विजय गर्ग

मुंबई, बेंगलुरु जैसे भारत के अमीर शहरों में होने के अलावा, स्कूल अब सांगली में हाटकनागले, दावणगेरे में थोलाहुंसे और बैतूल में सोनाघाटी जैसी जगहों पर पहुंच रहे हैं। हर साल, कैम्ब्रिज 100 स्कूलों को जोड़ रहा है, और आईबी के 30 से 40 नए स्कूल हर साल आ रहे हैं। मध्यम वर्ग की आकांक्षा सर्वकालिक उच्च स्तर पर है।

भारत में अब विश्व स्तर पर अंतरराष्ट्रीय स्कूलों की दूसरी सबसे बड़ी संख्या है।

अंतर्राष्ट्रीय स्कूली शिक्षा में वृद्धि मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं, बढ़ी हुई आय और वैश्विक कैरियर के अवसरों की इच्छा से प्रेरित है। ये स्कूल व्यक्तिगत सीखने और जांच-आधारित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के छात्रों को आकर्षित करते हैं।

मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं में वृद्धि के साथ, भारतीय माता-पिता अपने बच्चों के लिए अंतरराष्ट्रीय बोर्ड स्कूलों की ओर अपना ध्यान बढ़ा रहे हैं, देश दुनिया भर में अंतरराष्ट्रीय स्कूलों की दूसरी सबसे बड़ी संख्या की मेजबानी कर रहा है - न केवल एक टैग के साथ नाम पर, बल्कि संबद्धता में वैश्विक शिक्षा बोर्डों के साथ,

मुंबई, बेंगलुरु जैसे भारत के अमीर शहरों में होने के अलावा, स्कूल अब सांगली में हाटकनागले, दावणगेरे में थोलाहुंसे और बैतूल में सोनाघाटी जैसी जगहों पर पहुंच रहे हैं। ₹हर साल, कैम्ब्रिज 100 स्कूलों को जोड़ रहा है, और आईबी के 30 से 40 नए स्कूल हर साल आ रहे हैं। मध्यम वर्ग की आकांक्षा सर्वकालिक उच्च स्तर पर है। घटना मेट्रो शहरों तक सीमित नहीं है, लेकिन टियर 2 और 3 शहरों में है, जहां अब बड़ी वृद्धि आ रही है

'क्या एक अभिभावक सीबीएसई स्कूल के लिए साल में चार लाख का भुगतान करेगा? नहीं' शिक्षाविद गर्ग इस बदलाव पर प्रकाश डालते हैं, जिसमें कहा गया है कि एक अंतरराष्ट्रीय स्कूल खोलना एक रणनीतिक कदम है। संबद्धता प्रक्रिया चिकनी है, ब्रांडिंग अधिक आकांक्षात्मक है, और काफी अधिक ट्यूशन फीस थोड़ा प्रतिरोध का सामना करती है। ₹क्या एक अभिभावक सीबीएसई स्कूल के लिए साल में चार लाख का भुगतान करेगा? नहीं, ₹₹ लेकिन इसे अंतरराष्ट्रीय टैग दें, और कोई भी पलक नहीं झपकते।"

यह केवल पाठ्यक्रम के बारे में नहीं है - यह प्रकाशिकी के बारे में भी है। ₹एक ऐसी दुनिया में जहां शिक्षण संस्थान रियल एस्टेट निवेश भी हैं, अंतर्राष्ट्रीय स्कूल निजी मालिकों के भूमि-निर्माण मॉडल के साथ बड़े करीने से संरेखित करते हैं। वे स्कूलों से अधिक हैं; वे स्थिति के संकेत हैं, ध्यान से महत्वाकांक्षा और आकांक्षा की अपील करने के लिए बनाया गया है, "

मध्यम वर्ग अपने बच्चों को इन स्कूलों में क्यों भेज रहा है? सदी के मोड़ पर, भारत के पास आईबी कार्यक्रम की पेशकश करने वाले केवल आठ स्कूल थे, और कैम्ब्रिज (आईजीसीई) स्कूलों की उपस्थिति इतनी कम थी कि 2000 में कोई रिकॉर्ड मौजूद नहीं था। 2011-12 तक, कैम्ब्रिज इंटरनेशनल और इंटरनेशनल बैकलाउरेट क्रमशः 197 और 99 स्कूलों में विस्तारित हुए थे।

आईएससी रिसर्च के ताजा आंकड़ों के अनुसार,

भारत में 2019 में 884 अंतरराष्ट्रीय स्कूल थे, जो जनवरी 2025 तक बढ़कर 972 हो गए हैं, जिसमें पांच वर्षों में 10% की वृद्धि हुई है। इसकी तुलना में अंतरराष्ट्रीय स्कूलों की वैश्विक गिनती 8% बढ़कर 14,833 हो गई। महाराष्ट्र 210 आईबी और आईजीसीएसई-संरेखित स्कूलों के साथ आगे बढ़ता है, इसके बाद कर्नाटक, जबकि तमिलनाडु और तेलंगाना तेजी से पकड़ रहे हैं।

"अधिक भारतीय परिवार, प्रवासी और एनआरआई अंतरराष्ट्रीय स्कूलों का चयन कर रहे हैं, यही वजह है कि मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद और दिल्ली जैसे शहर अंतरराष्ट्रीय स्कूल श्रृंखलाओं से अधिक निवेश देख रहे हैं। माता-पिता के पास अब अधिक आय है, और वे वैश्विक करिकुलम को अपने बच्चों के करियर के भविष्य के प्रमाण के रूप में देखते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे पश्चिमी विश्वविद्यालयों से मेल खाने वाले सिस्टम में अध्ययन करें और वैश्विक अवसरों के लिए खुले दरवाजे, "आईएससी रिसर्च फील्ड रिसर्च मैनेजर, भारत

गर्ग ने कहा, "वैश्विक एक्सपोजर और बढ़ती आय दो कारणों से कम है कि भारतीय अंतरराष्ट्रीय बोर्डों का चयन क्यों कर रहे हैं

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

विज्ञान पत्रिका छात्रों के लिए

विजय गर्ग

विज्ञान पत्रिकाएं छात्रों की शिक्षा और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहां कुछ कारण दिए गए हैं कि विज्ञान पत्रिकाएं छात्रों के लिए महत्वपूर्ण क्यों हैं:

1.। वैज्ञानिक ज्ञान को व्यापक बनानाः विज्ञान पत्रिकाएं छात्रों को नवीनतम खोजों और अनुसंधान सहित विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर लेख प्रदान करती हैं। वे छात्रों को जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान से लेकर खगोल विज्ञान और भौतिकी तक, वैज्ञानिक क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला की अपनी समझ का विस्तार करने में मदद करते हैं।

2.। वर्तमान और विश्वसनीय जानकारीः विज्ञान पत्रिकाओं में सम्मानित स्रोतों से अद्यतित जानकारी होती है। विज्ञान में नवीनतम प्रगति और सफलताओं के बारे में सूचित रहने के लिए छात्र इन पत्रिकाओं पर भरोसा कर सकते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक ज्ञान के लिए यह जोखिम छात्रों के लिए एक मजबूत नींव बनाने और उनकी पढ़ाई में प्रासंगिक बने रहने के लिए आवश्यक है।

3। महत्वपूर्ण सोच कौशल को बढ़ानाः विज्ञान पत्रिकाएं अक्सर स्पष्टीकरण और विश्लेषण के साथ वैज्ञानिक निष्कर्षों और सिद्धांतों को प्रस्तुत करती हैं। यह छात्रों को साक्ष्य का मूल्यांकन, निष्कर्ष निकालने और वैज्ञानिक दावों पर सवाल उठाकर अपने महत्वपूर्ण सोच कौशल को विकसित करने में मदद करता है। ये कौशल वैज्ञानिक पद्धति में महत्वपूर्ण हैं और इन्हें विभिन्न शैक्षणिक विषयों में लागू किया जा सकता है।

4। विज्ञान में जिज्ञासा और रुचि को प्रोत्साहित करनाः विज्ञान पत्रिकाएं छात्रों को विज्ञान के चमत्कारों का पता लगाने के लिए प्रेरित करती हैं। जीवंत चित्र, चित्र और इंटरैक्टिव तत्वों सहित आकर्षक सामग्री, उनकी कल्पना को पकड़ती है और जिज्ञासा बिखेरती है। छात्रों को प्रश्न पूछने, आगे शोध करने और वैज्ञानिक अवधारणाओं की गहरी समझ को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

5.। कैरियर के अवसरों के संपर्क में: विज्ञान पत्रिकाओं में अक्सर विभिन्न वैज्ञानिक व्यवसायों के बारे में वैज्ञानिकों, साक्षात्कारों और लेखों के प्रोफाइल होते हैं। यह एक्सपोजर छात्रों को विज्ञान में विभिन्न कैरियर रास्तों के बारे में जानने में मदद करता है और भविष्य के संभावित अवसरों के बारे में उनकी जागरूकता को व्यापक बनाता है। यह उन्हें विज्ञान से संबंधित करियर को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित और प्रेरित कर सकता है।

6। कक्षा सीखने की पूरकः विज्ञान पत्रिकाएं कक्षाओं में सिखाई गई जानकारी को पूरक करती हैं। वे अतिरिक्त संसाधन और स्पष्टीकरण प्रदान करते हैं जो कक्षा के पाठों को सुदृढ़ कर सकते हैं या नए विषयों को पेश कर सकते हैं। विज्ञान पत्रिकाओं को अपनी पढ़ाई में शामिल करके, छात्र अपनी समझ को गहरा कर सकते हैं और वैज्ञानिक अवधारणाओं पर नए दृष्टिकोण खोज सकते हैं।

7.। वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ावा देनाः विज्ञान पत्रिकाएं छात्रों के बीच वैज्ञानिक साक्षरता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे छात्रों की वैज्ञानिक जानकारी को पढ़ने, समझने और व्याख्या करने की क्षमता में सुधार करने में मदद करते हैं। यह साक्षरता आवश्यक है क्योंकि यह छात्रों को अपने आसपास की दुनिया को बेहतर ढंग से समझने, सूचित निर्णय लेने और वैज्ञानिक प्रवचन में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम बनाता है।

कुल मिलाकर, विज्ञान पत्रिकाएं छात्रों के लिए अपने वैज्ञानिक ज्ञान को बढ़ाने, जिज्ञासा को बढ़ावा देने, महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करने और भविष्य के कैरियर विकल्पों का पता लगाने के लिए मूल्यवान उपकरण हैं। वे विज्ञान की लगातार विकसित दुनिया में एक खिड़की प्रदान करते हैं और सीखने के लिए एक आजीवन जुनून को प्रेरित करते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक

बचपन का आकर्षण : विजय गर्ग

अतीत हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। बचपन की स्मृतियों की ओर बार- बार मुड़ जाना हमें अच्छा लगता है। छूट गई चीजों से मोह उमड़ना इंसानी फितरत है। जब बचपन का घर, गांव, शहर, देश छूट जाता है तो व्यक्ति जीवन में एक बार उस शहर, देश गांव में जरूर लौटना चाहता है। इसी तरह बचपन के खेल-खिलौनों को देखकर उसके भीतर का बच्चा कुलबुला उठता है। तितलियों के पीछे भागना, पानी में छपाक-छपाक कूदना, गुड़िया - गुड्डों से खेलना जैसी बातों की स्मृति उसे आनंद से भर देती है। बचपन के इस आकर्षण को बढ़ा में जीने के लिए दुनिया में एक नया चलन चला है, जिसे 'किडल्टिंग' नाम दिया गया है। इसके जरिए दुनिया भर में कई युवा, अधेड़ और बुजुर्ग महिलाएं, पुरुष वह सब कर रहे है जो बचपन में करना उन्हें पसंद था, या जवानी में समय के अभाव के कारण वे कर नहीं पाए। 'किडल्टिंग' शब्द दो शब्दों के मेल से बना हुआ है- 'किड' और 'एडल्ट'। यानी बचपन और वयस्क की संधि।

मनोवैज्ञानिक कार्ला मैरी मैनली के अनुसार, 'व्यावहारिक रूप से देखें तो यह बचपन की जानी- पहचानी, अच्छी लगने वाली गतिविधियों की ओर एक स्वाभाविक, सरल वापसी है।' मतलब बचपन में जिस लुका-छिपी के खेल को खेलकर हम रोमांच से भर उठते थे, उसी रोमांच को फिर से बुढ़ापे में खेलकर यह महसूस करने की कोशिश है। 'किडल्ट' शब्द का इस्तेमाल पिछले कुछ वर्षों से हो रहा है, लेकिन इस चलन की लोकप्रियता में वास्तविक उछाल कोविड महामारी के शुरुआती महीनों में आया, जब सब अपने-अपने घरों में बंद पड़े भय और अवसाद से जूझ रहे थे। इस भय और निराशा को कम करने के लिए कुछ लोगों ने नए शौक पाले तो कुछ अपने पुराने बिछड़े शौक की ओर लौट आए। जब महामारी का भय कम हुआ, तब भी वयस्कों ने ऐसी गतिविधियां जारी रखीं।

मतलब बचपन के शौक से जीवन में आए उत्साह को बनाए रखा। जब हम अपना मनपसंद काम करते हैं तो जीवन की चिंताओं से बेफिक्र हो जीते हैं। जो नहीं हुआ है, उसकी चिंता करना और जो हो गया है, उसकी भी चिंता करना हमारा स्वभाव होता है। इन चिंताओं के चलते हम जीवन के उल्लास से लगभग महरूम हो जा रहे हैं। 'किडल्टिंग' जिंदगी के भागमभाग में फंसे, अकेले रह गए या अवसाद से जूझ रहे लोगों को बहुत पसंद आ रहा है। इस संदर्भ में 'जाय फ्राम फियर' की लेखक कार्ला मेरी मैनली का कहना है, 'पसंदीदा गतिविधियां करना अक्सर तनाव दूर करने के लिए एकदम सही विकल्प होता है।' बड़ी कंपनियां भी ऐसी गतिविधियों के चलन को बढ़ावा देने में तेजी से जुट गई हैं। लंदन और मैड्रिड में एक संवाद संग्रहालय 'डोपामाइन लैंड' अपने 'अंदर के बच्चे' को जगाने के लिए बचपन और वयस्क अवस्था के संधिकाल की गतिविधियां करवाता है। एम्स्टर्डम में हर उम्र के लोगों के लिए बना संवाद संग्रहालय साहसी लोगों को गुलाबी मार्शमैलो के समुद्र गोता लगाने और दीवारों पर अगड़म - बगड़म कुछ भी लिखने या चित्र बनाने की सुविधा देता है। यूनाइटेड किंगडम के तीन शहरों में वयस्कों के लिए एक विशाल बाल पिट जहां हर महीने हजारों लोग मजे लेने के लिए आते हैं। दिन भर मोबाइल और कंप्यूटर स्क्रीन से ऊबे हुए कामकाजी लोग इससे दूरी बनाने के दिलचस्प बहाने खोजने लगे हैं। बचपन की दुनिया में वापसी उन्हें पसंद आ रही है, क्योंकि इसमें वे उस बीते समय को जीते हैं, जब अधिकतर लोगों के पास मोबाइल और कंप्यूटर नहीं था।

आखिर कुछ तो कारण होगा कि अपनी वर्तमान जिंदगी में तमाम सुविधाओं के बीच रहने वाले लोग भी अब ऐसी परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, जिसमें वे जीवन की संवेदनाओं का अहसास नहीं कर पाते! जो इसकी वजहें ढूंढ़ पाने और उसके समाधान की ओर साहस के साथ देखने की कोशिश करते हैं, वे अपने बचपन की दुनिया में मौजूद जीवन - तत्त्व में इसका हल खोजते हैं। अमेरिकी समाचार वेबसाइट 'हफपोस्ट' के अनुसार, पुरानी यादों को ताजा करने वाली गतिविधियों में शामिल होने से मन की सेहत सुधरती है। 'इमोशन' पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन की 'मानें तो पुरानी यादें आत्म - निरंतरता को प्रोत्साहित करती हैं, यानी अतीत और वर्तमान के बीच भावनात्मक संबंध को बनाए रखती हैं। जानकारों का कहना है कि 'किडल्टिंग' हमें कुछ पलों या घंटों के लिए ही सही, बचपन के उन सरल दिनों में लौटने का अवसर देता है, जो हमें खुशी देते थे। एक खबर यह भी आई थी कि लंदन स्थित 'डोपामाइन लैंड' जैसी जगहें खुश करने वाले हारमोन डोपामाइन को भी सक्रिय कर रही हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कुछ समय पहले कहा था कि कोविड महामारी में वैश्विक स्तर पर चिंता और अवसाद के' मामलों में पच्चीस फीसद की बढ़ोतरी हुई है। इसलिए लोगों को खुश रहने के विकल्प तलाशने चाहिए। कई मनोवैज्ञानिक वयस्कों को चिंतित या तनावग्रस्त होने पर आपस में खेल खेलने, चित्रकारी करने, मिट्टी से मूर्तियां बनाने आदि का सुझाव देते हैं। शुरुआत में यह चिंताओं या जिम्मेदारियों के बोझ से बचने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन समय बीतने पर ये गतिविधियां हमें विस्मय की भावनाओं से भरने लगती हैं, क्योंकि शौक पूरा करते हुए साधारण चीजों को भी हम नए नजरिए से देखने लगते हैं, जिसमें जिज्ञासा, आनंद और कल्पना हो। ऐसी गतिविधियों से हमारे व्यवहार में सहजता बढ़ती है। हमारे अंदर अच्छा महसूस कराने वाले हारमोन होते हैं। यहां तक कि हमारी सोच और समझ व्यवस्थित होती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानीः इस में बुरा क्या है

विजय गर्ग

एक जवान लड़की का खूबसूरत होना उस के लिए इतना घातक भी हो सकता है... और अगर वह दलित हो, तो कोढ़ में खाज जैसी हालत हो जाती है. आज बेला इस बात को शिद्दत से महसूस कर रही थी.

एक जवान लड़की का खूबसूरत होना उस के लिए इतना घातक भी हो सकता है और अगर वह दलित हो, तो कोढ़ में खाज जैसी हालत हो जाती है. आज बेला इस बात को शिद्दत से महसूस कर रही थी. बौस के चैंबर से निकलतेनिकलते उस की आंखें भर गई थीं.

भरी आंखों को स्टाफ से चुराती बेला सीधे वाशरूम में गई और फूटफूट कर रोने लगी. जीभर कर रो लेने के बाद वह अपनेआप को काफी हलका महसूस कर रही थी. उस ने अपने चेहरे को धोया और एक नकली मुसकान अपने होंठों पर चिपका कर अपनी सीट पर बैठ गई.

बेला टेबल पर रखी फाइलें उलटनेपलटने लगी, फिर उकता कर कंप्यूटर चालू कर ईमेल चैक करने लगी, मगर दिमाग था कि किसी एक जगह ठहरने का नाम ही नहीं ले रहा था. रहरह कर बौस के साथ कुछ देर पहले हुई बातचीत पर जा कर रुक रहा था.

तभी बेला का मोबाइल फोन बज उठा. देखा तो रमेश का मैसेज था. लिखा था, 'क्या सोचा है तुम ने आज रात के लिए?'

बेला तिलमिला उठी. सोचा, 'हिम्मत कैसे हुई इस की मुझे इस तरह का वाहियात प्रस्ताव देने की कैसी नीच सोच है इस की रसोईघर और पूजाघर में घुसने पर दलित होना आड़े आ जाता है, मगर बिस्तर पर ऐसा कोई नियम लागू नहीं होता'

मगर यह कोई नई बात तो है नहीं यह तो सदियों से होता आया है और बेला के साथ भी बचपन से ही बिस्तर पर आतेआते मर्दऔरत में सिर्फ एक ही रिश्ता बचता है और वह है देह का

बेला अपनेआप से तर्क करते हुए तकरीबन 6 महीने पहले के उस रविवार पर पहुंच गई, जब वह अपने बौस रमेश के घर उन की पत्नी को देखने गई थी.

बौस की 3 महीने से पेट से हुई पत्नी सीमा सीढ़ियों से नीचे गिर गई थी और खून बहने लगा था. तुरंत डाक्टरी मदद मिलने से बच्चे को कोई नुकसान नहीं हुआ था, मगर डाक्टर ने सीमा को बिस्तर पर ही आराम करने की सलाह दी थी, इसीलिए बेला उस दिन सीमा से मिलने उन के घर चली गई थी.

रमेश ने बेला के सामने चाय का प्रस्ताव रखा, तो वह टाल नहीं सकी.

बौस को रसोईघर में जाते देख बेला ने कहा था, 'सर, आप मैडम के पास बैठिए. मैं चाय बना कर लाती हूं.'

रमेश ने सीमा की तरफ देखा, तो उन्होंने आंखों ही आंखों में इशारा करते हुए उन की तरफ इनकार से सिर हिलाया था, जिसे बेला ने महसूस कर लिया था.

खैर उस ने अनजान बनने का नाटक किया और चाय रमेश ही बना

कर लाए. बाद में बेला ने यह भी देखा कि रमेश ने उस का चाय का जूठा कप अलग रखा था.

हालांकि दूसरे ही दिन दफ्तर में रमेश ने बेला से माफी मांग ली थी.

उस के बाद धीरेधीरे रमेश ने उस से नजदीकियां बढ़ानी भी शुरू कर दी थीं, जिन का मतलब अब बेला अच्छी तरह समझने लगी थी.

उन्हीं निकटताओं की आड़ ले कर आज रमेश ने उसे बड़ी ही बेशर्मी से रात में अपने घर बुलाया था, क्योंकि सीमा अपनी डिलीवरी के लिए पिछले एक महीने से मायके में थी.

क्या बिस्तर पर उस का दलित होना आड़े नहीं आएगा? क्या अब उसे छूने से बौस का धर्म खराब नहीं होगा?

बेला जितना ज्यादा सोचती, उतनी ही बरसों से मन में सुलगने वाली आग और भी भड़क उठती.

सिर्फ रमेश ही क्यों, स्कूलकालेज से ले कर आज तक न जाने कितने ही रमेश आए थे, बेला की जिंदगी में जिन्होंने उसे केवल एक ही पैमाने पर परखा था और वह थी उस की देह. उस की काबिलीयत को दलित आरक्षण के नीचे कुचल दिया गया था.

बेला की यादों में अचानक गांव वाले स्कूल मास्टरजी कौंध गए. उन दिनों वह छठी जमात में पढ़ती थी. 5वीं जमात में वह अपनी क्लास में अव्वल आई थी.

बेला खुशीखुशी मिठाई ले कर स्कूल में मास्टरजी को खिलाने ले गई थी. मास्टरजी ने मिठाई खाना तो दूर, उसे छुआ तक नहीं था.

'वहां टेबल पर रख दो,' कह कर उसे वापस

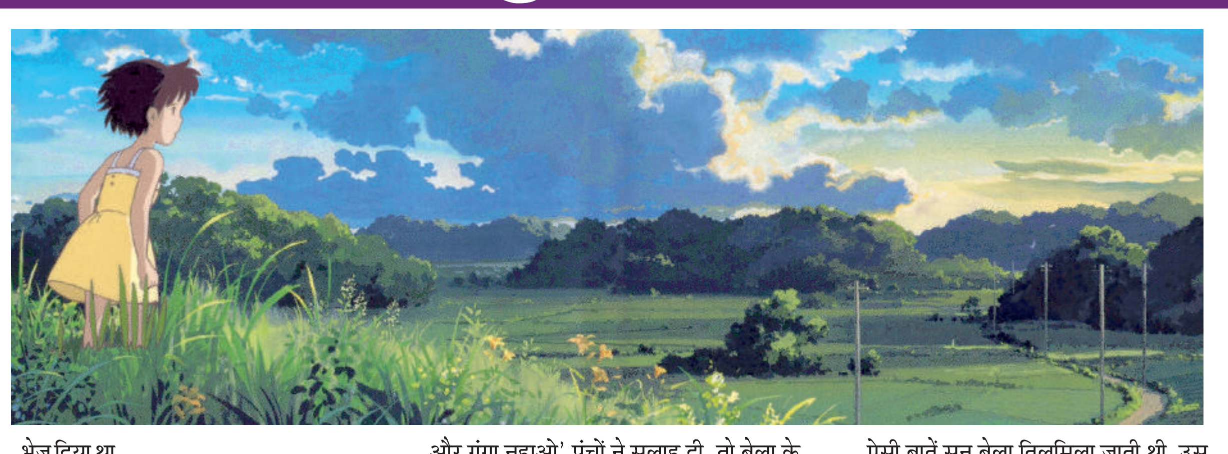

भेज दिया था.

बेला तब बेइज्जती से गड़ गई थी, जब क्लास के बच्चे हंस पड़े थे.

बेला चुपचाप वहां से निकल आई थी, मगर दूसरे ही दिन मास्टरजी ने उसे स्कूल की साफसफाई में मदद करने के बहाने रोक लिया था.

बेला अपनी क्लास में खड़ी अभी सोच ही रही थी कि शुरुआत कहां से की जाए, तभी अचानक मास्टरजी ने पीछे से आ कर उसे दबोच लिया था.

बेला धीरे से बोली थी, 'मास्टरजी, मैं बेला हूं'

'जानता हूं तू बेला है तो क्या हुआ?' मास्टरजी कह रहे थे.

'मगर, आप मुझे छू रहे हैं मैं दलित हूं' बेला गिड़गिड़ाई थी.

'इस वक्त तुम सिर्फ एक लड़की का शरीर हो शरीर का कोई जातधर्म नहीं होता' कहते हुए मास्टरजी ने उस का मुंह अपने होंठों से बंद कर दिया था और छटपटाती हुई उस मासूम कली को मसल डाला था.

बेला उस दिन आंसू बहाने के अलावा कुछ भी नहीं कर सकी थी. बरसों पुरानी यह घटना आज जेहन में आते ही बेला का पूरा शरीर झनझना उठा. वह दफ्तर के एयरकंडीशंड चैंबर में भी पसीने से नहा उठी थी.

स्कूल से जब बेला कालेज में आई, तब भी यह सिलसिला कहां रुका था. उस का सब से पहला विरोध तो गांव की पंचायत ने किया था.

पंचायत ने उस के पिता को बुला कर धमकाया था, 'भला बेला कैसे शहर जा कर कालेज में पढ़ सकती है? जो पढ़ना है, यहीं रह कर पढ़े वैसे भी अब लड़की सयानी हो गई है इस के हाथ पीले करो और गंगा नहाओ' पंचों ने सलाह दी, तो बेला के पिता अपना सा मुंह ले कर घर लौट आए थे.

उस दोपहर जब बेला अपने पिता को खेत में खाना देने जा रही थी, तब रास्ते में सरपंच के बेटे ने उस का हाथ पकड़ते हुए कहा था, 'बेला, तेरे शहर जा कर पढ़ने की इच्छा मैं पूरी करवा सकता हूं बस, तू मेरी इच्छा पूरी कर दे.'

बेला बड़ी मुश्किल से उस से पीछा छुड़ा पाई थी. तब उस ने पिता के सामने आगे पढ़ने की जिद की थी और ऊंची पढ़ाई से मिलने वाले फायदे गिनाए थे.

बेटी की बात पिता को समझ आ गई और पंचायत के विरोध के बावजूद उन्होंने उस का दाखिला कसबे के महिला कालेज में करवा दिया और वहीं उन के लिए बने होस्टल में उसे जगह भी मिल गई थी.

हालांकि इस के बाद उन्हें पंचायत की नाराजगी भी झेलनी पड़ी थी. मगर बेटी की खुशी की खातिर उन्होंने सब सहन कर लिया था.

शहर में भी होस्टल के वार्डन से ले कर कालेज के क्लर्क तक सब ने उस

का शोषण करने की कोशिश की थी. हालांकि उसे छूने और भोगने की उन की मंशा कभी पूरी नहीं हुई थी, मगर निगाहों से भी बलात्कार किया जाता है, इस कहावत का मतलब अब बेला को अच्छी तरह से समझ आने लगा था.

फाइनल प्रैक्टिकल में प्रोफैसर द्वारा अच्छे नंबर देने का लालच भी उसे कई बार दिया गया था. उस के इनकार करने पर उसे ताने सुनने पड़ते थे.

'इन्हें नंबरों की क्या जरूरत है ये तो पढ़ें या न पढ़ें, सरकारी सुविधाएं इन के लिए ही तो हैं'

ऐसी बातें सुन बेला तिलमिला जाती थी. उस की सारी काबिलीयत पर एक झटके में ही पानी फेर दिया जाता था.

मगर बेला ने हार नहीं मानी थी. अपनी काबिलीयत के दम पर उस ने सरकारी नौकरी हासिल कर ली थी.

पहली बार जब बेला अपने दफ्तर में गई, तो उस ने देखा कि उस का पूरा स्टाफ एकसाथ लंच कर रहा है, मगर उसे किसी ने नहीं बुलाया था.

बेला ने स्टाफ के साथ रिश्ता मजबूत करने के लिहाज से एक बार तो खुद ही उन की तरफ कदम बढ़ाए, मगर फिर अचानक कुछ याद आते ही उस के बढ़ते कदम रुक गए थे.

बेला के शक को हकीकत में बदल दिया था उस के दफ्तर के चपरासी ने. वह नादान नहीं थी, जो समझ नहीं सकती थी कि उस के चपरासी ने उसे पानी डिस्पोजल गिलास में देना शुरू क्यों किया था.

क्याक्या याद करे बेला इतनी सारी कड़वी यादें थीं उस के इस छोटे से सफर में, जिन्हें भूलना उस के लिए नामुमकिन सा ही था. मगर अब उस ने ठान लिया था कि वह अब और सहन नहीं करेगी. उस ने तय कर लिया था कि वह अपनी सरकारी नौकरी छोड़ देगी और दुनिया को दिखा देगी कि उस में कितनी काबिलीयत है. अब वह सिर्फ प्राइवेट नौकरी ही करेगी और वह भी बिना किसी की सिफारिश या मदद के.

बेला के इस फैसले को बचकाना फैसला बताते हुए उस के पिता ने बहुत खिलाफत की थी. उन का कहना भी सही था कि अगर दलित होने के नाते सरकार हमें कोई सुविधा देती है, तो इस में इतना असहज होने की कहां जरूरत है हम अपना हक ही तो ले रहे हैं.

मगर, बेला ने किसी की नहीं सुनी और सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया.

बेला को ज्यादा भागदौड़ नहीं करनी पड़ी थी. उस का आकर्षक बायोडाटा देख कर इस कंपनी ने उसे अच्छे सालाना पैकेज पर असिस्टेंट मैनेजर की पोस्ट औफर की थी. रमेश यहां मैनेजर थे. उन्हीं के साथ रह कर बेला को कंपनी का काम सीखना था.

शुरूशुरू में तो रमेश का बरताव बेला के लिए अच्छा रहा था, मगर जब से उन्होंने कंपनी में उस की पर्सनल फाइल देखी थी, तभी से उन का नजरिया बदल गया था. पहले तो वह समझ नहीं सकी थी, मगर जब से उन के घर जा कर आई थी, तभी से उसे रमेश के बदले हुए रवैए की वजह समझ में आ गई थी.

औरत के शरीर की चाह मर्द से कुछ भी करवा सकती है, यह सोच अब बेला की निगाहों में और भी ज्यादा मजबूत हो चली थी. पत्नी से जिस्मानी दूरियां रमेश से सहन नहीं हो रही थीं, ऐसे में बेला ही उसे आसानी से मिलने वाली चीज लगी थी. बेला का सालभर का प्रोबेशन पीरियड बिना रमेश के अच्छे नोट के क्लियर नहीं हो सकता और इसी बात का फायदा रमेश उठाना चाहते हैं.

'जब यहां भी मेरी काबिलीयत की पूछ नहीं है, तो फिर सरकारी नौकरी कहां बुरी थी? कम से कम इस तरह के समझौते तो नहीं करने पड़ते थे वहां नौकरी छूटने का मानसिक दबाव तो नहीं झेलना पड़ेगा ज्यादा से ज्यादा स्टाफ और अफसरों की अनदेखी ही तो झेलनी पड़ेगी वह तो हम आजतक झेलते ही आए हैं इस में नई बात क्या होगी

'वैसे भी जब आम सोच यही है कि दलितों को सरकारी नौकरी उन की काबिलीयत से नहीं, बल्कि आरक्षण के चलते मिलती है, तो यही सही

'इस सोच को बदलने की कोशिश करने में मैं ने अपने कीमती 2 साल बरबाद कर दिए अब और नहीं यह भी तो हो सकता?है कि सरकारी पावर हाथ में होने से मैं अपनी जैसी कुछ लड़कियों की मदद कर सकूं,' बेला ने अब अपनी सोच को एक नई दिशा दी.

इस के बाद बेला ने अपने आंसू पोंछे आखिरी बार रमेश के चैंबर की तरफ देखा और इस्तीफा लिखने लगी.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

इक्कावन शक्तिपीठों का जानकारी वर्णन

51 शक्तिपीठों के सन्दर्भ में जो कथा है वह यह है कि सती के पिता राजा प्रजापति दक्ष ने एक यज्ञ का आयोजन किया था। परन्तु सती के पति भगवान शिव को इस यज्ञ में शामिल होने के लिए निमन्त्रण नहीं भेजा था। जिससे भगवान शिव इस यज्ञ में शामिल नहीं हुए लेकिन सती जिद्द कर यज्ञ में शामिल होने चली गई, वहां शिव की निन्दा सुनकर वह यज्ञकुण्ड में कूद गईं तब भगवान शिव ने सती के वियोग में सती का शव अपने सिर पर धारण कर लिया और सम्पूर्ण भूमण्डल पर भ्रमण करने लगे। भगवती सती ने अन्तरिक्ष में शिव को दर्शन दिया और उनसे कहा कि जिस-जिस स्थान पर उनके शरीर के खण्ड विभक्त होकर गिरेंगे, वहा महाशक्तिपीठ का उदय होगा। सती का शव लेकर शिव पृथ्वी पर विचरण करते हुए नृत्य भी करने लगे, जिससे पृथ्वी पर प्रलय की स्थिति उत्पन्न होने लगी। इस पर विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को खण्ड-खण्ड करने का विचार किया। जब-जब शिव नृत्य मुद्रा में पैर पटकते, विष्णु अपने चक्र से शरीर का कोई अंग काटकर उसके टुकड़े पृथ्वी पर गिरा देते। इस प्रकार जहां जहां सती के अंग के टुकड़े, वस्त्र या आभूषण गिरे, वहीं शक्तिपीठ का उदय हुआ।

हालांकि देवी भागवत में जहां 108 और देवी गीता में 72 शक्तिपीठों का ज़िक्र मिलता है, वहीं तन्त्रचूडामणि में 52 शक्तिपीठ बताए गए हैं। देवी पुराण में जरूर 51 शक्तिपीठों की ही चर्चा की गई है। इन 51 शक्तिपीठों में से कुछ विदेश में भी हैं और पूजा-अर्चना द्वारा प्रतिष्ठित हैं।

ज्ञातव्य है की इन 51 ,,शक्तिपीठों में भारत ,,विभाजन के बाद 5 और भी कम हो गए और आज के भारत में 42 शक्ति पीठ रह गए है। पाकिस्तान में और बांग्लादेश में, श्रीलंका में, तिब्बत में तथा नेपाल में है।

शक्तिपीठों के सन्दर्भ में कथा,,,,देश,,विदेश में स्थित इन 51 शक्तिपीठों के सन्दर्भ में जो कथा है, वह यह है कि राजा प्रजापति दक्ष की पुत्री के रूप में माता जगदम्बिका ने सती के रूप में जन्म लिया था और भगवान शिव से विवाह किया। एक बार मुनियों का एक समूह यज्ञ करवा रहा था। यज्ञ में सभी देवताओं को बुलाया गया था। जब राजा दक्ष आए तो सभी लोग खड़े हो गए लेकिन भगवान शिव खड़े नहीं हुए। भगवान शिव दक्ष के दामाद थे। यह देख कर राजा दक्ष बेहद क्रोधित हुए। दक्ष अपने दामाद शिव को हमेशा निरादर भाव से देखते थे। सती के पिता राजा प्रजापति दक्ष ने कनखल (हरिद्वार) में 'बृहस्पति सर्व / ब्रिहासनी' नामक यज्ञ का आयोजन किया था। उस यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र और अन्य देवी-देवताओं को आमंत्रित किया गया, लेकिन जान-बूझकर अपने जमाता और सती के पति भगवान शिव को इस यज्ञ में शामिल होने के लिए निमन्त्रण नहीं भेजा था। जिससे भगवान शिव इस यज्ञ में शामिल नहीं हुए। नारद जी से सती को पता चला कि उनके पिता के यहां यज्ञ हो रहा है लेकिन उन्हें निमंत्रित नहीं किया गया है। इसे जानकर वे क्रोधित हो उठीं। नारद ने उन्हें सलाह दी किपिता के यहां जाने के लिए बुलावे की ज़रूरत नहीं होती है। जब सती अपने पिता के घर जाने लगीं तब भगवान शिव ने मना कर दिया। लेकिन सती पिता द्वारा न बुलाए जाने पर और शंकरजी के रोकने पर भी जिद्द कर यज्ञ में शामिल होने चली गई। यज्ञ-स्थल पर सती ने अपने पिता दक्ष से शंकर जी को आमंत्रित न करने का कारण पूछा और पिता से उग्र विरोध प्रकट किया। इस पर दक्ष ने भगवान शंकर के विषय में सती के सामने ही अपमानजनक बातें करने लगे। इस अपमान से पीड़ित हुई सती को यह सब बर्दाश्त नहीं हुआ और वहीं यज्ञ-अग्नि कुंड में कूदकर अपनी प्राणाहुति दे दी। भगवान शंकर को जब इस दुर्घटना का पता चला तो क्रोध से उनका तीसरा नेत्र खुल गया। सर्वत्र प्रलय-सा हाहाकार मच गया। भगवान शंकर के आदेश पर वीरभद्र ने दक्ष का सिर काट दिया और अन्य देवताओं को शिव निंदा सुनने की भी सज़ा दी और उनके गणों के उग्र कोप से भयभीत सारे देवता और ऋषिगण यज्ञस्थल से भाग गये। तब भगवान शिव ने सती के वियोग में यज्ञकुंड से सती के पार्थिव शरीर को निकाल कंधे पर उठा लिया और दुःखी हुए सम्पूर्ण भूमण्डल पर भ्रमण करने लगे। भगवती सती ने अन्तरिक्ष में शिव को दर्शन दिया और उनसे कहा कि जिस-जिस स्थान पर उनके शरीर के खण्ड विभक्त होकर गिरेंगे, वहाँ महाशक्तिपीठ का उदय होगा। सती का शव लेकर शिव पृथ्वी पर विचरण करते हुए तांडव नृत्य भी करने लगे, जिससे पृथ्वी पर प्रलय की स्थिति उत्पन्न होने लगी। पृथ्वी समेत तीनों लोकों को व्याकुल देखकर और देवों के अनुनय-विनय पर भगवान विष्णु सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को खण्ड-खण्ड कर धरती पर गिराते गए। जब-जब शिव नृत्य मुद्रा में पैर पटकते, विष्णु अपने चक्र से शरीर का कोई अंग काटकर उसके टुकड़े पृथ्वी पर गिरा देते। 'तंत्र-चूड़ामणि' के अनुसार इस प्रकार जहां-जहां सती के अंग के टुकड़े, धारण किए वस्त्र या आभूषण गिरे, वहां-वहां शक्तिपीठ अस्तित्व में आया। इस तरह कुल 51 स्थानों में माता की शक्तिपीठों का निर्माण हुआ। अगले जन्म में सती ने हिमवान राजा के घर पार्वती के रूप में जन्म लिया और घोर तपस्या करशिव को पुनः पति रूप में प्राप्त किया।

1,,, किरीट कात्यायनी

पश्चिम बंगाल के हुगली नदी के तट लालबाग कोट पर स्थित है किरीट शक्तिपीठ, जहां सती माता का किरीट यानी शिराभूषण या मुकुट गिरा था। यहां की शक्ति विमला अथवा भुवनेश्वरी तथा भैरव संवर्त हैं।

2 कात्यायनी कात्यायनी

वृन्दावन, मथुरा के भूतेश्वर में स्थित है कात्यायनी वृन्दावन शक्तिपीठ जहां सती का केशपाश गिरा था। यहां की शक्ति देवी कात्यायनी हैं।

3 करवीर शक्तिपीठ

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में स्थित है यह शक्तिपीठ, जहां माता का त्रिनेत्र गिरा था। यहां की शक्ति महिषासुरमदिनी तथा भैरव क्रोधशिश हैं। यहां महालक्ष्मी का निज निवास माना जाता है।

4 श्री पर्वत शक्तिपीठ

इस शक्तिपीठ को लेकर विद्वानों में मतान्तर है कुछ विद्वानों का मानना है कि इस पीठ का मूल स्थल लद्दाख है, जबकि कुछ का मानना है कि यह असम के सिलहट में है जहां माता सती का दक्षिण तल्प यानी कनपटी गिरा था। यहां की शक्ति श्री सुन्दरी एवं भैरव सुन्दरानन्द हैं।

5 विशालाक्षी शक्तिपीठ

उत्तर प्रदेश, वाराणसी के मीरघाट पर स्थित है शक्तिपीठ जहां माता सती के दाहिने कान के मणि गिरे थे। यहां की शक्ति विशालाक्षी तथा भैरव काल भैरव हैं।

6 गोदावरी तट शक्तिपीठ

आंध्रप्रदेश के कब्बूर में गोदावरी तट पर स्थित है यह शक्तिपीठ, जहां माता का वामगण्ड यानी बायां कपोल गिरा था। यहां की शक्ति विश्वेश्वरी या रुक्मणी तथा भैरव दण्डपाणि हैं।

7 शुचीन्द्रम शक्तिपीठ

तमिलनाडु, कन्याकुमारी के त्रिसागर संगम स्थल पर स्थित है यह शुची शक्तिपीठ, जहां सती के उफध्वदन्त (मतान्तर से पृष्ठ भागद्ध गिरे थे। यहां की शक्ति नारायणी तथा भैरव संहार या संकूर हैं।

8 पंच सागर शक्तिपीठ

इस शक्तिपीठ का कोई निश्चित स्थान ज्ञात नहीं है लेकिन यहां माता का नीचे के दान्त गिरे थे। यहां की शक्ति वाराही तथा भैरव महारुद्र हैं।

9. ज्वालामुखी शक्तिपीठ

हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा में स्थित है यह शक्तिपीठ, जहां सती का जिह्वा गिरी थी। यहां की शक्ति सिद्धिदा व भैरव उन्मत्त हैं।

10. भैरव पर्वत शक्तिपीठ

इस शक्तिपीठ को लेकर विद्वानों में मतदभेद है। कुछ गुजरात के गिरिनार के निकट भैरव पर्वत को तो कुछ मध्य प्रदेश के उज्जैन के निकट क्षीप्रा नदी तट पर वास्तविक शक्तिपीठ मानते हैं, जहां माता का उफध्व ओष्ठ गिरा है। यहां की शक्ति अवन्ती तथा भैरव लंबकर्ण हैं।

11. अट्टहास शक्तिपीठ

अट्टहास शक्तिपीठ पश्चिम बंगाल के लाबपुर में स्थित है। जहां माता का अधोष्ठ यानी नीचे का होंठ गिरा था। यहां की शक्ति पफुल्लरा तथा भैरव विश्वेश हैं।

12. जनस्थान शक्तिपीठ

महाराष्ट्र नासिक के पंचवटी में स्थित है जनस्थान शक्तिपीठ जहां माता का ठुड्डी गिरी थी। यहां की शक्ति भ्रामरी तथा भैरव विकृताक्ष हैं।

13. कश्मीर शक्तिपीठ

जम्मू-कश्मीर के अमरनाथ में स्थित है यह

शक्तिपीठ जहां माता का कण्ठ गिरा था। यहां की शक्ति महामाया तथा भैरव त्रिसंध्येश्वर हैं।

14. नन्दीपुर शक्तिपीठ

पश्चिम बंगाल के सैन्थया में स्थित है यह पीठ, जहां देवी की देह का कण्ठहार गिरा था। यहां कि शक्ति निन्दनी और भैरव निन्दकेश्वर हैं।

15. श्री शैल शक्तिपीठ

आंध्रप्रदेश के कुर्नूल के पास है श्री शैल का शक्तिपीठ, जहां माता का ग्रीवा गिरा था। यहां की शक्ति महालक्ष्मी तथा भैरव संवरानन्द अथव ईश्वरानन्द हैं।

16. नलहरी शक्तिपीठ

पश्चिम बंगाल के बोलपुर में है नलहरी शक्तिपीठ, जहां माता का उदरनली गिरी थी। यहां की शक्ति कालिका तथा भैरव योगीश हैं।

17. मिथिला शक्तिपीठ

इसका निश्चित स्थान अज्ञात है। स्थान को लेकर मन्तारतर है तीन स्थानों पर मिथिला शक्तिपीठ को माना जाता है, वह है नेपाल के जनकपुर, बिहार के समस्तीपुर और सहरसा, जहां माता का वाम स्कंधगिरा था। यहां की शक्ति उमा या महादेवी तथा भैरव महोदर हैं।

18. रत्नावली शक्तिपीठ

इसका निश्चित स्थान अज्ञात है, बंगाज पंजिका के अनुसार यह तमिलनाडु के चेन्नई में कहीं स्थित है रत्नावली शक्तिपीठ जहां माता का दक्षिण स्कंधगिरा था। यहां की शक्ति कुमारी तथा भैरव शिव हैं।

19. अम्बाजी शक्तिपीठ, प्रभास पीठ

गुजरात गूना गढ़ के गिरनार पर्वत के प्रथत शिखर पर देवी अम्बिका का भव्य विशाल मन्दिर है, जहां माता का उदर गिरा था। यहां की शक्ति चन्द्रभागा तथा भैरव वक्रतुण्ड है। ऐसी भी मान्यता है कि गिरिनार पर्वत के निकट ही सती का उध्वोष्ठ गिरा था, जहां की शक्ति अवन्ती तथा भैरव लंबकर्ण है।

20. जालंध्र शक्तिपीठ

पंजाब के जालंध्र में स्थित है माता का जालंध्र शक्तिपीठ जहां माता का वामस्तन गिरा था। यहां की शक्ति त्रिपुरमालिनी तथा भैरव भीषण हैं।

21. रामागरि शक्तिपीठ

इस शक्ति पीठ की स्थिति को लेकर भी विद्वानों में मतान्तर है। कुछ उत्तर प्रदेश के चित्राकूट तो कुछ मध्य प्रदेश के मैहर में मानते हैं, जहां माता का दाहिना स्तन गिरा था। यहा की शक्ति शिवानी तथा भैरव चण्ड हैं।

22. वैद्यनाथ का हार्द शक्तिपीठ

झारखण्ड के गिरिडीह, देवघर स्थित है वैद्यनाथ हार्द शक्तिपीठ, जहां माता का हृदय गिरा था। यहां की शक्ति जयदुर्गा तथा भैरव वैद्यनाथ है। एक मान्यतानुसार यहीं पर सती का दाह-संस्कार भी हुआ था।

23. वक्रेश्वर शक्तिपीठ

माता का यह शक्तिपीठ पश्चिम बंगाल के सैन्थिया में स्थित है जहां माता का मन गिरा था। यहां की शक्ति महिषासुरमदिनी तथा भैरव वक्त्रानाथ हैं।

24. कण्यकाश्रम कन्याकुमारी

तमिलनाडु के कन्याकुमारी के तीन सागरों हिन्द महासागर, अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ीद्ध के संगम पर स्थित है कण्यकाश्रम शक्तिपीठ, जहां माता का पीठ मतान्तर से उध्वदन्त गिरा था। यहां की शक्ति शर्वाणि या नारायणी तथा भैरव निमषि या स्थाणु हैं।

25. बहुला शक्तिपीठ

पश्चिम बंगाल के कटवा जंक्शन के निकट केतुग्राम में स्थित है बहुला शक्तिपीठ, जहां माता का वाम बाहु गिरा था। यहां की शक्ति बहुला तथा भैरव भीरुक हैं।

26. उज्जयिनी शक्तिपीठ

मध्य प्रदेश के उज्जैन के पावन क्षिप्रा के दोनों तटों पर स्थित है उज्जयिनी शक्तिपीठ। जहां माता का कुहनी गिरा था। यहां की शक्ति मंगल चण्डिका तथा भैरव मांगल्य कपिलांबर हैं।

27. मणिवेदिका शक्तिपीठ

राजस्थान के पुष्कर में स्थित है मणिदेविका शक्तिपीठ, जिसे गायत्री मन्दिर के नाम से जाना जाता है यहीं माता की कलाइयां गिरी थीं। यहां की शक्ति गायत्री तथा भैरव शर्वानन्द हैं।

28. प्रयाग शक्तिपीठ

उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में स्थित है। यहां माता की हाथ की अंगुलियां गिरी थी। लेकिन, स्थानों को लेकर मतभेद इसे यहां अक्षयवट, मीरापुर और अलोपी स्थानों गिरा माना जाता है। तीनों शक्तिपीठ की शक्ति ललिता हैं।

29. विरजाक्षेत्रा, उत्कल

उत्कल शक्तिपीठ उड़ीसा के पुरी और याजपुर में माना जाता है जहां माता की नाभि गिरा था। यहां की शक्ति विमला तथा भैरव जगन्नाथ पुरुषोत्तम हैं।

30. कांची शक्तिपीठ

तमिलनाडु के कांचीवरम् में स्थित है माता का कांची शक्तिपीठ, जहां माता का कंकाल गिरा था। यहां की शक्ति देवगर्भा तथा भैरव रुरु हैं।

31. कालमाध्व शक्तिपीठ

इस शक्तिपीठ के बारे कोई निश्चित स्थान ज्ञात नहीं है। परन्तु, यहां माता का वाम नितम्ब गिरा था। यहां की शक्ति काली तथा भैरव असितांग हैं।

32. शोण शक्तिपीठ

मध्य प्रदेश के अमरकंटक के नर्मदा मन्दिर शोण शक्तिपीठ है। यहां माता का दक्षिण नितम्ब गिरा था। एक दूसरी मान्यता यह है कि बिहार के सासाराम का ताराचण्डी मन्दिर ही शोण तटस्था शक्तिपीठ है। यहां सती का दायां नेत्रा गिरा था ऐसा माना जाता है। यहां की शक्ति नर्मदा या शोणाक्षी तथा भैरव भद्रसेन हैं।

33. कामरूप कामाख्या शक्तिपीठ कामगिरि

असम गुवाहाटी के कामगिरि पर्वत पर स्थित है यह शक्तिपीठ, जहां माता का योनि गिरा था। यहां की शक्ति कामाख्या तथा भैरव उमानन्द हैं।

34. जयन्ती शक्तिपीठ

जयन्ती शक्तिपीठ मेघालय के जयन्तिया पहाडी पर स्थित है, जहां माता का वाम जंघा गिरा था। यहां की शक्ति जयन्ती तथा भैरव क्रमदीश्वर हैं।

35. मगध शक्तिपीठ

बिहार की राजधनी पटना में स्थित पटनेश्वरी देवी को ही शक्तिपीठ माना जाता है जहां माता का दाहिना जंघा गिरा था। यहां की शक्ति सर्वानन्दकरी तथा भैरव व्योमकेश हैं।

36. त्रिस्तोता शक्तिपीठ

पश्चिम बंगाल के जलपाइगुड़ी के शालवाड़ी गांव में तीस्ता नदी पर स्थित है त्रिस्तोता शक्तिपीठ, जहां माता का वामपाद गिरा था। यहां की शक्ति भ्रामरी तथा भैरव ईश्वर हैं।

37. त्रिपुरी सुन्दरी शक्तित्रिपुरी पीठ

त्रिपुरा के राध किशोर ग्राम में स्थित है त्रिपुरे सुन्दरी शक्तिपीठ, जहां माता का दक्षिण पाद गिरा था। यहां की शक्ति त्रिपुर सुन्दरी तथा भैरव त्रिपुरेश हैं।

38. विभाष शक्तिपीठ

पश्चिम बंगाल के मिदनापुर के ताम्रलुक ग्राम में स्थित है विभाष शक्तिपीठ, जहां माता का वाम टखना गिरा था। यहां की शक्ति कापालिनी, भीमरूपा तथा भैरव सर्वानन्द हैं।

39. देवीकूप पीठ कुरुक्षेत्र (शक्तिपीठ)

हरियाणा के कुरुक्षेत्र जंक्शन के निकट द्वैपायन सरोवर के पास स्थित है कुरुक्षेत्र शक्तिपीठ, जिसे श्रीदेवीकूप(भद्रकाली पीठ के नाम से मान्य है। माता का दहिने चरण (गुल्पफद्ध गिरे थे। यहां की शक्ति सावित्री तथा भैरव स्थाणु हैं।

40. युगाद्या शक्तिपीठ (क्षीरग्राम शक्तिपीठ)

पश्चिम बंगाल के बर्दमान जिले के क्षीरग्राम में स्थित है युगाद्या शक्तिपीठ, यहां सती के दाहिने चरण का अंगूठा गिरा था।

41. विराट का अम्बिका शक्तिपीठ

राजस्थान के गुलाबी नगरी जयपुर के वैराटग्राम में स्थित है विराट शक्तिपीठ, जहां माता का दक्षिण पादांगुलियां गिरी थीं। यहां की शक्ति अंबिका तथा भैरव अमृत हैं।

42. काली शक्तिपीठ

पश्चिम बंगाल, कोलकाता के कालीघाट में कालीमन्दिर के नाम से प्रसिध यह शक्तिपीठ, जहां माता के दाएं पांव की अंगूठा छोड़ 4 अन्य अंगुलियां गिरी थीं। यहां की शक्ति कालिका तथा भैरव नकुलेश हैं।

43. मानस शक्तिपीठ

तिब्बत के मानसरोवर तट पर स्थित है मानस शक्तिपीठ, जहां माता का दाहिना हथेली का निपात हुआ था। यहां की शक्ति की दाक्षायणी तथा भैरव अमर हैं।

44. लंका शक्तिपीठ

श्रीलंका में स्थित है लंका शक्तिपीठ, जहां माता का नूपुर गिरा था। यहां की शक्ति इन्द्राक्षी तथा भैरव राक्षसेश्वर हैं। लेकिन, उस स्थान ज्ञात नहीं है कि श्रीलंका के किस स्थान पर गिरे थे।

45. गण्डकी शक्तिपीठ

नेपाल में गण्डकी नदी के उद्गम पर स्थित है गण्डकी शक्तिपीठ, जहां सती के दक्षिणगण्ड(कपोल) गिरा था। यहां शक्ति `गण्डकी´ तथा भैरव `चक्रपाणि´ हैं।

46. गुह्येश्वरी शक्तिपीठ

नेपाल के काठमाण्डू में पशुपतिनाथ मन्दिर के पास ही स्थित है गुह्येश्वरी शक्तिपीठ है, जहां माता सती के दोनों जानु (घुटने) गिरे थे। यहां की शक्ति `महामाया´ और भैरव `कपाल´ हैं।

47. हिंगलाज शक्तिपीठ

पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रान्त में स्थित है माता हिंगलाज शक्तिपीठ, जहां माता का ब्रह्मरन्ध्र गिरा था।

48. सुगंध शक्तिपीठ

बांग्लादेश के खुलना में सुगंध नदी के तट पर स्थित है उग्रतारा देवी का शक्तिपीठ, जहां माता का नासिका गिरा था। यहां की देवी सुनन्दा है तथा भैरव त्रयम्बक हैं।

49. करतोयाघाट शक्तिपीठ

बंग्लादेश भवानीपुर के बेगड़ा में करतोया नदी के तट पर स्थित है करतोयाघाट शक्तिपीठ, जहां माता का वाम तल्प गिरा था। यहां देवी अपर्णा रूप में तथा शिव वामन भैरव रूप में वास करते हैं।

50. चट्टल शक्तिपीठ

बंग्लादेश के चटगांव में स्थित है चट्टल का भवानी शक्तिपीठ, जहां माता का दाहिना बाहु यानी भुजा गिरा था। यहां की शक्ति भवानी तथा भेरव चन्द्रशेखर हैं।

51. यशोरेश्वरी शक्तिपीठ

बांग्लादेश के जैसोर खुलना में स्थित है माता का प्रसि(यशोरेश्वरी शक्तिपीठ, जहां माता का बायीं हथेली गिरा था। यहां शक्ति यशोरेश्वरी तथा भैरव चन्द्र हैं।

मानव शरीर एक देवालय (मंदिर) है

ईश्वर ने अपनी माया से चौरासी लाख योनियों की रचना की लेकिन जब उन्हें संतोष न हुआ तो उन्होंने मनुष्य शरीर की रचना की। मनुष्य शरीर की रचना करके ईश्वर बहुत ही प्रसन्न हुए क्योंकि मनुष्य ऐसी बुद्धि से युक्त है जिससे वह ईश्वर के साथ साक्षात्कार कर सकता है। हमारे ज्ञानवान पाठक जानते हैं कि मानव शरीर एक देवालय है। ईश्वर ने पंचभूतों (आकाश, वायु, अग्नि भूमि और जल) से मानव शरीर का निर्माण कर उसमें भूख प्यास भर दी। आकाश की सूक्ष्म शरीर से, भूमि की हड्डियों, से और अग्नि की हृदय के साथ तुलना की गयी है।

देवताओं ने ईश्वर से कहा कि हमारे रहने योग्य कोई स्थान बताएं जिसमें रह कर हम अपने भोज्य पदार्थ का भक्षण कर सकें। देवताओं के आग्रह पर जल से गौ और अश्व बाहर आए पर देवताओं ने यह कह कर उन्हें ठुकरा दिया कि यह हमारे रहने के योग्य नहीं हैं।

जब मानव शरीर प्रकट हुआ तब सभी देवता प्रसन्न हो गए।

तब ईश्वर ने कहा, अपने रहने योग्य स्थानों में तुम प्रवेश करो।

तब सूर्य नेत्रों में ज्योति (प्रकाश) बन कर, वायु छाती और नासिका छिद्रों में प्राण बन कर, अग्नि मुख में वाणी और उदर में जठराग्नि बन कर, दिशाएं श्रोत्रेन्द्रिय (सुनना) बन कर कानों में, औषधियां और वनस्पति लोम (रोम) बन कर त्वचा में, चन्द्रमा मन होकर हृदय में, मृत्यु (मलद्वार) होकर नाभि में और जल देवता वीर्य होकर पुरुषेन्द्रिय में प्रविष्ट हो गए।

तैंतीस देवता अंश रूप में आकर मानव शरीर में निवास करते हैं।

उपनिषद् का निम्नलिखित कथानक मानव शरीर के देवालय होने की पुष्टि करता है :-

हमारा शरीर भगवान का मंदिर है। यही वह मंदिर है, जिसके बाहर के सब दरवाजे बंद हो जाने पर जब भक्ति का भीतरी पट खुलता है, तब यहां ईश्वर ज्योति रूप में प्रकट होते हैं और मनुष्य को भगवान के दर्शन होते हैं।

आइये देखें मानव शरीर में कौन कौन से देवताओं का वास है और उनके कार्य क्या हैं :-

संसार में जितने देवता हैं, उतने ही देवता मानव शरीर में "अप्रकट" रूप से स्थित हैं, किन्तु दस इन्द्रियों (पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रियां) के और चार अंतकरण (भीतरी इन्द्रियां बुद्धि, अहंकार, मन और चित्त) के अधिष्ठाता देवता प्रकट रूप में हैं। इस सभी इन्द्रियों का टोटल किया जाये तो 14 बनता है।

आइए इन देवताओं के बारे में संक्षेप में जानकारी प्राप्त करें, इतनी संक्षेप में कि साधारण मनुष्य को भी समझ आ जाये। सभी कठिन शब्दों को सरल करने का प्रयास तो किया है लेकिन जिनका सरलीकरण नहीं किया गया है वह केवल इसलिए कि सरलीकरण के बाद और अधिक कठिनता देखी गयी थी।

१. नेत्रेन्द्रिय (चक्षुरिन्द्रिय) के देवताः भगवान सूर्य नेत्रों में निवास करते हैं और उनके अधिष्ठाता देवता हैं; इसीलिए नेत्रों के द्वारा किसी के रूप का दर्शन सम्भव हो पाता है। नेत्र विकार में चाक्षुषोपनिषद्, सूर्योपनिषद् की साधना और सूर्य की उपासना से लाभ होता है।

२. घ्राणेन्द्रिय (नासिका) के देवताः नासिका के अधिष्ठाता देवता अश्विनीकुमार हैं। इनसे गन्ध का ज्ञान होता है।

. श्रोत्रेन्द्रिय (कान) के देवताः श्रोत कान के अधिष्ठाता देवता दिक्देवता (दिशाएं) हैं। इनसे शब्द सुनाई पड़ता है।

४. जिह्वा के देवताः जिह्वा में वरुण देवता का निवास है, इससे रस का ज्ञान होता है।

५. त्वगिन्द्रिय (त्वचा) के देवताः त्वगिन्द्रिय के अधिष्ठाता वायु देवता हैं। इससे जीव स्पर्श का अनुभव करता है।

६. हस्तेन्द्रिय (हाथों) के देवताः मनुष्य के अधिकांश कर्म हाथों से ही संपन्न होते हैं। हाथों में इन्द्रदेव का निवास है।

७. चरणों के देवताः चरणों के देवता उपेन्द्र (वामन, श्रीविष्णु) हैं। चरणों में विष्णु का निवास है।

८. वाणी के देवताः जिह्वा में दो इन्द्रियां हैं, एक रसना जिससे स्वाद का ज्ञान होता है और दूसरी वाणी जिससे सब शब्दों का उच्चारण होता है। वाणी में सरस्वती का निवास है और वे ही उसकी अधिष्ठाता देवता हैं।

९. उपस्थ (मेढ्र) के देवताः इस गुह्येन्द्रिय के देवता प्रजापति हैं। इससे प्रजा की सृष्टि (संतानोत्पत्ति) होती है।

१०. गुदा के देवताः इस इन्द्रिय में मित्र, मृत्यु देवता का निवास है। यह मल निस्तारण कर शरीर को शुद्ध करती है।

१ १ .

बुद्धि इन्द्रिय के देवताः बुद्धि इन्द्रिय के देवता ब्रह्मा हैं। गायत्री मंत्र में सद्बुद्धि की कामना की गई है इसीलिए यह 'ब्रह्म-गायत्री' कहलाती है। जैसे जैसे बुद्धि निर्मल होती जाती है, वैसे वैसे सूक्ष्म ज्ञान होने लगता है, जो परमात्मा का साक्षात्कार भी करा सकता है।

१२. अहंकार के देवताः अहं के अधिष्ठाता देवता रुद्र हैं। अहं से 'मैं' का बोध होता है।

१ .मन के देवताः मन के अधिष्ठाता देवता चन्द्रमा हैं। मन ही मनुष्य में संकल्प विकल्प को जन्म देता है। मन का निग्रह परमात्मा की प्राप्ति करा देता है और मन के हारने पर मनुष्य निराशा के गर्त में डूब जाता है।

१४. चित्त के देवताः प्रकृति शक्ति, चिच्छत्ति ही चित्त के देवता हैं। चित्त ही चैतन्य या चेतना है। शरीर में जो कुछ भी स्पन्दन (चलन, चेतना) होती है, सब उसी चित्त के द्वारा होती है।

भगवान ने ब्रह्माण्ड बनाया और समस्त देवता आकर इसमें स्थित हो गए, किन्तु तब भी ब्रह्माण्ड में चेतना नहीं आई और वह विराट् मनुष्य उठा नहीं। जब चित्त के अधिष्ठाता देवता ने चित्त में प्रवेश किया तो विराट् पुरुष उसी समय उठ कर खड़ा हो गया। इस प्रकार भगवान संसार में सभी क्रियाओं का संचालन करने वाले देवताओं के साथ इस शरीर में विराजमान हैं।

अब मनुष्य का कर्तव्य है कि वह भगवान द्वारा बनाए गए इस देवालय को कैसे साफ सुथरा रखे? इसके लिए निम्न कार्य किए जाने चाहिएः

१. नकारात्मक विचारों और मनोविकारों; काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार से दूर रहे।

२. योग साधना, व्यायाम व सूर्य नमस्कार करके अधिक से अधिक पसीना बहाकर शरीर की आंतरिक गंदगी दूर करें।

. अनुलोम विलोम व सूक्ष्म क्रियाएं करके ज्यादा से ज्यादा शुद्ध हवा का सेवन करे।

४. शुद्ध सात्विक भोजन सही समय पर व सही मात्रा में करके पेट को साफ रखें।

नीचे दिए गए विवरण को पढ़ते समय आप सोच रहे होंगें कि ऊपर दी गयी जानकारी रिपीट हो रही है। हाँ कुछ तथ्य रिपीट अवश्य हो रहे हैं लेकिन इनका अध्ययन करना लाभदायक ही होगा।

हम जानते हैं कि मनुष्य का शरीर एक देवालय है। इस देवालय के आठ चक्र और नौ द्वार हैं। अर्थववेद में कहा गया हैः

"अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या, तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः"

जिसका अर्थ है कि आठ चक्र और नौ द्वारों वाली अयोध्या देवों की पुरी है, उसमें प्रकाश वाला कोष है जो आनन्द और प्रकाश से युक्त है अर्थात आठ चक्रों और नौ द्वारों से युक्त यह देवों की अयोध्या नामक नगरी है।

विज्ञान के अनुसार मनुष्य का जन्म माता पिता के संयोग से संभव हो पाता है।

लेकिन क्या केवल संयोग से ही मनुष्य की रचना हो जाती हैं, बिलकुल नहीं ! इसके लिए देवी देवताओं का सहयोग भी होता है। 33 कोटी के देवी देवता जैसे कि सूर्य, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश, चन्द्र आदि हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

हमारी माता के गर्भ में ये देव अपने एक एक अंश से बच्चा पैदा करने और उसका पालन पोषण करने में सहयोग करते हैं।

ज़रा कल्पना करें कि अगर वायुदेव माँ के गर्भ में न पहुंच पाए तो क्या गर्भ में जीवन संभव हो सकता है। यही बात जल की है, यही बात अग्नि आदि देवों के बारे में भी लागू होती है। इन सभी देवों को एक एक करके समझने के लिए तो विज्ञान और अध्यात्म की बैकग्राउंड होनी चाहिए, अग्निदेव का अर्थ यह कदापि न लिया जाए कि माँ के गर्भ में कोई स्टोव या भट्टी स्थापित है और वह बच्चे के लिए खाना पका रही है। बेसिक साइंस का ज्ञान बताता है कि भोजन का पचना (digestion), उससे रक्त का बनना, एनर्जी का पैदा होना एक प्रकार का combustion/ burning/ignition process है।

अथर्ववेद के 5वें कांड में लिखा है :- सूर्य मेरी आँखें हैं, वायु मेरे प्राण हैं, अन्तरिक्ष मेरी आत्मा है और पृथ्वी मेरा शरीर है। इस तरह दिव्यलोक का सूर्य, अंतरिक्ष लोक की वायु और पृथ्वी लोक के पदार्थ क्रमशः मेरी आँखें और प्राण स्थूल शरीर में आकर रह रहे है और हाथ जो तीनों लोकों के सूक्ष्म अंश हैं, हमारे शरीर में अवतरित हुए हैं। इसीलिए ज्ञानी मनुष्य मानव शरीर को ब्रह्म मानता है क्योंकि सभी देवता इसमें वैसे ही रहते हैं जैसे गोशाला में गायें रहती हैं। माँ के गर्भ में 33 देवता अपने अपने सूक्ष्म अंशों से रहते हैं परन्तु यह गर्भ तभी स्थिर (ठोस) होने लगता है जब परमात्मा अपने अंश से गर्भ में जीवात्मा को अवतरित करते हैं। उस समय सभी देवता गर्भ में उस परमात्मा की स्तुति करते हैं और उसकी रक्षा व्वृद्धि करते है। सभी देवता प्रार्थना करते हैं कि, हे जीव ! आप अपने साथ अन्य जीवों का भी कल्याण करना, परन्तु जन्म के समय के कठिन कष्ट के कारण मनुष्य इन बातों को भूल जाता है।

वेद का मंत्र हमें यह स्मरण दिलाता है मैं अमर अथवा अदम्य शक्ति से युक्त हूँ। हमारा शरीर ऐसा दिव्य और मनोहारी मनुष्य शरीर होता है। तभी तो उपनिषदों में ऋषियों का अमर संदेश गूंजता हैः अहं ब्रह्मास्मि तत्वमसि। इसी तरह सभी जीवों की उत्पत्ति होती है। अतः देवता यह घोषणा करते हैं कि सृष्टि का हर प्राणी परमात्मा का ही अंश है इसलिए हम सभी को इसी भगवानमय दृष्टि से एक दूसरे को देखना चाहिए। इस वाक्य को पढ़कर आज के मानव पर घृणा तो आती है कि हमारे वेद, पुराण, उपनिषद, देवता क्या शिक्षा देते हैं, कैसे इतने परिश्रम से सृष्टि की स्थापना करते हैं, लेकिन मानव महामानव और देवमानव बनने के बजाय दैत्यमानव बनने में कोई कसर नहीं छोड़ता। शायद उस मानव को यह नहीं मालूम की सृष्टि के नियम, विधाता की अदालत में एक एक प्राणी के एक एक कर्म का लेखा लिखा जा रहा है। कर्म अपने कर्ता को ढूंढ ही निकालता है, सज़ा या इनाम मिल कर ही रहते हैं। कर्म की थ्योरी इतनी मजबूत है कि इससे तो देवता क्या भगवान तक भी बच नहीं पाए।

अश्लील और कानफोड़ू गानों से करें परहेज

शादी एक पवित्र और भावनात्मक अवसर होती है, जिसमें दो परिवारों का मिलन होता है। इस अवसर पर संगीत का चयन केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह हमारे मूल्यों, रिश्तों और भावनाओं का भी सम्मान करना चाहिए। शादी में बजने वाले गाने रिश्तों की गरिमा, परिवार की भावनाओं और संस्कृति को भी दर्शाते हैं।

डॉ. सत्यवान सौरभ

शादी एक खास अवसर होता है, जो दो परिवारों की सांस्कृतिक, पारिवारिक और भावनात्मक दुनिया को जोड़ता है। यह केवल दो लोगों का मिलन नहीं, बल्कि दो परिवारों का मिलन है, जिसमें भावनाओं, संस्कारों और परंपराओं का आदान-प्रदान होता है। संगीत इस आयोजन का अभिन्न हिस्सा है, लेकिन इसका चयन बेहद सावधानी से किया जाना चाहिए। केवल मस्ती और डांस तक सीमित न होकर संगीत को हमारे मूल्यों, रिश्तों और भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

गानों का हमारी भावनाओं और मूल्यों से संबंध

शादी में बजने वाले गाने रिश्तों की गरिमा, परिवार की भावनाओं और संस्कृति का आदान-प्रदान करते हैं। गानों के बोल और धुनों का असर हमारे मनोबल और शादी के समग्र अनुभव पर पड़ता है। शादी एक पारिवारिक आयोजन होता है, जिसमें विभिन्न आयु समूहों के लोग उपस्थित होते हैं। माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची और छोटे बच्चे भी समारोह में होते हैं। ऐसे में गानों के बोल शालीन और मर्यादित होने चाहिए ताकि किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचे। जैसे कि, जब हम शादी के सादे और गंभीर समारोहों में भाग लेते हैं, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि यह एक गहरे बंधन का प्रतीक है, और इस समय का संगीत वही होना चाहिए जो इस सच्चाई को सम्मानित करे। शादी का संकल्प जीवनभर के लिए होता है। यह एक ऐसा वचन होता है जिसमें दोनों पक्षों का प्यार, विश्वास और समर्पण शामिल होते हैं। ऐसे में गाने भी ऐसे होने चाहिए जो प्रेम, रिश्ते और परस्पर सम्मान की भावनाओं को व्यक्त करें। ब्रेकअप या धोखा पर आधारित गाने, जैसे ₹चन्ना मेरेया₹ या ₹भुला दूंगा₹, इस अवसर के लिए सही नहीं होते। ये गाने शादी के संकल्प के साथ मेल नहीं खाते हैं।

हर शादी की अपनी संस्कृति, परंपराएं और रीति-रिवाज होते हैं। विशेषकर भारतीय शादियों में पारंपरिक संगीत और धार्मिक अनुष्ठानों का बहुत महत्व है। ऐसे में, गानों के चयन में हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे किसी भी धार्मिक या सांस्कृतिक मान्यताओं को ठेस न पहुंचाएं। उदाहरण के तौर पर, यदि शादी एक विशेष धार्मिक रीति से हो रही है, तो हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संगीत इस परंपरा के अनुरूप हो। शादी एक उत्सव होता है, और संगीत का मुख्य उद्देश्य इस खुशी को बढ़ाना है। जो गाने उत्साह और खुशी से भरे होते हैं, वे इस अवसर को और खास बना सकते हैं। इसके विपरीत, उदास या नकारात्मक गाने जैसे ₹तू जो नहीं₹, ₹तुम ही हो₹ आदि माहौल को फीका कर सकते हैं। संगीत को चुनते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वह हर किसी के मन को खुशी और सकारात्मकता दे।

किन गानों को ₹डू नॉट प्ले₹ लिस्ट में रखें?

शादी के संगीत का चयन करते समय यह सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है कि हम उन गानों से बचें जो अश्लील, द्विअर्थी या असंवेदनशील हों। शादी का माहौल पवित्र और पारिवारिक होता है, और इसलिए हमें उन गानों से बचना चाहिए जो भाषा या भावनाओं से मर्यादा लांघते हों। उदाहरण के तौर पर, ₹मुन्नी बदनाम₹ और ₹शीला की जवानी₹ जैसे गाने इस अवसर के लिए उपयुक्त नहीं होते। शादी एक प्रेम और वचन का उत्सव है, और ऐसे गाने जो ब्रेकअप, धोखा या अस्थिर रिश्तों पर आधारित होते हैं, जैसे ₹चन्ना मेरेया₹ या ₹भुला दूंगा₹, शादी के माहौल के अनुकूल नहीं होते। शादी के समय यदि गाने नशे या अन्य नकारात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा देते हैं, तो यह माहौल के अनुरूप नहीं होते। ₹दारू देसी₹, ₹लुंगी डांस₹, और ₹माई ड्रिंकिंग₹ जैसे गाने शादी के गरिमामय माहौल को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ गाने जो केवल तेज़ आवाज़ और शोर से भरे होते हैं, जैसे कि अत्यधिक बेस वाले गाने या DJ ट्रैक्स, वे कभी-कभी माहौल को कष्टकारी बना सकते हैं। इनसे बचने के लिए संगीत का चयन इस तरह किया जाना चाहिए कि हर कोई उसे आसानी से सुन सके और उसका आनंद ले सके। हमारी शादी में सभी वर्गों और समुदायों के लोग उपस्थित होते हैं। ऐसे में किसी भी धार्मिक या जातिगत भावनाओं को आहत करने वाले गानों से बचना चाहिए। इन गानों से बचने के लिए यह जरूरी है कि गानों का चयन एक समानता, सम्मान और प्रेम को व्यक्त करें।

कैसे बनाएं संतुलित प्लेलिस्ट?

संतुलित और विविधतापूर्ण प्लेलिस्ट बनाने के लिए कुछ विशेष टिप्स का पालन किया जा सकता है: शादी में दूल्हा-दुल्हन के साथ-साथ परिवार और दोस्तों की पसंद का भी ध्यान रखना जरूरी होता है। प्लेलिस्ट में ऐसे गाने शामिल करें जो सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए सुखद हो। गाने हमेशा मधुर और मेलोडियस होने चाहिए। इस तरह के गाने न केवल कानों को अच्छा महसूस कराते हैं, बल्कि वे दिलों को भी जोड़ते हैं। शादी के इस खास दिन पर रोमांटिक गाने, जैसे ₹तुम ही हो₹, ₹तुम जो आए₹ आदि, माहौल को और भी खास बना सकते हैं। गानों का चयन इस तरह करें कि वे शालीनता और गरिमा का प्रतीक हों। शादी एक गंभीर और सम्मानजनक अवसर है, और इस पर कोई भी गाना जो शब्दों में शालीनता को न दिखाए, उसे सूची से हटा दिया जाना चाहिए।

हर रस्म के लिए सही संगीत का चयन करें। जयमाला के लिए रोमांटिक और भावुक गाने, डांस फ्लोर के लिए एनर्जेटिक ट्रैक, और विदाई के समय पर भावनात्मक धुनें इस दिन को और भी यादगार बना सकती हैं। शादी में पारंपरिक भारतीय संगीत, सूफी गाने, और लोकगीत भी एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। इस तरह के गाने शादी के पारंपरिक और सांस्कृतिक वातावरण को और अधिक जीवंत बना सकते हैं। अगर बजट अनुमति देता है, तो लाइव बैंड या सूफी गायन को शामिल करना एक अच्छा विचार हो सकता है। लाइव संगीत एक अलग प्रकार की आत्मीयता और जुड़ाव उत्पन्न करता है जो डीजे संगीत से नहीं हो सकता।

शादी सिर्फ एक आयोजन नहीं, एक भावनात्मक यात्रा है

शादी केवल एक उत्सव नहीं होती, बल्कि यह एक भावनात्मक यात्रा होती है। संगीत, जो हमारे दिलों और दिमागों को जोड़ता है, इस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सही संगीत चयन न केवल समारोह की गरिमा और खुशी को बढ़ाता है, बल्कि यह उन रिश्तों की भी पुष्टि करता है जो जीवन भर बनाए जाते हैं। इसलिए, जब आप अपनी शादी के संगीत का चयन करें, तो यह सोचें कि गाने केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं, बल्कि वे एक गहरे अर्थ और संदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। गानों के चयन में शालीनता, भावनाओं का सम्मान और सांस्कृतिक परंपराओं का पालन बहुत महत्वपूर्ण है। अंततः, शादी के संगीत का उद्देश्य केवल माहौल को मनोरंजन से भरना नहीं है, बल्कि यह हमें हमारी भावनाओं और रिश्तों से भी जोड़ता है। इसलिए अश्लील और कानफोड़ू गानों से परहेज करें और ऐसे गानों का चयन करें जो इस पवित्र बंधन की गरिमा और खुशियों को और बढ़ाएं।

देश के सार्वजनिक स्थलों से अत्याचारियों के नाम बदलकर भारतीय महापुरुषों व स्वतंत्रता सेनानियों के नाम रखे जाने चाहिए : अरविन्द पुष्कर एडवोकेट

– ये सब के सब अत्याचारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विरोधी थे, उन्होंने अत्याचार किए इसलिए उनके नाम पर किसी सार्वजनिक स्थल का नाम होना उचित नहीं

आगरा, संजय सागर सिंह। देश के सभी सार्वजनिक स्थलों से अत्याचारियों के नाम हटाकर उन्हें भारतीय महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। यह मुद्दा केवल नाम परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय इतिहास, सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रवाद से जुड़ा हुआ एक गंभीर विषय है।

इस संदर्भ में अपनी बात रखते हुए वरिष्ठ समाजसेवी अरविन्द पुष्कर एडवोकेट ने कहा कि अत्याचारियों के नाम भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विरोधी हैं। उनके शासनकाल में भारतीयों पर किए गए अत्याचारों को देखते हुए, उनके नामों पर सार्वजनिक स्थलों का नामकरण करना उचित नहीं है। उनका मानना है कि भारतीय महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से इन स्थलों का नामकरण किया जाना चाहिए, ताकि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और इतिहास की सही पहचान को दर्शा सके।

श्री पुष्कर ने आगे कहा, ₹ यह मांग लंबे समय से उठाई जा रही है और इसे समाज तथा प्रशासनिक स्तर पर गंभीरता से लिया जाना चाहिए। उन्होंने सरकार से अपील की है कि इस विषय पर ठोस कदम उठाया जाए। उनका कहना है कि यह सिर्फ एक नाम बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज के एकीकृत इतिहास और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उन्होंने यह भी बताया कि ऐतिहासिक स्थलों और सड़कों के नामों में बदलाव की मांग नई नहीं है। पहले भी कुछ स्थानों के नाम बदले गए हैं, जैसे ₹अत्याचारी रोड₹ का नाम बदलकर ₹डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम रोड₹ किया गया था। देशभर में विदेशी आक्रमणकारियों और अत्याचारियों के नामों को हटाने की लंबे समय से मांग की जा रही है। इसे ऐतिहासिक पुनर्लेखन के रूप में देखा जा रहा है, जो भारतीय संस्कृति और इतिहास की पुनर्स्थापना की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

साथ ही उन्होंने कहा, ₹केंद्र सरकार पहले भी इस तरह की मांगों पर विचार कर चुकी है और कई बार सार्वजनिक स्थानों के नामों में बदलाव के लिए ज्ञापन भी सौंपे गए हैं। यह मांग भारतीय समाज में ऐतिहासिक स्मारकों, सड़कों और स्थलों के नामकरण को लेकर जागरूकता और संवेदनशीलता को उजागर करती है। कई लोग इसे भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार की दिशा में एक आवश्यक कदम मानते हैं, और यह देश की सांस्कृतिक पहचान को मजबूती प्रदान करेगा।

आखिर में उन्होंने कहा, ₹अब समय आ गया है कि इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार किया जाए और सभी सार्वजनिक स्थलों से अत्याचारियों के नाम हटाकर भारतीय महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के नामों से उन्हें प्रतिस्थापित किया जाए।"

भारतीय रिज़र्व बैंक स्थापना दिवस पर डॉ. बाबासाहेब को उनके योगदान के लिए विनम्र अभिवादन : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

उनके विचारों ने भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना की नींव रखी, और इसके माध्यम से भारतीय मुद्रा प्रणाली को संगठित और सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त किया

डॉ. बाबा साहब ने भारतीय आर्थिक संरचना को सशक्त बनाने के लिए जो मार्गदर्शन दिया, वह देश के आर्थिक केन्द्रीकरण, स्वतंत्रता और प्रगति की दिशा में मील का पत्थर साबित

आगरा, संजय साग़र सिंह। भारतीय रिज़र्व बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर हम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के योगदान को याद करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने कहा, ₹भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विद्वान अर्थशास्त्री और मानवाधिकारों के जनक, भारतरत्न डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी को उनके योगदान के लिए विनम्र अभिवादन। डॉ. बाबा साहब ने भारतीय आर्थिक संरचना को सशक्त बनाने के लिए जो मार्गदर्शन दिया, वह देश के आर्थिक केन्द्रीकरण, स्वतंत्रता और प्रगति की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ।

श्री खुराना ने यह भी बताया कि डॉ. आंबेडकर जी के सुझावों और उनकी प्रसिद्ध पुस्तक ₹भारतीय रुपये की समस्या - इसकी उत्पत्ति और समाधान₹ के आधार पर 1926 में हिल्टन यंग कमीशन (रॉयल कमीशन ऑन इंडियन करेंसी एंड फायनेंस) द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक की अवधारणा तय की गई थी। उनके विचारों ने भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना की नींव रखी, और इसके माध्यम से भारतीय मुद्रा प्रणाली को संगठित और सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त किया गया।

उन्होंने आगे कहा, ₹1 अप्रैल 1935 को भारतीय रिज़र्व बैंक की औपचारिक स्थापना की गई, लेकिन अफसोस की बात यह है कि डॉ. बाबा साहब को वह सम्मान और मान्यता नहीं दी, जिसके वे पूरी तरह से पात्र थे। उनके योगदान को न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में बल्कि भारतीय समाज की सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता में भी अनदेखा किया गया।"

आखिर में वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने कहा, ₹आज, भारतीय रिज़र्व बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर हम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के योगदान को याद करते हुए उनके दृष्टिकोण को सम्मानित करते हैं, जो आज भी हमारे राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए प्रेरणा स्रोत है।"

मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा अमृत धारा का शुभारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

सिकंदराबाद स्थित मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा राष्ट्रीय प्रकल्प अमृत धारा के तहत दुसरी स्थाई अमृत धारा का शुभारंभ प्रातः11.30 बजे आर पी रोड स्थित दरगाह के पास किया गया।

कार्यक्रम में पधारे विशेष अतिथि TRS के पूर्व पार्षद सी किशोर का शाखा की और से शॉल, माला पहनाकर स्वागत किया ! आज के इस कार्यक्रम में राह चलते 1100 राहगीरों को ठंडी ठंडी छाछ भी वितरण की गई ! आज के छाछ वितरण के भामाशाह युवा पप्पू कुमार घोड़ेला ।शाखा की और से भामाशाह का बहुत बहुत आभार ।आज के इस सेवाकार्य में पधारे शाखा संस्थापक द्वारिकाप्रसाद मायछ ,पूर्व अध्यक्ष मदन सांखला,पूर्व अध्यक्ष धनराज तिवाडी , पूर्व अध्यक्ष पप्पू घोड़ेला, अध्यक्ष पंकज राठौर, निवर्तमान प्रांतीय रक्तदान संयोजक मनोज भाई जैन ,नारायण चावड़ा, मंत्री पन्नालाल भाटी,कृष्णा लोहार , हरीश माली, दिनेश गहलोत,मंगलाराम चौधरी, रमेश प्रजापत ,सेसाराम सीरवी, कैलाश वैष्णव , पेमाराम जाखड़,सुरज प्रजापत,रवि तिवारी, करण सांखला, ईश्वर सांखला एवं सभी युवा साथियों ने आज की इस सेवा का लाभ लिया ! कार्यकर्म के अंत में पधारे हुए सभी अतिथियों का एवं सदस्यगणो को शाखा के अमृत धारा संयोजक जीतू चावड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

शिक्षा है दुनिया बदलने का सबसे शक्तिशाली हथियार, जिसे आप अपने भविष्य को संवारने के लिए उपयोग कर सकते हैं : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान

"शिक्षा जीवन में निरंतर प्रगति और विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, और यह हमें हर दिशा में सीखने के लिए प्रेरित करती है"

आगरा, संजय साग़र सिंह। वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने शिक्षा के महत्व को समझाते और जीवन में ईमानदारी से कठोर परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा, "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसे आप अपनी दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते हैं," शिक्षा केवल हमारे जीवन का अभिन्न अंग नहीं है, बल्कि यह हमारे भविष्य को संवारने और सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचने का साधन है।

उन्होंने आगे कहा कि "शिक्षा हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है, और यह भाग्य, सौभाग्य और मेहनत का परिणाम है। मेहनत एक सीढ़ी की तरह होती है जो हमें हमेशा ऊंचाई की ओर ले जाती है।" शिक्षा जीवन में निरंतर प्रगति और विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, और यह हमें हर दिशा में सीखने के लिए प्रेरित करती है।

उन्होंने आगे कहा, "आप तब तक सीख सकते हैं जब तक आप खुद को छात्र मानते हैं। जैसे कुएं से पानी निकालने के लिए बाल्टी को झुकाना पड़ता है, ठीक वैसे ही अपने शिक्षकों से सवाल पूछने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए। सीखने के लिए झुकना जरूरी होता है, और यही हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।"

इसके साथ ही, उन्होंने सभी को 14 अप्रैल, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और उनके विचारों को अपनाने का आह्वान किया।

अंत में, उन्होंने शारीरिक और मानसिक रूप से गतिशील रहने की महत्ता पर बल दिया। "जहां आप हैं और जो कर रहे हैं, उसमें पूरी तरह से सक्रिय रहें, क्योंकि स्थिर पानी कभी भी बहते जल की तरह उपयोगी नहीं हो सकता। मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, यदि आप सूरज की तरह चमकना चाहते हैं, तो आपको सूरज की तरह जलना भी सीखना होगा।"

उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा, "पत्थर भी भगवान की मूर्ति के रूप में तभी सामने आता है, जब वह छेनी और हथौड़ी की मार सहन करता है। इसलिए कठिन परिस्थितियों से घबराएं नहीं, धैर्य से कार्य करें।"

वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान का यह प्रेरणादायक संदेश सभी को शिक्षा की महत्ता को समझने और जीवन में कठोर परिश्रम करने के लिए प्रेरित किया।

शमशाबाद स्थित सीरवी समाज मंदिर (बडेर) के तत्वावधान में आयोजित चैत्र नवरात्रि महोत्सव के तहत बुधवार को हवन का आयोजन किया गया। शुभ मुहूर्त में पूजा-अर्चना कर श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के साथ हवन में आहुति दी। अवसर पर उपस्थित , सचिव भोलाराम पवार, शिक्षा समिति अध्यक्ष केसाराम काग , हेमाराम काग ,रतन लाल परिहार , महिला मंडल, इंदिरा देवी पंवार, सन्तोष देवी काग, ममता परिहार , सन्तोष देवी काग वं अन्य।

कविता : जीवन की दौड़

जीवन की इस दौड़ में राही,
तुझे अकेला चलना है
कहने को तो साथ हम हैं,
तुझे किस बात का ग़म है।
जीवन की इस दौड़ में राही
तुझे अकेला चलना है।

संघर्षों से भरा जीवन है,
अपने-परायों से लगता डर है
कभी सोचा ना था, जीवन की इस राह में,
अपने ही हमें छोड़ जाएँगे।
जीवन की इस दौड़ में राही...
तुझे अकेला चलना है।

संघर्षों को गले लगाकर,
चट्टानों में राह बनाकर
अपनी मंजिल को पाना है,
तुझे चलते जाना है।
जीवन की इस दौड़ में राही...
तुझे अकेला चलना है।

आहिस्ता चल ज़दिगी,
अभी मंजिल को पाना बाकी है
कई कर्ज चुकाना बाकी है,
रुठों को मनाना बाकी है।
एक दिन साँसें थम जाएंगी,
फिर क्या खोना क्या पाना है
जीवन की इस दौड़ में राही...
तुझे अकेला चलना है॥

प्रो. लक्ष्मी यादव (चन्द्रभान शर्मा कॉलेज, पवई मुंबई)

लोकसभा चुनाव में वोट धांधली का मुद्दा; बीजद ने चुनाव आयोग पर निशाना साधा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : लोकसभा चुनाव में वोटों की धांधली का मुद्दा। बार-बार अपील के बाद भी कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर बीजू जनता दल ने एक बार फिर चुनाव आयोग का दरवाजा खटखटाया है। पिछले आम चुनाव में देश भर में मतदान में धांधली के आरोप लगे हैं। 9 महीने बाद भी चुनाव आयोग ने इस मामले पर कोई ठोस जवाब नहीं दिया है।इस संबंध में बीजद सांसदों ने दिल्ली में चुनाव आयोग से मुलाकात की। राज्य के सभी लोकसभा क्षेत्रों में वोटों में असमानता थी। जिस निर्वाचन क्षेत्र से मुख्यमंत्री मोहन माझी चुनाव लड़ रहे हैं, वहां वोटों का अंतर 30 प्रतिशत था। इसलिए चुनाव प्रक्रिया में अनियमितता की संभावना है।

बीजद ने आज एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि चुनाव आयोग की विश्वसनीयता को बचाने के प्रयास किए जा रहे हैं। महाराष्ट्र और हरियाणा जैसे राज्यों में भी भूस्खलन की शिकायतें आईं। दिल्ली से भी गंभीर शिकायतें आईं। इसी कारण बीजद की टीम ने 11 फरवरी को दोबारा चुनाव आयोग से मुलाकात की। उन्होंने चुनाव प्रक्रिया की पूरी ऑडिट की मांग की। नागरिक समूहों ने निगरानी प्रक्रिया में शामिल किये जाने की मांग की। वीवीपैट का ईवीएम से मिलान होना चाहिए। कुचिंडा के एक मतदान केन्द्र पर 1,031 वोट डाले गए। लेकिन चुनाव आयोग के आंकड़े कहते हैं कि वहां लोगों ने वोट नहीं दिया।

यदि ईवीएम खराब होगी तो वोटों की गिनती नहीं की जाएगी। फॉर्म-17सी बीजेडी का अनुरोध करने का औचित्य है। बीजद ने दोहराया है कि उम्मीदवार और मतदाता किसी भी समय 17-7सी के लिए आवेदन कर सकते हैं। ओडिशा की जनता चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखना चाहती है। देश में कई क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं। इसलिए, बीजद ने कहा है कि पारदर्शिता बनाए रखना आवश्यक है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023